Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :—

शि: गु: प्र: कमेटी

अमृतसर।

प्रथम संस्करण, जून १९६३, ५०००

दुसरी वार जुन १९७३ ८०००

मुद्रित :

गुरुद्वारा प्रिंटिंग प्रेस,

अमृतसर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय सूची
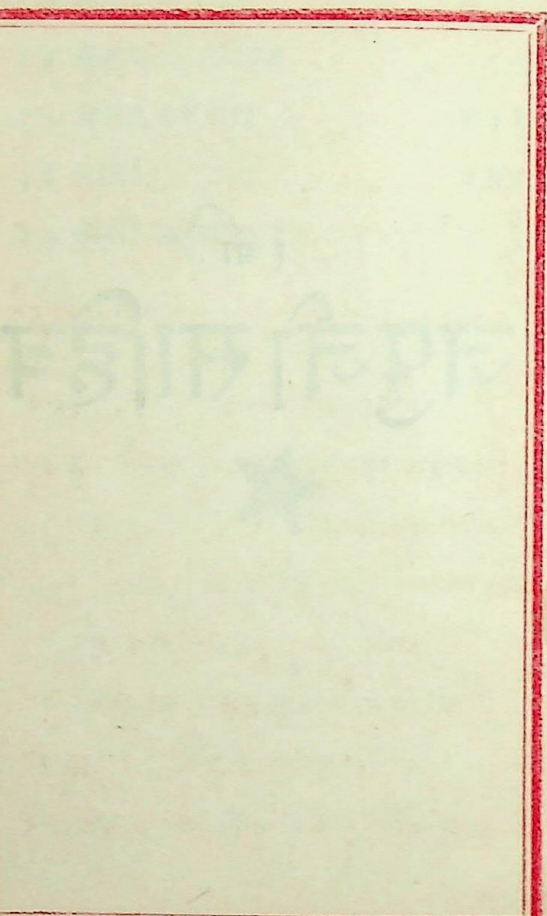
जपुजी साहिब

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

॥ जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥

है भी सचु नानक होसी भी सचु॥ १॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ चुपै चुप न होवई जे

लाइ रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ १ ॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि। इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न

कोइ ॥ २ ॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥ ३ ॥

साचा साहिबु सचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु॥करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुखु घरि लै जाए ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई। गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी॥गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता

सो मै विसरि न जाई ॥ ६ ॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइकै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता

सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिमृति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ९ ॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ सुणिऐ पढ़ि पढ़ि पावहि मानु ॥ सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ १० ॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥

मंने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखण हारु ॥ मंने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मंनै सगल भवण की सुधि ॥ मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥ मंनै जम कै साथि न जाइ ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे

को मंनि जाणै मनि कोइ॥ १३ ॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥ मंनै पति सिउ परगटु जाइ॥मंनै मगु न चलै पंथु ॥ मंनै धरम सेती सनबंधु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ।जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १४ ॥

मंनै पावहि मोखु दुआरु॥ ।मंनै परवारै साधारु ॥ मंनै तरै तारे गुरु सिख । मंनै नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ॥जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा

का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै
करै वीचारु ॥ करते कै करणै
नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइया का
पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि
सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ।
धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती
होरु परै होरु होरु ॥ तिसते भारु
तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति
रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ
वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि
जाणै कोइ ॥ लेखा लिखिआ केता
होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ।
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीत
पसाउ एको कवाउ ॥ तिसते होए

लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु॥वारिआ न जावा एक वार॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार॥ १६ ॥

असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि उदास ॥ असंख भगत गुण गिआन वीचार॥ असंख सती असंख दातार॥ असंख सूर मुह भख सार॥ असंख मोनि लिव लाइ तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु॥वारिआ न जावा एक वार॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू

सदा सलामति निरंकार ॥ १७ ॥

ग्रसंख मूरख ग्रंध घोर॥ ग्रसंख चोर हरामखोर॥ ग्रसंख ग्रमर करि जाहि जोर॥ ग्रसंख गलवढ हतिआ कमाहि॥ग्रसंख पापी पापु करि जाहि॥ असंख कूड़िग्रार कूड़े फिराहि॥असंख मलेछ मलु भखि खाहि॥ ग्रसंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु॥ वारिग्रा न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार॥तू सदा सलामति निरंकार॥१८॥

ग्रसंख नाव ग्रसंख थाव॥ग्रगंम ग्रगंम ग्रसंख लोअ॥ ग्रसंख कहहि सिरि भारु होइ॥ग्रखरी नामु ग्रखरी

सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण
गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु
बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु
वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु
सिरि नाहि॥जिव फुरमाए तिव तिव
पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥ जो
तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा
सलामति निरंकार ॥ १९ ॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत
पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ

ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु । आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ॥विणु गुण कीते भगति न होइ॥सुअसति आथि बाणी बरमाउ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण
थिति कवणु वारु ।। कवणि सि
रुती माहु कवणु जितु होग्रा
ग्राकारु ।। वेल न पाईग्रा पंडती जि
होवै लेखु पुराणु ।। वखतु न पाइग्रो
कादीग्रा जि लिखनि लेखु कुराणु ।।
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति
माहु ना कोई ।। जा करता सिरठी
कउ साजे ग्रापे जाणै सोई ।। किव
करि आखा किव सालाही किउ वरनी
किव जाणा।। नानक आखणि सभु को
ग्राखै इकदू इकु सिग्राणा ।। वडा
साहिबु वडी नाई कीता जाका होवै।।
नानक जे को ग्रापौ जाणै अगै

गइआ न सोहै ॥२१॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास॥ ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाइआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥ समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

अंतु ना सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणे देणि न अंतु॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ताके अंत न पाए जाहि॥ एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दाति ॥२४॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु॥ केते खपि तुटहि वेकार॥ केते लै लै मुकरु पाहि॥ केते मूरख खाही खाहि॥ केतिआ दूख भूख सद मार॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ॥ होरु आखि न सकै कोइ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ॥ आपे जाणै आपे देइ॥ आखहि सि भि केई केइ॥ जिसनो बखसे सिफति

सालाहु॥नानक पातिसाही पातसाहु॥२५॥
अमुल गुण अमुल वापार॥
अमुल वापारीए अमुल भंडार॥अमुल
आवहि अमुल लै जाहि॥ अमुल भाइ
अमुला समाहि॥ अमुलु धरमु अमुलु
दीबाणु॥ अमुलु तुलु अमुलु
परवाणु॥ अमुलु बखसीस अमुलु
नीसाणु॥ अमुलु करमु अमुलु
फुरमाणु॥ अमुलो अमुलु आखिआ
न जाइ॥ आखि आखि रहे
लिव लाइ॥ आखहि वेद पाठ
पुराण॥ आखहि पड़े करहि
वखिआण॥ आखहि बरमे आखहि
इंद॥ आखहि गोपी तै गोविन्द॥

ग्राखहि ईसर ग्राखहि सिध ॥ ग्राखहि केते कीते बुध ॥ ग्राखहि दानव ग्राखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते ग्राखहि ग्राखणि' पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ ऐते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै बोलु विगाडु ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद ग्रनेक ग्रसंखा केते

वावणहारे ॥ केते राग परी सिउ
कहीअनि केते गावणहारे ॥ गावहि
तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै
राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु
गुप्तु लिखि जाणहि लिखि लिखि
धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा
देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि
इंद इंदासणि बैठे देवतिआ दरि
नाले ॥ गावहि सिध समाधी अंदरि
गावनि साध विचारे ॥ गावनि
जती सति संतोखी गावहि वीर
करारे ॥ गावनि पंडित पढ़नि
रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि

सुरगा मछ पइआले ॥ गावनि रतन उपाऐ तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी

माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहबु नानक रहणु रजाई ॥ २७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८।

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी सब जाकी रिधि सिधि अवरा साद ॥ संजोग विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एक वेसु ॥२९ ॥

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु॥ओह वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥ जो किछु पाइआ सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु॥३१॥

इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस॥एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी

पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥ ३३ ॥

राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रंग । तिन के

नाम अनेक अनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाइ ॥ नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

धरम खंड का एहो धरमु ॥ गिआन खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंड ॥ तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ताकीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा

सिधा की सुधि ॥२६॥

करम खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ताके रूप न कथने जाहि ॥ ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिनकै रामु वसै मन माहि ॥ तिथैं भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ सच खंडि वसै निरंकारु॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

जतु पाहारा धीरजु सुनिग्रारु ॥ ग्रहरणि मति वेदु हथिग्रारु ॥ भउ खला ग्रगनि तप ताउ ॥ भांडा भाउ ग्रमृतु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सचो टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल॥३८॥

सलोकु ॥

पवण गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ

दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

शबद हजारे

माझ महला ५ चउपदे घरु १॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥
बिलप करे चात्रिक की निआई ॥
तृिखा न उतरै सांति न आवै बिनु
दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ हउ
घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन
संत पिआरे जीउ॥१॥ रहाउ ॥ तेरा
मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी॥
चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ धंनु

सु देसु जहा तूं बसिआ मेरे सजण मीत
मुरारे जीउ॥ १ ॥ हउ घोली हउ घोलि
घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ
॥१॥ रहाउ ॥इक घड़ी न मिलते ता
कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि मिलीऐ
प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि न
विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर
दरबारे जीउ ॥३॥ हउ घोली जीउ
घोलि घुमाई तिसु सचे गुरदरबारे
जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागु
होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु
अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव
करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक
दास तुमारे जीउ ॥४॥

हउ घोली जीउ घोलि घुमाई
जन नानक दास तुमारे जीउ॥रहाउ
॥ १ ॥ ८ ॥

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुरप्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ
करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ
सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ साहिबु
मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु
॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु
सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ सुणि

सुणि मेरी कामणी पारि उतारा
होइ ॥२॥ दइग्राल तेरै नामि तरा॥
सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥
सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ॥
ताकी सेवा सो करे जाकउ नदरि
करे ॥ ३ ॥ तुधु बाझु पिग्रारे केव
रहा ॥ सा वडिग्राई देहि जितु नामु
तेरे लागि रहां ॥ दूजा नाही कोइ
जिसु आगै पिग्रारे जाइ कहा ॥१॥
रहाउ ॥ सेवी साहिबु ग्रापणा ग्रवरु
न जाचंउ कोइ॥नानकु ताका दासु है
बिंद बिंद चुख चुख होइ॥४॥साहिब
तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख़ चुख

होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

तिलंग महला १ घरु ३

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥ मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए। १ ॥ हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ॥ हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥१॥रहाउ॥ काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥ रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न

डीठ ॥ २ ॥ जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥ ३ ॥ आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥ नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥४॥१॥३॥

तिलंग महला १॥

इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की ना माणेहि ॥ सहु नेड़ै धनु कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीए

भागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥
इआणी बाली किआ करे जा धन
कंत न भावै ॥ करण पलाह करे
बहुतेरे साधन महलु न पावै ॥ विणु
करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा
धावै ॥ लब लोभ अहंकार की माती
माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती
सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी
॥ २ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी वाहै
किनी बाती सहु पाईऐ ॥ जो किछु
करे सो भला करि मानीऐ हिकमति
हुकमु चुकाईऐ ॥ जाकै प्रेमि पदारथु
पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु
कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा

परमालु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहा-
गणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥
३ ॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ
अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि
करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ
निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी
सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥
ऐसै रंगि राती सहज की माती
अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुंदरि
साइ सरूप विचखणि कहीऐ सा
सिआणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

सूही महला १ ॥

कउण तराजो कवणु तुला तेरा

कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥ १ ॥ मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ तूं जल थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥ १॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥ २ ॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ता की संगति

नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥९।

१ ओ सतिनामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी
सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥ १ ॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अंतु न जाणा

मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥ २ ॥ किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥

बिलावलु महला १ ॥

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा॥ एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनम न आवा ॥१ ॥ मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी

माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥
हम नाही चिंत पराई ॥ १॥रहाउ॥
अगम अगोचर अलख अपारा
चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि
महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि
जोति तुम्हारी ॥२॥ सिख मति सभ
बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥
तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा
गुण गावा नित तेरे ॥ ३ ॥ जीअ
जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत
तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा
इक नानक की अरदासे॥४॥२॥

१ ओंकार सतिगुरप्रसादि ॥

जापु

श्री मुखवाक पातिसाही १० ॥

छपै छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

चक्र चिहन अरु बरन जाति अरु
पाति नहिन जिह॥रूप रंग अरु रेख
भेख कोऊ कहि न सकति किह ॥
अचल मूरति अनभउ प्रकास अमि
तोजि कहिज्जै ॥ कोटि इन्द्र इन्द्राण
साह साहाणि गणिजै ॥ त्रिभवण

महीप सुर नर असुर नेत नेत बन तृण कहत ॥ तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति ॥१॥

भुयंग प्रयात छंद ॥

नमसत्वं अकाले॥ नमसत्वं कृपाले ॥
नमसतं अरूपे ॥ नमसतं अनूपे ॥२॥
नमसतं अभेखे ॥ नमसतं अलेखे ॥
नमसतं अकाए॥नमसतं अजाऐ॥ ३ ॥
नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥
नमसतं अनामे ॥ नमसतं अठामे॥४॥
नमसतं अकरमं ॥ नमसतं अधरमं ॥

नमसतं अनामं ॥ नमसतं अधामं ॥५॥

नमसतं अजीते ॥ नमसतं अभीते ॥

नमसतं अबाहे ॥ नमसतं अढाहे ॥६॥

नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे ॥

नमसतं अछेदे ॥ नमसतं अगाधे ॥७॥

नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥

नमसतं उदारे ॥ नससतं अपारे॥८॥

नमसतं सु एकै ॥ नमसतं अनेकै ॥

नमसतं अभूते ॥ नमसतं अजूये ॥९॥

नमसतं निरकरमे॥नमसतं निरभरमे॥

नमसतं निरदेसे ॥ नमसतं निरभेसे ॥ १० ॥ नमसतं निरनामे ॥ नमसत निरकामे ॥ नमसतं निरधाते ॥ नमसतं निरघाते ॥ ११ ॥ नमसत निरधूते । नमसतं अभूते ॥ नमसत अलोके ॥ नमसत्त असोके ॥ १२ ॥ नमसतं निरतापे ॥ नमसतं अथापे ॥ नमसतं त्रिमाने॥नमसत्तं निधाने॥ १३॥ नमसतं अगहे ॥ नमसतं अबाहे ॥ नमसत्तं त्रिबरगे ॥ नमसतं असरगे ॥ १४ ॥ नमसतं प्रभोगे ॥ नमसत सुजोगे ॥ नमसतं अरंगे ॥ नमसतं अभंगे ॥ १५ ॥ नमसतं अगमे ॥

नमसतसतु रमे ॥ नमसतं जलासरे ॥
नमसतं निरासरे ॥ १६ ॥
नमसतं अजाते ॥ नमसतं
अपाते ॥ नमसतं अमजबे ॥
नमसतसतु अजबे ॥ १७ ॥
अदेसं अदेसे ॥ नमसतं अभेसे ॥
नमसतं निरधामे ॥ नमसतं
निरबामें ॥ १८ ॥ नमो सरब
काले ॥ नमो सरब दिआले ॥ नमो
सरब रूपे ॥ नमो सरब भूपे ॥१९॥
नमो सरब खापे ॥ नमो सरब
थापे ॥ नमो सरब काले ॥ नमो सरब
पाले ॥ २० ॥ नमसतसतु देवै ॥

नमसतं अभेवै ॥ नमसतं अजनमे ॥
नमसतं सुबनमे ॥ २१ ॥ नमो सरब
गउने ॥ नमो सरब भउने ॥ नमो
सरब रंगे ॥ नमो सरब भंगे ।'२२॥
नमो काल काले ॥ नमसतसतु
दिआले ॥ नमसतं अबरने ॥ नमसतं
अमरने ॥ २३ ॥ नमसतं जरारं ॥
नमसतं कृतारं ॥ नमो सरब
धंधे ॥ नमो सत अबधे ॥ २४ ॥
नमसतं निरसाके॥नमसतं निरबाके ।
नमसतं रहीमे ॥ नमसतं करीमे ॥
२५ ॥ नमसतं अनंते ॥ नमसतं
महंते ॥ नमसतसतु रागे ॥ नमसतं

सुहागे ॥ २६ ॥ नमो सरब सोखं ॥
नमो सरब पोखं ॥ नमो सरब करता ॥
नमो सरब हरता ॥ २७ ॥ नमो जोग
जोगे॥ नमो भोग भोगे ॥ नमो सरब
दिआले ॥ नमो सरब पाले ॥२८॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥ अजू
हैं ॥ अभू हैं ॥ २९ ॥ अलेख हैं ॥
अभेख हैं ॥ अनाम हैं ॥ अकाम
हैं ॥ ३० ॥ अधे हैं ॥ अभे हैं ॥
अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥ ३१ ॥
त्रिमान हैं ॥ निधान हैं ॥ त्रिबरग
हैं ॥ असरग हैं ॥ ३२ ॥ अनील

हैं ॥ अनादि हैं ॥ अजे हैं ॥ अजादि
हैं ॥ ३३ ॥ अजनम हैं ॥ अबरन हैं ॥
अभूत हैं ॥ अभरन हैं ॥ ३४ ॥
अगंज हैं ॥ अभंज हैं ॥ अझूझ हैं ॥
अझंझ हैं ॥ ३५ ॥ अमीक हैं ॥
रफीक हैं ॥ अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥
३६ ॥ निरबूझ हैं ॥ असूझ हैं ॥
अकाल हैं ॥ अजाल हैं ॥ ३७ ॥
अलाह हैं ॥ अजाह हैं ॥ अनंत
हैं ॥ महंत हैं ॥ ३८ ॥ अलीक
हैं ॥ निरसरीक हैं ॥ निरलंभ हैं ॥
असंभ हैं ॥ ३९ ॥ अगंम हैं ॥
अजंम हैं ॥ अभूत हैं ॥ अछूत हैं ॥

४० ॥ अलोक हैं ॥ असोक हैं॥अकरम हैं ॥ अभरम हैं ॥ ४२ ॥ अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥ अबाह हैं । अगाह हैं ॥ ४२ ॥ अमान हैं॥ निधान हैं ॥ अनेक हैं ॥ फिरि एक हैं ॥४३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥ नमो देव देवे ॥ अभेखी अभेवे ॥ ४४ ॥ नमो काल काले॥ नमो सरब पाले ॥ नमो सरब गउणे ॥ नमो सरब भउणे ॥४५॥ अनंगी अनाथे ॥ निरसंगी प्रमाथे ॥

नमो भान भाने ॥ नमो मान
माने ॥ ४६ ॥ नमो चंद्र चंद्रे ॥ नमो
भान भाने ॥ नमो गीत गीते ॥ नमो
तान ताने ॥ ४७ ॥ नमो नृत्त
नृत्ते ॥ नमो नाद नादे ॥ नमो पान
पाने ॥ नमो बाद बादे ॥ ४८ ॥
अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे ॥
प्रभंगी प्रमाथे ॥ समसती बिभूते ॥
४९ ॥ कलंकं बिना ने कलंकी सरूपे ॥
नमो राज राजेस्वरं परम रूपे ॥
५० ॥ नमो जोग जोगेस्वरं परम
सिद्धे ॥ नमो राज राजेस्वरं परम
बृद्धे ॥ ५१ ॥ नमो सस्त्र पाणे ॥

नमो अस्त्र माणे ॥ नमो परम
गिआता ॥ नमो लोक माता ॥ ५२ ॥
अभेखी अभरमी अभोगी अभुगते॥
नमो जोग जोगेस्वरं परम जुगते ॥
५३ ॥ नमो नित नारायणे क्रूर
करमे ॥ नमो प्रेत अप्रेत देवे
सुधरमे ॥ ५४ ॥ नमो रोग हरता
नमो राग रूपे ॥ नमो साह साहं
नमो भूप भूपे ॥ ५५ ॥ नमो
दान दाने नमो मान मानं ॥
नमो रोग रोगे नमसतं इसनानं ॥
५६ ॥ नमो मंत्र मंत्रं ॥ नमो जंत्र
जंत्रं ॥ नमो इसट इसटे ॥ नमो
तंत्र तंत्रं ॥ ५७ ॥ सदा सच्चिदानन्द

सरबं प्रणासी ॥ अनूपे अरूपे समसतुल निवासी ॥५८॥ सदा सिद्धदा बुद्धदा बृद्ध करता ॥ अधो उरध अरधं अघं ओघ हरता ॥ ५९ ॥ परम परम परमेस्वरं प्रोछपालं ॥ सदा सरबदा सिद्ध दाता दिआलं ॥ ६० ॥ अछेदी अभेदो अनामं अकामं ॥ समसतो पराजी समसतसतु धामं ॥६१॥

तेरा जोरु ॥ चाचरी छंद ॥

जले हैं ॥ थले हैं ॥ अभीत हैं ॥ अभे हैं ॥ ६२ ॥ प्रभू हैं ॥ अजू हैं ॥ अदेस हैं ॥ अभेस हैं ॥

६३ ॥

भजंग प्रयात छंद ॥

अगाधे अबाधे ॥ अनंदी सरूपे ॥ नमो सरब माने ॥ समस्ती निधाने ॥ ६४ ॥ नमसत्वं निरनाथे ॥ नमसत्वं प्रमाथे ॥ नमसत्वं अगंजे ॥ नमसत्वं अभंजे ॥ ६५ ॥ नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं अपाले ॥ नमो सरब देसे ॥ नमो सरब भेसे ॥ ६६ ॥ नमो राज राजे ॥ नमो साज साजे ॥ नमो शाह शाहे ॥ नमो माह माहे ॥ ६७ ॥ नमो गीत गीते ॥ नमो प्रीत प्रीते ॥ नमो रोख रोखे ॥ नमो

सोख सोखे ॥६८॥ नमो सरब रोगे ॥
नमो सरब भोगे ॥ नमो सरब
जीतं ॥ नमो सरब भीतं ॥ ६९ ॥
नमो सरब गिम्रानं ॥ नमो परम
तानं ॥ नमो सरब मंत्रं ॥ नमो सरब
जंत्रं ॥ ७० ॥ नमो सरब दृस्सं ॥
नमो सरब कृस्सं ॥ नमो सरब रंगे ॥
त्रिभंगी अनंगे ॥ ७१ ॥ नमो जीव
जीवं ॥ नमो बीज बीजे ॥ अखिज्जे
अभिज्जे ॥ समसतं प्रसिज्जे ॥
७२ ॥ कृपालं सरूपे कुकरमं
प्रणासी ॥ सदा सरबदा रिद्धि
सिद्धं निवासी ॥ ७३ ॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अंमृत्त करमे ॥ अंबृत्त धरमे ॥
अखल जोगे ॥ अचल भोगे । ७४॥
अचल राजे ॥ अटल साजे ॥
अखल धरमं ॥ अलख करमं ॥
७५ ॥ सरबं दाता ॥ सरबं
गिआता ॥ सरबं भाने ॥ सरबं
माने ॥ ७६ ॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं
त्राणं ॥ सरबं भुगता ॥ सरबं जुगता
७७ ॥ सरबं देवं ॥ सरबं भेवं ॥
सरबं काले ॥ सरबं पाले ॥ ७८ ॥

रूआल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

आदि रूप अनादि मूरति

अजोनि पुरख अपार ॥ सरब मान त्रिमान देव अभेव आदि उदार ॥ सरब पालक सरब घालक सरब को पुनि काल ॥ जत्र तत्र बिराजही अविधूत रूप रसाल ॥ ७९ ॥ नाम ठाम न जाति जाकर रूप रंग न रेख ॥ आदि पुरख उदार मूरति अजोनि आदि असेख ॥ देस और न भेस जाकर रूप रेख न राग ॥ जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग ॥ ८० ॥ नाम काम बिहीन पेखत धाम हूं नहि जाहि ॥

सरब मान सरबत्र मान सदैव मानत ताहि ॥ एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक ॥ खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिरि एक ॥८१॥ देव भेव न जानही जिह बेद अउर कतेब ॥ रूप रंग न जाति पाति सु जानई किह जेब ॥ तात मात न जात जाकर जनम मरन बिहीन ॥ चक्र बक्र फिरै चतुर चक्क मानही पुर तीन ॥ ८२ ॥ लोक चौदह के बिखै जग जापही जिह जाप ॥ आदि देव अनादि मूरति थापिओ

सबै जिह थापि ॥ परम रूप पुनीत मूरति पूरन पुरख अपार ॥ सरब बिस्व रचियो सुयंभव गड़न भंजनहार ॥ ८३ ॥ काल हीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस ॥ धरम धाम सु भरम रहित अभूत अलख अभेस ॥ अंग राग न रंग जाकहि जाति पाति न नाम ॥ गरब गंजन दुसट भंजन सुकति दाइक काम ॥ ८४ ॥ आप रूप अमीक अन उसतति एक पुरख अवधूत ॥ गरब गंजन सरब भंजन आदि रूप असूत ॥

अंग हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार ॥ सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार ॥ ८५ ॥ सरब गंता सरब हंता सरब ते अनभेख ॥ सरब सास्त्र न जानही जिह रूप रंगु अरु रेख ॥ परम बेद पुराण जाकहि नेत भाखत नित्त ॥ कोटि सिंमृत पुरान सास्त्र न आवई वहु चित्त ॥ ८६ ॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुन गन उदार ॥ महिमा अपार ॥ आसन अभंग ॥ उपमा

अनंग ॥ ८७ ॥ अनभउ प्रकास ॥
निस दिन अनास ॥ आजानु बाहु ॥
साहान साहु ॥ ८८ ॥ राजान
राज ॥ भानान भान ॥ देवान देव ॥
उपमा महान ॥ ८९ ॥ इन्द्रान
इन्द्र ॥ बालान बाल ॥ रंकान रंक ॥
कालान काल ॥ ९० ॥ अनभूत अंग ॥
आभा अभंग ॥ गति मिति अपार ॥
गुन गन उदार ॥ ९१ ॥ मुनि
गन प्रनाम ॥ निरभै निकाम ॥
अति दुति प्रचंड ॥ मिति गति
अखंड ॥ ९२ ॥ आलिस्य करम ॥
आदृस्य धरम ॥ सरबा भरणाढह ॥

अनडंड बाढय ॥ ९३ ॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गोबिंदे ॥ मुकंदे ॥ उदारे ॥ अपारे ॥ ९४ ॥ हरीअं ॥ करीअं ॥ निरनामे ॥ अकामे ॥ ९५ ॥

भुयंग प्रयात छंद ॥

चतर चक्र करता ॥ चतर चक्र हरता ॥ चतर चक्र दाने ॥ चतर चक्र जाने ॥ ९६ ॥ चतर चक्र वरती ॥ चतर चक्र भरती ॥ चतर चक्र पाले ॥ चतर चक्र काले ॥ ९७ ॥ चतर चक्र

पासे ॥ चतर चक्र वासे ॥ चतर चक्र मानयै॥चतर चक्र दानयै ॥९८॥

चाचरी छंद ॥

न सत्रै ॥ न मित्रै ॥ न भरमं ॥ न भित्रै ॥ ९९ ॥ न करमं ॥ न काए ॥ अजनमं ॥ अजाए ॥ १०० ॥ न चित्रैं॥न मित्रै ॥ परे हैं ॥ पवित्रै ॥ १०१ ॥ पृथीसैं ॥ आदीसै ॥ अदृसै ॥ अकृसै ॥ १०२ ॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि कथते ॥

कि आछिज्ज देसै ॥ कि आभिज्ज भेसै ॥ कि आगंज करमै ॥ कि आभंज्ज भरमै ॥ १०३ ॥ कि

आभिज्ज लोकै ॥ कि आदित्त सोकै ॥
कि अविधूत बरनै ॥ कि बिभूत
करनै ॥ १०४ ॥ कि राजं प्रभा हैं ॥
कि धरमं धुजा हैं ॥ कि आसोक
बरनै ॥ कि सरबा अभरनै ॥
१०५ ॥ जगतं कृती हैं ॥
कि छत्रं छत्री हैं ॥ कि ब्रहमं सरूपै ॥
कि अनभउ अनूपै ॥ १०६ ॥
कि आदि अदेव हैं ॥ कि आपि
अभेव हैं ॥ कि चित्रं बिहीनै ॥
कि एकै अधीनै ॥ १०७ ॥ कि
रोज़ी रज़ाकै ॥ रहीमै रिहाकै ॥
कि पाक बिऐब हैं ॥ कि ग़ैबुल
ग़ैब हैं ॥ १०८ ॥ कि अफबुल

गुनाह हैं ॥ कि शाहान शाह हैं ॥
कि कारन कुनिंद हैं ॥ कि रोज़ी
दिहंद हैं ॥ १०९ ॥ कि राज़क
रहीम हैं ॥ कि करमं करीम
हैं ॥ कि सरबं कली हैं ॥ कि
सरबं दली हैं ॥ ११० ॥ कि
सरबत्र मानियै ॥ कि सरबत्र
दानियै ॥ कि सरबत्र गउनै ॥
कि सरबत्र भउनै ॥ १११ ॥ कि
सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥
कि सरबत्र राजै ॥ कि सरबत्र
साजै ॥ ११२ ॥ कि सरबत्र दीनै ॥
कि सरबत्र लीनै ॥ कि सरबत्र

जाहो ॥ कि सरबत्र भाहो ॥ ११३ ॥
कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र
भेसैं ॥ कि सरबत्र कालै ॥ कि
सरबत्र पालै ॥ ११४ ॥ कि सरबज्ञ
हंता ॥ कि सरबत्र गंता ॥ कि
सरबत्र भेखी ॥ कि सरबत्र पेखी
॥ ११५ ॥ कि सरबत्र काजै ॥ कि
सरबत्र राजै ॥ कि सरबत्र सोखैं ॥
कि सरबत्र पोखै ॥ ११६ ॥ कि
सरबत्र त्राणै ॥ कि सरबत्र प्राणै ॥
कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र
भेसै ११७ ॥ कि मरबत्र
मानियै ॥ सदेवां प्रधानियै ॥ कि

सरबत्र जापियै ॥ कि सरबत्र
थापियै ॥ ११८ ॥ कि सरबत्र
भानै ॥ कि सरबत्र मानै ॥ कि
सरबत्र इन्द्रै ॥ कि सरबत्र
चन्द्रै ॥ ११९ ॥ कि सरबं
कलीमै ॥ कि परमं फ़हीमै ॥ कि
आकल अलामै ॥ कि साहिब
कलामै ॥ १२० ॥ कि हुसनुल वजू
हैं ॥ तमामुल रुजू हैं ॥ हमेसुल
सलामै ॥ सलीखत मुदामै ॥
१२१ ॥ ग़नीमुल शिकसतै ॥
ग़रीबुल परसतै ॥ बिलंदुल
मकानैं ॥ ज़मीनुल जमानैं ॥

१२२ ॥ तमीज़ुल समामैं ॥
रुजूअल निधानैं ॥ हरीफुल
अजीमै ॥ रज़ाइक यकीनैं ॥
१२३ ॥ अनेकुल तरंग हैं ॥
अभेद हैं अभंग हैं ॥ अज़ीज़ुल
निवाज़ हैं ॥ ग़नीमुल ख़िराज
हैं ॥ १२४ ॥ निरुकत सरूप हैं ॥
त्रिमुकति विभूत हैं ॥ प्रभुगति
प्रभा हैं ॥ सुजुगति सुधा हैं ॥
१२५ ॥ सदैवं सरूप हैं ॥ अभेदी
अनूप हैं ॥ समसतो पराज हैं ॥
सदा सरब साज हैं ॥ १२६ ॥
समसतुल सलाम हैं ॥ सदैवल

अकाम हैं ॥ निबधि सरूप हैं॥
अगाध हैं अनूप हैं ॥ १२७ ॥
ओअं आदि रूपै ॥ अनादि
सरूपै ॥ अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी
त्रिकामे ॥ १२८॥ त्रिबरगं त्रिबाधे
॥ अगंजे अगाधे ॥ सुभ सरब भागे ॥
सुसरबा अनुरागे ॥ १२९ ॥
त्रिभुगत सरूप हैं ॥ अछिज हैं
अछूत हैं ॥ कि नरकं प्रणास
हैं ॥ पृथीउल प्रवास हैं ॥
१३० ॥ निरुकति प्रभा हैं ॥
सदैवं सदा हैं ॥ बिभुगति सरूप
हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥

१३१ ॥ निरुकति सदा हैं ॥ बिभुगति प्रभा हैं ॥ अनउकति सरूप हैं ॥ प्रजुगति अनूप हैं ॥ १३२ ॥

चाचरी छंद ॥

अभंग हैं ॥ अनंग हैं ॥ अभेख हैं ॥ अलेख हैं ॥ १३३ ॥ अभरम हैं ॥ अकरम हैं ॥ अनादि हैं ॥ जुगादि हैं ॥ १३४ ॥ अजै हैं ॥ अबै हैं ॥ अभूत हैं ॥ अधूत हैं ॥ १३५ ॥ अनास हैं ॥ उदास हैं ॥ अधंध हैं ॥ अबंध हैं ॥ १३६ ॥ अभगत हैं ॥ बिरकत हैं ॥ अनास

हैं ॥ प्रकास हैं ॥ १३७ ॥ निचित हैं ॥ सुनित हैं ॥ अलिख हैं ॥ अदिख हैं ॥ १३८ ॥ अलेख हैं ॥ अभेख हैं ॥ अढाह हैं ॥ अगाह हैं ॥ १३९ ॥ असंभ हैं ॥ अगंभ हैं ॥ अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥ १४० ॥ अनित्त हैं ॥ सुनित्त हैं ॥ अजात हैं ॥ अजाद हैं ॥ १४१ ॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

सरबं हंता ॥ सरबं गंता ॥ सरबं खिआता ॥ सरबं गिआता ॥ १४२ ॥ सरबं हरता ॥ सरबं

करता ॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥ १४३ ॥ सरबं करमं सरबं धरमं ॥ सरबं जुगता ॥ सरबं मुकता ॥ १४४ ॥

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

नमो नरक नासे ॥ सदैवं प्रकासे ॥ अनंगं सरूपे ॥ अभंगं बिभूते ॥ १४५ ॥ प्रमाथं प्रमाथे ॥ सदा सरब साथे ॥ अगाध सरूपे ॥ निर्बाध बिभूते ॥ १४६ ॥ अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी त्रिकामे ॥ निर्भंगी सरूपे ॥ सरबंगी अनूपे ॥ १४७ ॥

न पोत्रै न पुत्रै ॥ न सत्रै न मित्रै ॥ न तातै न मातै ॥ न जातै न पातै ॥ १४८ ॥ निर्सांकं सरीक हैं ॥ अमितो अमीक हैं ॥ सदैवं प्रभा हैं ॥ अजै हैं अजा हैं ॥ १४९ ॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

कि ज़ाहर ज़हूर है ॥ कि हाज़र हज़ूर है ॥ हमेसुल सलाम हैं ॥ समसतुल कलाम है ॥ १५० ॥ कि साहिब दिमाग़ हैं ॥ कि हुसनल चिराग़ हैं ॥ कि कामल करीम हैं ॥ कि राज़क रहीम हैं ॥

१५१ ॥ कि रोज़ी दिहिंद हैं ॥ कि राज़क रहिंद हैं ॥ करीमुल कमाल हैं ॥ कि हुसनुल जमाल हैं ॥ १५२ ॥ ग़नीमुल ख़िराज हैं ॥ ग़रीबुल निवाज़ हैं ॥ हरीफ़ुल शिकंन हैं ॥ हिरासुल फ़िकंन हैं ॥ १५३ ॥ कलंकं प्रणास हैं ॥ समसतुल निवास है ॥ अगंजुल ग़नीम हैं ॥ रजाइक रहीम हैं ॥ १५४ ॥ समसतुल जुबां हैं ॥ कि साहिब किरां है ॥ कि नरकं प्रणास हैं ॥ बहिसतुल निवास हैं ॥ १५५ ॥ कि सरबुल गवंन

है ॥ हमेसुल रवंन है ॥ तमामुल ॥ तमीज है ॥ समसतुल अजीज़ है ॥ १५६ ॥ परं परम ईस है ॥ समसतुल अदीस है ॥ अदेसुल अलेख है ॥ हमेसुल अभेख हैं ॥ १५७ ॥ ज़मीनुल ज़मां है ॥ अमीकुल इमां है ॥ करीमुल कमाल है ॥कि जुरअति जमाल है ॥ १५८॥ कि अचलं प्रकास है ॥ कि अमितो सुबास है ॥ कि अजब सरूप है ॥ कि अमितो बिभूत है ॥ १५९ ॥ कि अमितो पसा है ॥ कि आतम प्रभा है ॥ कि अचलं अनंग है ॥

कि अमितो अभंग हैं ॥ १६०॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

मुनि मनि प्रनाम ॥ गुनि गन मुदाम ॥ अरि बर अगंज ॥ हरि नर प्रभंज ॥ १६१ ॥ अन गन प्रनाम ॥ मुनि मनि सलाम ॥ हरि नर अखंड ॥ बर नर अमंड ॥ १६२ ॥ अनभव अनास ॥ मुनि मनि प्रकास ॥ गुनि गन प्रनाम ॥ जल थल मुदाम ॥ १६३ ॥ अनछिज्ज अंग ॥ आसन अभंग ॥ उपमा अपार ॥ गति मिति उदार ॥ १६४ ॥ जल थल अमंड ॥ दिस विस अभंड ॥

जल थल महंत ॥ दिस विस
बिअंत ॥ १६५ ॥ अनभव अनास ॥
धृत धर धुरास ॥ आजानु बाहु ॥
एकै सदाहु ॥ १६६ ॥ ओअंकार
आदि ॥ कथनी अनादि ॥ खल
खंड खिआल ॥ गुरबर अकाल ॥
१६७ ॥ घर घरि प्रनाम ॥
चित चरन नाम ॥ अनछिज्ज गात ॥
आजिज न बात ॥ १६८ ॥
अनझंझ गात ॥ अनरंज बात ॥
अनटुट भंडार ॥ अनठट अपार ॥
१६९ ॥ आडीठ धरम ॥ अति
ढीठ करम ॥ अणबूण अनंत ॥

दाता महंत ॥ १७० ॥

हरिबोलमना छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

करुणालय हैं ॥ अरि घालय हैं ॥
खल खंडन हैं ॥ महि मंडन हैं ॥
१७१ ॥ जगतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर
हैं ॥ कलि कारण हैं ॥ सरब
उबारण हैं ॥ १७२ ॥ धृत
के ध्रण हैं ॥ जग के क्रण हैं ।
मन मानिय हैं ॥ जग जानिय
हैं ॥ १७३ ॥ सरबं भर हैं ॥
सरबं कर हैं ॥ सरब पासिय हैं ॥
सरब नासिय हैं ॥ १७४ ॥
करुणाकर हैं ॥ बिस्वंभर हैं ॥

सरबेस्वर हैं ॥ जगतेस्वर हैं ॥
१७५ ॥ ब्रहमंडस हैं ॥ खल
खंडस हैं ॥ पर ते पर हैं ॥
करुणाकर हैं ॥ १७६ ॥ अजपा
जप हैं। अथपा थप है ॥
अकृताकृत हैं ॥ अंमृतामृत
हैं ॥ १७७ ॥ अम्रृतामृत हैं ॥
करुणाकृत हैं ॥ अकृताकृत
हैं ॥ धरणी धृत हैं ॥ १७८ ॥
अमृतेस्वर हैं ॥ परमेस्वर हैं ॥
अकृताकृत हैं ॥ अमृतामृत
हैं ॥ १७९ ॥ अजबाकृत
हैं ॥ अम्रृता मृत हैं ॥ नर नाइक

हैं ॥ खल घाइक हैं ॥ १८० ॥
बिस्वंभर हैं ॥ करुणालय हैं ॥
नृप नाइक हैं ॥ सरब पाइक
हैं ॥ १८१ ॥ भवभंजन हैं ॥
अरि गंजन हैं ॥ रिपु तापन
हैं ॥ जपु जापन हैं ॥ १८२ ॥
अकलंकृत हैं ॥ सरबाकृत हैं ॥
करता कर हैं ॥ हरता हरि
हैं ॥ १८३ ॥ परमातम हैं ॥
सरबातम हैं ॥ आतम बस हैं ॥
जस के जस हैं ॥ १८४ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंदे ॥

नमो राज राजे नमो इंद्रे इंद्रे ॥
नमो अंधकारे नमो तेज तेजे ॥
नमो बृंद बृंदे नमो बीज बीजे ॥
१८५ ॥ नमो राजसं तामसं
सांत रूपे ॥ नमो परम तत्तं अतत्तं
सरूपे ॥ नमो जोग जोगे नमो
गिआन गिआने ॥ नमो मंत्र मंत्रे
नमो धिआन धिआने ॥ १८६ ॥
नमो जुद्ध जुद्धे नमो गिआन
गिआने ॥ नमो भोज भोजे
नमो पान पाने ॥ नमो कलह करता
नमो सांत रूपे ॥ नमो इंद्रे इंद्रे
अनादं बिभूते ॥ १८७ ॥ कलंकार

रूपे अलंकार अलंके । नमो
आस आसे नमो बांक बंके ॥
अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥
त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी
अकामे ॥१८८॥

एक अछरी छंद ॥

अजै ॥ अलै ॥ अभै ॥ अबै ॥
१८९ ॥ अभू ॥ अजू ॥ अनास ॥
अकास ॥ १९० ॥ अगंज ॥ अभंज ॥
अलख ॥ अभख ॥ १९१ । अकाल॥
दिआल । अलेख ॥ अभेख ॥ १९२ ॥
अनाम ॥ अकाम ॥ अगाह ॥

अढाह ॥ १९३ ॥ अनाथे ॥ प्रमाथे ॥
अजोनी ॥ अमोनी ॥ १९४ ॥
न रागे ॥ न रंगे ॥ न रूपे ॥ न रेखे ॥
१९५ ॥ अकरमं ॥ अभरमं ॥
अगंजे ॥ अलेखे ॥ १९६ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसतुल प्रणामे समसतुल
प्रणासे ॥ अगंजुल अनामे समस-
तुल निवासे ॥ निरकामं बिभूते
समसतुल सरूपे ॥ कुकरमं
प्रणासी सुधरमं बिभूते ॥ १९७ ॥
सदा सच्चिदानंद सत्रं प्रणासी ॥
करीमुल कुनिंदा समसतुल निवासी ॥
अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे ॥

हरीग्रं करीग्रं करीमुल रहीमे ॥ १९८ ॥ चतर चक्र वरती चतर चक्र भुगते ॥ सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥ दुकालं प्रणासी दिग्रालं सरूपे ॥ सदा ग्रंग संगे ग्रभंगं बिभूते ॥ १९९ ॥

शबद हज़ारे पातिशाही १०॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामकली पातिसाही १० ॥

रे मन ऐसो कर संनिआसा ॥
बन से सदन सबै कर समझहु मन ही
माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जत
को जटा जोग को मजन नेम के नखन
बढाओ ॥ ज्ञान गुरू आतम उप-
देसहु नाम बिभूत लगाओ ॥ १ ॥
अलप अहार सुलप सी निंद्रा
दया छिमा तन प्रीति ॥ सील
संतोख सदा निरबाहिबो ह्वैबो

त्रिगुण अतीति ॥ २ ॥ काम क्रोध हंकार लोभ हठ मोह न मन सिउ ल्यावै ॥ तब हो आतम तत्त को दरसे परम पुरख कह पावै ॥३॥१॥

रामकली पातिसाही १० ॥

रे मन इह बिधि जोग कमाओ ॥ सिङी साच अकपट कंठला धिआन बिभूति चढ़ाओ ॥१॥ रहाउ ॥ ताती गहु आतम बसि कर की भिच्छा नाम अधारं ॥ बाजे परम तार ततु हरि को उपजै राग रसारं ॥ १ ॥ उघटै तान तरंग रंगि अति गिआन गीत बंधानं ॥ चकि चकि

रहे देव दानव मुनि छकि छकि ब्योम बिवानं ॥ २ ॥ आतम उपदेस भेसु संजम को जापु सु अजपा जापै ॥ सदा रहै कंचन सी काया काल न कबहूं बयापै ॥ ३ ॥ २ ॥

रामकली पातिसाही १० ॥

प्रानी परम पुरख पग लागो ॥ सोवत कहा मोह निंद्रा मै कबहूं सुचित ह्वै जागो ॥१॥ रहाउ॥ औरन कहा उपदेसत है पसु तोहि प्रबोध न लागो ॥ सिंचत कहा परे बिखियन कह कबहु बिखै रस तयागो ॥ १ ॥

केवल करम भरम से चीनहु धरम करम अनुरागो ॥ संग्रह करो सदा सिमरन को परम पाप तजि भागो ॥ २ ॥ जाते दूख पाप नहि भेटै काल जाल ते तागो ॥ जौ सुख चाहो सदा सभन कौ तौ हरि के रस पागो ॥ ३ ॥ ३ ॥

राग सोरठि पातिसाही १० ॥

प्रभ जू तो कह लाज हमारी ॥ नील कंठ नरहरि नाराइण नील बसन बनवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परम पुरख प्रमेस्वर सुआमी पावन पउन अहारी ॥

माधव महा जोति मधु मरदन मान मुकंद मुरारी ॥ १ ॥ निरबिकार निरजुर निंद्रा बिनु निरबिख नरक निवारी ॥ कृपा सिंधु काल त्रैदरसी कुकृत प्रनासनकारी ॥ २ ॥ धनुरपानि धृतमान धराधर अन बिकार असि धारी ॥ हौ मति मंद चरन सरनागति कर गहि लेहु उबारी ॥ ३ ॥ ४ ॥

रागु कलिआण पातिसाही १० ॥

बिन करतार न किरतम मानो ॥ आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥

कहा भयो जो आन जगत मै दसक असुर हरि घाए ॥ अधिक प्रपंच दिखाइ सभन कह आपहि ब्रहम कहाए ॥ १ ॥ भंजन गढ़न समरथ सदा प्रभु सो किम जाति गिनायो ॥ तांते सरब काल के असि को घाइ बचाइ न आयो ॥ २ ॥ कैसे तोहि तारिहै सुन जड़ आप डुबिओ भव सागर ॥ छुटिहो काल फास ते तबही गहो सरनि जगतागर ॥ ३ ॥ ५ ॥

खियाल पातिसाही १० ॥

मित्र पिआरे नूं हाल मुरीदां

दा कहणा ॥ तुध बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहणा ॥ सूल सुराही खंजरु पियाला बिंग कसाईआं दा सहणा ॥ यारड़े दा सानूं सथरु चंगा भट्ठ खेड़िआ दा रहणा ॥ १ ॥ ६ ॥

तिलंग काफी पातिसाही १० ॥

केवल कालई करतार ॥ आदि अंत अनंत मूरति गढ़न भंजन-हार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंद उसतति जउन के सम सत्र मित्र न कोइ ॥ कउन बाट परी तिसै पथ सारथी

रथ होइ ॥ १ ॥ तात मात न जात जाकर पुत्र पौत्र मुकंद ॥ कउन काज कहाहिंगे आन देवकिनंद ॥ २ ॥ देव दैत दिसा विसा जिह कीन सरब पसार ॥ कउन उपमा तौन को मुख लेत नामु मुरार ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागु बिलावल पातिसाही १० ॥

सो किम मानस रूप कहाए ॥ सिध समाधि साध कर हारे कयोहूं न देखन पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नारद बिआस परासर ध्रूअ से धिआवत धिआन लगाए ॥

बेद पुरान हार हठ छाडियो तदपि धिग्रान न ग्राए ॥ १ ॥ दानव देव पिसाच प्रेत ते नेतह नेत कहाए ॥ सूछम ते सूछम कर चीने बृधन बृध बताए ॥ २ ॥ भूमि ग्राकास पाताल सभै सजि एक ग्रनेक सदाए ॥ सो नर काल फासि ते बाचे जो हरि सरणि सिधाए ॥ ३ ॥ १ ॥ ८ ॥ ३२ ॥

रागु देवगंधारी पातिसाही १० ॥

इक बिनु दूसर सो न चिनार ॥ भंजन गड़न समरथ सदा प्रभु जानत है करतार ॥ १ ॥ रहाउ ॥

कहा भइओ जो अति हित चित कर बहु बिध सिला पुजाई ॥ प्रान थकिओ पाहिन कह परसत कछु कर सिध न आई ॥ १ ॥ अछत धूप दीप अरपत है पाहन कछू न खैहै ॥ ता मैं कहां सिधि है रे जड़ तोहि कछू बर देहै ॥ २ ॥ जौ जीअ होत तौ देत कछू तुहि कर मन बच करम बिचार ॥ केवल एक सरणि सुआमी बिन यौ नहि कतहि उधार ॥३॥१॥९॥३३

रागु देव गंधारी पातिसाही १० ॥

बिन हरिनामु न बाचन पैहै ॥ चौदहि लोक जाहि बस कीने ताते

कहां पलैहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम रहीम उबार न सकहै जाकर नाम रटैहै ॥ ब्रहमा बिसन रुद्र सूरज ससि ते बसि काल सबैहै ॥ १ ॥ बद पुरान कुरान सबै मत जाकह नेत कहै है ॥ इन्द्र फनिंद्र मुनिंद्र कलप बहु धिग्रावत धिग्रान न ऐहै ॥ २ ॥ जाकर रूप रंग नहि जनियत सो किम स्याम कहै है ॥ छुटहो काल जाल ते तब ही तांहि चरन लपटैहै ॥ ३ ॥ १ ॥ १० ॥ ३४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पातिशाही १० ॥

त्व प्रसादि ॥ चौपई ॥

प्रणवो आदि एकंकारा ॥
जल थल महीअलि कीओ पसारा ॥
आदि पुरख अबिगत अबिनासी ॥
लोक चतुर्दस जोति प्रकासी ॥१॥
हस्ति कीट के बीच समाना ॥
राव रंक जिह इक सर जाना ॥
अद्वै अलख पुरख अबिगामी ॥
सब घट घट के अन्तरजामी ॥ २ ॥
अलख रूप अछै अनभेखा ॥
राग रंग जिह रूप न रेखा ॥
बरण चिह्न सबहूं ते न्यारा ॥
आदि पुरख अद्वै अबिकारा ॥ ३ ॥

चरन चिह्न जिह जात न पाता ॥
सत्र मित्र जिह तात न माता ॥
सब ते दूरि सभन ते नेरा ॥
जल थल महीअलि जाहि बसेरा ॥४॥
अनहद रूप अनाहद बानी ॥
चरन सरन जिह बसत भवानी ॥
ब्रह्मा बिसन अन्तु नहीं पायो ॥
नेति नेति मुख चार बताजो ॥ ५ ॥
कोटि इन्द्र उपइन्द्र बनाए ॥
ब्रह्मा रुदर उपाइ खपाए ॥
लोक चतुर्दस खेलु रचाओ ॥
बहुर आप ही बीच मिलायो ॥ ६ ॥
दानव देव फनिन्द अपारा ॥
गन्ध्रब जच्छ रचै सुभ चारा ॥

भूत भविख्य भवान कहानी ॥
घट घट के पट पट की जानी ॥७॥
तात मात जिह जात न पाता ॥
एक रंग काहू नही राता ॥
सरब जोत के बीच समाना ॥
सबहूं सरब ठौर पहिचाना ॥८॥
काल रहित अनकाल सरूपा ॥
अलख पुरख अबिगत अवधूता ॥
जात पात जिह चिह्न न बरना ॥
अबिगत देव अछै अनभरमा ॥ ९ ॥
सब को काल सबन को करता ॥
रोग सोग दोखन को हरता ॥
एक चित्त जिह इक छिन ध्यायो ॥
काल फास के बीच न आयो ॥ १०॥

१ ओं वाहिगुरू जी की फतह ॥पा: १०

त्व प्रसादि सवय्ये

स्रावग सुद्ध समूह सिद्धान के देखि खिरिओ घर जोग जती के॥सूर सुरारदन सुद्ध सुधादिक संत समूह अनेक मती के॥सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रान पती के॥ श्री भगवान की भाइ क्रिपा हू ते इक रती बिनु एक रती के॥ १॥ माते मतंग जरे जर संग अनूप उतंग सुरंग सवारे॥ कोट

तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन को जात निवारे ॥ भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत सीस न जात बिचारे ॥ एते भए तु कहा भए भूपति अंत को नांगे ही पाइ पधारे॥२॥

जीत फिरै सभ देस दिसान को बाजत ढोल मृदंग नगारे ॥ गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत ही हयराज हजारे ॥ भूत भविख भवान के भूपति कउनु गनै नहीं जात बिचारे ॥ श्री पति श्री भगवान भजे बिनु अंत कउ अंत के धाम सिधारे॥३॥

तीरथ नान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखै ॥ बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखै ॥ पउन अहार जती जत धार सबै सु बिचार हजार क देखै ॥ श्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखै ॥ ४ ॥

सुद्ध सिपाह दुरंत दुबाह सु साजि सनाह दुरजान दलैंगे ॥ भारी गुमान भरे मन मैं कर परबत पंख हले न हलैंगे ॥ तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगनि मान मलैंगे ॥ श्री पति श्री भगवान कृपा

बिनु तिआगि जहान निदान चलैंगे॥५॥
बोर अपार बडे बरिआर अबि-
चारहि सार की धार भछय्या॥
तोरत देस मलिंद मवासन
माते गजान के मान मलय्या॥ गाढ़े
गढ़ान को ताड़न हार सु बातन ही
चक चार लवय्या॥ साहिबु श्री
सभ को सिरनाइक जाचक अनेक
सु एक दिवय्या॥६॥

दानव देव फनिंद निसाचर
भूत भविख भवान जपैंगे॥ जीव
जिते जल मै थल मै पल ही पल
मै सब थाप थपैंगे॥ पुंन प्रतापन

बाढ जैत धुन पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥ साध समूह प्रसंन फिरै जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे ॥ ७ ॥

मानव इंद्र गजिंद्र नराधप जौन त्रिलोक को राज करैंगे ॥ कोटि सनान गजादिक दान अनेक सुअंबर साज बरैंगे॥ब्रह्म महेसर बिसन सचीपति अंत फसे जम फास परैंगे॥ जे नर श्रीपति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८ ॥

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥ न्हात फिरिओ लीए

सात समुदनि लोक गयो परलोक
गवाइओ ॥ बास कीओ बिखिआन
सो बैठकै ऐसे ही ऐसे सु बैसबिताइओ
साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम
कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥ १ ॥
काहू लै पाहन पूज धरयो सिर
काहू लैं लिंग गरे लटकाइओ ॥
काहू लखियो हरि अवाची दिसा महि
काहू पछाह को सीसु निवाइओ ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ
मृतान को पूजन धाइओ॥ कूर किआ
उरझियो सभ ही जग श्री भगवान
को भेदु न पाइओ ॥ १० ॥

त्व पसादि सवय्ये

दीनन की प्रतिपाल करे नित संत उबार गनीमन गारे॥ पच्छ पसू नग नाग नराधप सरब समै सभ को प्रतिपारै॥ पोख़त है जल मै थल मै पल मै कल के नही करम बिचारै॥ दीन दइआल दइआ निधि दोखन देखत है पर देत न हारै ॥ १॥ दाहत है दुख दोखन कौ दल दुज्जन के पल मै दल डारै॥ खंड अखंड प्रचंड पहारन पूरन प्रेम की प्रीत संभारै॥ पार

न पाइ सकै पदमापति बेद कतेब
अभेद उचारै ॥ रोजी ही राज
बिलोकत राजक रोख रूहान की
रोजी न टारै॥ २॥ कीट पतंग
कुरंग भुजंगम भूत भविख भवान
बनाए॥ देव अदेव खपे अहंमेव
न भेव लखिओ भ्रम सिउ
भरमाए ॥ बेद पुरान कतेब कुरान
हसेब थके कर हाथ न आऐ ॥
पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ
किन स्री पदमापति पाऐ॥ ३ ॥
आदि अनंत अगाध अद्वैख सु भूत
भविख भवान अभै है ॥ अति

बिहोन अनातम आप अदाग
अदोख अछिद्र अछै है ॥ लोगन
के करता हरता जल मै थल मै
भरता प्रभ वै है ॥ दीन दइआल
दईआ कर श्री पति सुन्दर श्री
पदमापति ऐहै ॥ ४ ॥ काम न
क्रोध न लोभ न मोह न रोग न
सोग न भोग न भै है ॥ देह
बिहीन सनेह सभो तन
नेह बिरकत अगेह अछै है ॥ जान को
देत अजान को देत जमीन को
देत ज़मान को दै है ॥ काहे को
डोलत है तुमरी सुध सुंदर श्री

पदप्रापति लैहै ॥ रोगन ते अर सोगन ते जल जोगन ते बहु भांति बचावै ॥ सत्र अनेक चलावत घाव तऊ तन एक न लागन पावै ॥ राखत है अपनो कर दै कर पाप संबूह न भेटन पावै ॥ और की बात कहा कह तो सौ सु पेट ही के पट बीच बचावै ॥ ६ ॥ जच्छ भुजंग सु दानव देव अभेव तुमै सब ही कर धिआवै ॥ भूमि अकास पताल रसातल जच्छ भुजंग सभै सिर निआवै ॥ पाइ सकै नहीं पार प्रभाहू को नेत ही नेतह बेद

बतावै ॥ खोज थके सभ ही खुजीआ
सुर हार परे हरि हाथ न आवै ॥ ७ ॥
नारद से चतुरानन से रुमनारिखि
से सबहू मिलि गाइओ ॥ बेद
कतेब न भेद लखिओ सभ हार
परे हरि हाथ न आइओ ॥ पाइ
सकै नही पार उमापति सिध
सनाथ सनंतन धिआइओ ॥
धिआन धरो तिह को मन मैं जिह
को अमितोजि सभै जगु छाइओ ॥८॥
बेद पुरान कतेब कुरान अभेद
नृपान सभै पचहारे ॥ भेद न
पाइ सकियो अनभेद को खेदत है

ग्रनछेद पुकारे ॥ राग न रूप न
रेख न रंग न साक न सोग न
संगि तिहारे ॥ ग्रादि ग्रनादि
अगाध ग्रभेख अद्वैख जपिओ
तिनही कुल तारे ॥ ९ ॥ तीरथ
कोट कोए इसनान दीए बहु दान
महा ब्रत धारे ॥ देस फिरिग्रो
कर भेस तपो घन के सधरे न
मिले हरि पिग्रारे ॥ ग्रासन कोट
करे ग्रसटांग धरे बहु निग्रास
करे मुख कारे ॥ दीन दइग्राल
अकाल भजे बिनु ग्रंत को ग्रंत
के धाम सिधारे ॥ १० ॥

रामकली महला ३ ॥

अनंदु

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि

नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥ २ ॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिनकै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे

साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥ ३ ॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु
नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि
गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि
आइ वसिआ जिनि इछा सभि
पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता
गुरू विटहु जिस दीआ एहि
वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु
संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा
नामु मेरा आधारो ॥ ४ ॥ वाजे पंच
सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै
सबद वाजे कला जितु घरि
धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते

कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि
पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि
कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ
तितु धरि अनहद वाजे॥ ५ ॥ साची
लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी
लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥
तुधु बाझु समरथ कोइ नाही कृपा
करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु
थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥
कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे
वेचारीआ ॥ ६ ॥ आनंदु आनंदु
सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते कृपा

करे पिआरिआ ॥ करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥ ७ ॥ बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिसनो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुरपरसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि

पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥
आवहु संत पिआरिहो अकथ की
करह कहाणी ॥ करह कहाणी
अकथ केरी कितु दुआरैं पाईऐ ॥
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ
हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ हुकमु
मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु
अकथ कहाणी ॥९॥ ए मन चंचला
चतुराई किनैं न पाइआ ॥ चतुराई
न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ॥
एह माइआ मोहणी जिनि एतु
भरमि भुलाइआ ॥ माइआ त

मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥ १० ॥ ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन

पिआरे तू सदा सचु समाले ॥ ११ ॥
अगम अगोचरा तेरा अंतु
न पाइआ ॥ अंतो न पाइआ
किनै तेरा आपना आपु तू
जाणहे ॥ जीअ जंत सभि खेलु
तेरा किआ को आखि वखाणए ॥
आखहि त वेखहि सभु तू है जिनि
जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू
सदा अगंमु है तेरा अंतु न
पाइआ ॥ १२ ॥ सुरि नर मुनि
जन अंमृतु खोजदे सु अंमृतु
गुर ते पाइआ ॥ पाइआ
अंमृतु गुरि कृपा कीनी सचा

मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ॥ कहै नानकु जिसनो आपि तुठा तिनि अंमृतु गुर ते पाइआ ॥ १३ ॥ भगता की चाल निराली॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ गुर परसादी जिनी आपु

तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिसनो कथा सुणाइहि आपणी सि गुर दुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥ एहु सोहिला

सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा
सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥
एहु तिन कै मंनि वसिआ
जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥
इकि फिरहि घनेरे करहि गला
गली किनै न पाइआ ॥ कहै
नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू
सुणाइआ ॥ १६ ॥ पवितु होए
से जना जिनी हरि धिआइआ ॥
हरि धिआइआ पवितु होए
गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥
पवितु माता पिता कुटंब सहित
सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥

कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥
कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥ १७ ।
करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥
कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव

जाइ ॥ १८ ॥ जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एहु तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ १९ ॥ जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की सोइ

पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥ २० ॥ जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥ २१ ॥ जे को गुर

ते वेमुख होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होरथै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ २२ ॥ आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन

कउ नदरि करमु होवै हिरदै
तिना समाणी ॥ पीवहु अमृतु
सदा रहहु हरि रंगि जपिहु
सारिग पाणी ॥ कहै नानकु सदा
गावहु एह सची बाणी ॥ २३ ॥
सतिगुरू बिना होर कची है
बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू
बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे
कचे सुणदे कचे कचीं आखि
वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि
रसना कहिआ कछू न जाणी ॥
चितु जिन का हिरि लइआ
माइआ बोलनि पए रवाणी ॥

कहै नानकु सतिगरू बाझहु होर कची बाणी ॥ २४ ॥ गुर का सबदु रतनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मनु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिसनो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥ २५ ॥ सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥

तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि बसाए ॥ गुरमुखि जिसनो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए । कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥ २६ ॥ सिमृति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंमृत बाणी ॥ कहैं

नानकु सो ततु पाए जिसनो
अनदिनु हरि लिव लागै जागत
रैणि विहाणी ॥ २७ । माता के
उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ
मनहु विसारीऐ ।। मनहु किउ
विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि
महि आहारु पहुचावए ॥ ओसनो
किहु पोहि न सकी जिसनउ आपणी
लिव लावए ।। आपणी लिव आपे
लाऐ गुरमुखि सदा समालीऐ ।।
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ
मनहु विसारीऐ ।। २८ ॥ जैसी
अगनि उदर महि तैसी बाहरि

माइआ ॥ माइआ अगनि सभ
इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥
जा तिसु भाणा ता जंमिआ
परवारि भला भाइआ ॥ लिव
छुड़की लगी तृसना माइआ
अमरु वरताइआ ॥ ऐह माइआ
जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ
दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर
परसादी जिना लिव लागी तिनी
विचेमाइआ पाइआ ॥ २९ ॥ हरि
आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ
जाइ ॥ मुलि न पाइआ जाइ
किसै विटहु रहे लोक विललाऐ ॥

ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिसनो
सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥
जिसदा जीउ तिसु मिलि रहै
हरि वसै मनि आइ ॥ हरि आपि
अमुलकु है भाग तिना के नानका
जिन हरि पलै पाइ ॥ ३० ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥
हरि रासि मेरी मनु वणजारा
सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि
हरि नित जपिहु जीअहु लाहा
खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना
मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु

होआ वणजारा ॥ ३१ ॥
ए रसना तू अनरसि राचि रही
तेरी पिआस न जाइ ॥ पिआस
न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि
रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु
पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि
न तृसना लागै आइ ॥ एहु
हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु
मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु
होरि अनरस सभि वीसरे जा
हरि वसै मनि आइ ॥ ३२ ॥ ए
सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति
रखी ता तू जग महि आइआ ॥

हरि जोति रखी तुधु विचि ता
तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे
माता आपे पिता जिनि जीउ
उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर
परसादी बुझिआ ता चलतु होआ
चलतु नदरी आइआ ॥ कहै
नानकु सृसटि का मूलु रचिआ
जोति राखी ता तू जग महि
आइआ ॥ ३३ ॥ मनि चाउ
भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥
हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु
बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित
सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥

गुर चरन लागे दिन सभागे
आपणा पिरु जापए ॥ अनहत
बाणी गुर सबदि जाणी
हरिनामु हरि रसु भोगो ॥ कहै
नानकु प्रभु आपि मिलिआ
करण कारण जोगो ॥ ३४ ॥ ए
सरीरा मेरिआ इसु जग महि
आइकै किआ तुधु करम कमाइआ ॥
कि करम कमाइआ तुधु
सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ
सो हरि मनि न वसाइआ ॥
गुर परसादी हरि मंनि वसिआ

पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ कहै
नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ
जिनि सतिगुर सिउ चितु
लाइआ ॥ ३५ ॥ ए नेत्रहु मेरिहो
हरि तुम महि जोति धरी हरि
बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि
बिनु अवरु न देखहु कोई
नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु
विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि
का रूप है हरि रूपु नदरी
आइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ
जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु
अवरु न कोई ॥ कहै नानकु

एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब दृसटि होई ॥ ३६ ॥ ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणे नो पठाए ॥ साचै सुनणे नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ताकी गति कही न जाए ॥ कहैं नानकु अमृत नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुननैं नो पठाऐ ॥ ३७ ॥ हरि जीउ गुफा अंदरि रखिकै वाजा पवणु वजाइआ । वजाइआ वाजा पउण

नउ दुआरे परगटु कीए दसवा
गुपतु रखाइआ ॥ गुर दुआरै
लाइ भावनी इकना दसवा
दुआरु दिखाइआ ॥ तह अनेक
रूप नाउ नवनिधि तिसदा अंतु
न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु
हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि
रखि कै वा जा पवणु वजाइआ ॥
३८ ॥ एहु साचा सोहिला साचै
घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला
घरि ।साचै जिथे सदा सचु
धिआवहे ॥ सचो धिआवहि
जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना

बुझावहे ॥ इहु सचु सभना का खसमु हैं जिसु बखसे सो जनु पावहै ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥ ३९ ॥ अनंदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

रहरासि

सो दरु रागु आसा महला १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावण हारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥

गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे॥ गावनि तुधनो इन्द्र इन्द्रासनि बैठे देवतिआ दरि नाले॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे॥ गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे॥ गावनि तुधनो पंडित पढ़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले॥ गावनि तुधनो रतनु उपाए तेरे अठसठि

तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै

कीता आपणा जिउ तिसदी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥

आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ केवडु वडा डीठा होइ ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि

सुरति कमाई ॥ सभ कीमति
मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी
धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहणु न
जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥
सभि सत सभि तप सभि
चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ
वडिआईआ ॥ तुधु विणु सिधी
किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै
नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥
आखण वाला किआ वेचारा ।
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु
तू देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक
सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा महला १ ॥

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओह मरै न होवै सोगु ॥ देदा

रहै न चूकै भोगु । गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति । जिनि दिनु करिकै कीती राति। खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु गूजरी महला ४ ॥

हरि के जन सतिगुर सत पुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मोकउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति

नामु मेरा प्रानसखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिश्रास ॥ हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन हरि हरि हरिरसु नामु न पाइश्रा ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए धृगु जीवे धृगु जीवासि ॥ ३ ॥ जिन हरिजन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिश्रा

लिखासि ॥ धनु धंनु सत संगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

रागु गूजरी महला ५ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ताका रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ मेरे माधउ जी सत संगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता

कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभि निधान दसअसट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारा- वरिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सबि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तू घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको

पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ

जिन हरि निरभउ धिआइआ जी
तिन का भउ सभु गवासी ।। जिन
सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि
जी ते हरि हरि रूपि समासी ।। से
धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ
जी जनु नानकु तिन बलि जासी ।
३ ।। तेरी भगति तेरी भगति
भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ।।
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि
तुधु जी हरि अनिक अनेक
अनंता ।। तेरी अनिक तेरी
अनिक करहि हरि पूजा जी तपु
तापहि जपहि बेअंता ।। तेरे अनेक

तेरे अनेक पड़हि बहु सिमृति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई । तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जो तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते

के जी जो सभसै का जाणोई। ५॥ १।

आसा महला ४ ॥

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिसनो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा

खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिसनो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरिनामि समाइआ ॥ ३ ॥ तूं आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ।

आसा महला १ ॥

तितु सरवरड़ै भईले

निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ ३ ॥

आसा महला ५ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥

अवरि काज तेरै कितै न काम ।।मिलु साध संगति भजु केवल नाम ।। १ ।। सरंजामि लागु भवजल तरन कै ।। जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ।। १ ।। रहाउ ।। जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ।। सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ।। कहु नानक हम नीच करमा ।। सरणि परे की राखहु सरमा ।। २ ।। ४ ।।

पा: १० कबिओबाच बेनती ।। चौपई ।।

हमरी करो हाथ दै रच्छा ।। पूरन होइ चित की इच्छा ।। तव चरनन मन रहै हमारा ।। अपना जान करो

प्रतिपारा ॥ १ ॥ हमरे दुसट सभै
तुम घावहु ॥ आपु हाथ दै मोहि
बचावहु॥सुखी बसै मोरो परिवारा ॥
सेवक सिक्ख सभै करतारा ॥ २ ॥
मो रच्छा निज कर दै करियै ॥ सभ
बैरन कौ आज सघरियै ॥ पूरन
होइ हमारी आसा ॥ तोर भजन की
रहै पिआसा ॥ ३ ॥ तुमहि छाड कोई
अवर न धिआऊं ॥ जो बर चहों
सु तुम ते पाऊं ॥ सेवक सिक्ख हमारे
तारीअहि ॥ चुनि चुनि सत्र हमारे
मारीअहि ॥ ४ ॥ आप हाथ दै मुझै
उबरिऐ ॥ मरन काल का त्रास

निवरियै ॥ हूजो सदा हमारे पच्छा ॥
श्री असिधुज जू करियहु रच्छा ॥ ५ ॥
राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥ साहिब
संत सहाइ पियारे ॥ दीन बंधु दुसटन
के हंता ॥ तुमहो पुरी चतुर दस
कंता ॥ ६ ॥ काल पाइ ब्रहमा बपु
धरा ॥ काल पाइ सिवजू अवतरा ॥
काल पाइ कर बिसनु प्रकासा ॥
सकल काल का कीआ तमासा ॥ ७ ॥
जवन काल जोगी सिव कीओ ॥
बेदराज ब्रहमा जू थीओ ॥ जवन
काल सभ लोक सवारा ॥ नमसकार
है ताहि हमारा ॥ ८ ॥ जवन काल

सभ जगत बनायो ॥ देव दैत जच्छन उपजायो ॥ आदि अंति एकै अवतारा ॥ सोई गुरू समझियहु हमारा ॥ ९ ॥ नमसकार तिस ही को हमारी ॥ सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥ सिवकन को सिवगुन सुख दीओ ॥ सत्रुन को पल मो बध कीओ ॥ १० ॥ घट घट के अंतर की जानत ॥ भले बुरे की पीर पछानत ॥ चीटी ते कुंचर असथूला ॥ सभ पर कृपा दृसटि कर फूला ॥ ११ ॥ संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख पाए साधुन के सुखी ॥ एक एक की पीर

पछानैं ॥ घट घट के पट पट की जानैं ॥ १२ ॥ जब उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा धरत तब देह अपारा ॥ जब आकरख करत हो कबहूं ॥ तुम मैं मिलत देह धर सभहूं ॥ १३ ॥ जेते बदन सृसटि सभ धारै । आपु आपनी बूझ उचारै ॥ तुम सभही ते रहत निरालम ॥ जानत बेद भेद अर आलम ॥ १४ ॥ निरंकार निरबिकार निरलंभ ॥ आदि अनील अनादि असंभ ॥ ताका मूढ़ उचारत भेदा ॥ जाकौ भेव न पावत बेदा ॥ १५ ॥

ताकौ करि पाहन अनुमानत ॥ महा मूड़ कछु भेद न जानत ॥ महादेव कौ कहत सदा सिव ॥ निरंकार का चीनत नहि भिव ॥ १६ ॥ आपु आपनी बुधि है जेती । बरनत भिंन भिंन तुहि तेती ॥ तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥ किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥ १७ ॥ एकै रूप अनूप सरूपा ॥ रंक भयो राव कही भूपा ॥ अंडज जेरज सेतज कीनी ॥ उतभुज खानि बहुर रचि दीनी॥१८॥ कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ॥ कहूं सिमटि भयो संकर इकैठा ॥ सगरी

सृसटि दिखाइ अचंभव ॥ आदि
जुगादि सरूप सुयंभव ॥ १९ ॥ अब
रच्छा मेरी तुम करो ॥ सिक्ख
उबारि असिक्ख संघरो ॥ दुसट
जिते उठवत उतपाता ॥ सकल मलेछ
करो रणघाता ॥ २० ॥ जे असिधुज
तव सरनी परे ॥ तिनके दुष्ट दुखित
ह्वै मरे ॥ पुरख जवन पग परे
तिहारे ॥ तिनके तुम संकट सभ
टारे ॥ २१ ॥ जो कलि को इक
बार धिऐहै ॥ ताके काल निकटि
नहि ऐहै ॥ रच्छा होइ ताहि
सभ काला ॥ दुसट अरिसट

टरें ततकाला ॥ २२ । कृपा दृसटि तन जाहि निहरिहो ॥ ताके ताप तनक मो हरिहो ॥ रिद्धि सिद्धि घर मो सभ होई ॥ दुष्ट छाह छ्वै सकै न कोई ॥ २३ । एक बार जिन तुमै संभारा ॥ काल फास ते ताहि उबारा ॥ जिन नर नाम तिहारो कहा ॥ दारिद दुसट दोख ते रहा ॥ २४ ॥ खड़ग केत मैं सरणि तिहारी ॥ आप हाथ दै लेहु उबारी ॥ सरब ठौर मो होहु सहाई ॥ दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥ स्वैया । पांइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे

नहीं आन्यो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ सिमृत सासत्र बेद सभै बहु भेद कहैं हम एक न जान्यो ॥ श्री असिपान कृपा तुमरी करि मै न कह्यो सभ तोहि बखान्यो ॥

दोहरा ॥ सगल दुआर कउ छाडिकै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बांहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥

रामकली महला ३ अनंदु

१ ओ सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू

मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥ १ ॥

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारै॥

कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥ २ ॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥ ३ ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि

पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता
गुरू विटहु जिसदीआ एहि
वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु
संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥ ४ ॥
वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥
घरि सभागै सबद वाजे कला
जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत
तुधु वसि कीते कालु कंटकु
मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ
तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै
लागै ॥ कहै नानकु तह सुखु
होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ ५ ॥

अनंदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनी वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ अंमृत नामु ठाकुर का पइओ जिसका सभसु

अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै तिसका होइ उधारो॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरिधारो ॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ १ ॥

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुर सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै ता जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ १ ॥

अरदास

१ ओ श्री वाहिगुरू जी की फतहि ॥
श्री भगौती जी सहाइ ॥
वार श्री भगौती जी की पातशाही १० ॥

प्रथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ ॥ फिर अंगद गुर ते अमरदासु राम दासै होईं सहाइ ॥ अरजन हरगोबिंद नो सिमरो श्री हरिराइ ॥ श्री हरि किशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ ॥ तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ ॥ सभ थाईं होइ सहाइ ॥

दसवां पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंह साहिब जी। सब थाईं होइ सहाइ। दसों सत्गुरुओं के ज्योति स्वरूप श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पाठ व दर्शन का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू!

पांच प्यारों, चार साहिबजादों, चालीस मुक्तों, हठी जपी तपियों, जिन्हों ने नाम जपा, बांट खाया, देग चलाई, तेग वाही, देख कर अन-डीठ किया, उन प्रेमी सत्य वादियों की पवित्र कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी। बोलो जी वाहिगुरू!

जिन सिंह सिंहनियों ने धरम पर बलिदान दिये, अंग २ कटवाए, सिर की खोपड़ीआं उतरवाईं, चर्खियों पर चड़ाए गये, आरों से तन चिरवाए, गुरद्वारों के सुधार और पवित्रता के निमित्त शहीद हुए, धर्म नहीं छोड़ा, सिख धरम का केशों तथा प्राणों सहित पालन किया, उनकी कृत्य कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरू! पांचों तखतों, समूह गुरद्वारों का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू! प्रथमे सर्वत खालसा जी की अरदास

है जी सर्बत खालसा जी को वाहिगुरू, वाहिगुरू. वाहिगुरू, चित आवै, चित आवन से सर्व सुख हो, जहां जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रक्षा रिआयत, देग तेग फतह, बिरद की लाज, पन्थ की जीत, श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी का बोल बाला हो, बोलो जी वाहिगुरू!!!

सिखों को सिखी दान, केश दान, रहित दान, विवेक दान, विश्वास दान भरोसा दान, दानों के सिर दान नाम दान, श्री अमृतसर जी के स्नान, चौकियों, झंडे, बुंगे जुगो जुग

अटल, धर्म का जयकार, बोलो जी वाहिगुरु ! ! !

सिखों का मन नीवां, मति ऊची, मति का रक्षक स्वयं अकाल पुरख वाहिगुरू।

हे अकाल पुरख ! अपने पन्थ के सदा सहाई दातार जी ! श्री ननकाणा साहिब तथा और गुरद्वारों गुरधामों के, जिन से पन्थ को विछोड़ा गया है, खुले दर्शन दीदार और सेवा सम्भाल का दान खालसा जी को बख्शो।

हे निःमानो के मान, निःत्राणों के त्राण, निःओटों की ओट, निरा–

सरयों के आश्रय, सच्चे पिता वाहिगुरु ! आप की सेवा में... ... ... *की प्रार्थना है।

अक्षर मात्रादि भूल चूक क्षमा करना, सर्व के कार्य सिद्ध हों उन प्रेमियों का मिलाप हो जिन के मिलने से चित्त में तेरे नाम का निवास हो।

नानक नाम चढ़दी कला॥
तेरे भाणे सर्वत का भला॥

*यहाँ उस वाणी का नाम लें, जो पढ़ी है, अथवा जिस कार्य के लिए इकठ्ठ या संगति एकत्र हुई हो, उसका उलेख उचित शब्दों में कीजिए।

सोहिला

रागु गउड़ी दीपकी महला १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा

लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै
साहिब सिउ मेलु ॥ ३ ॥ घरि घरि
एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह
अवंनि ॥ ४ ॥ १ ॥

रागु आसा महला १ ॥

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस॥गुरु
गुरु एको वेस अनेक॥ १ ॥ बाबा जै
घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु
राखु वडाई तोइ॥ १ ॥ रहाउ ॥
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती
वारी माहु होआ ॥ सूरजु एको

रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥ २ ॥ २ ॥

रागु धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती॥धूयु मल आनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ॥ भवखंडना तेरी आरती॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तुोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत

मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति हैं सोइ ॥ तिसदै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुरसाखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरै नाइ वासा ॥ ४ ॥ ३ ॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा है ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव

मंडल मंडा हे ॥ १ ॥ करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥ करि डडओति पुनु वडा हें ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत हरिरस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हें ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ २ ॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भवखंडा हें ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हें ॥ ३ ॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हें ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे

ही सुखु मंडा हे ॥ ४ ॥ ४ ॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ अउध घटै दिनसु रैणा रे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥रहाउ॥ इहु संसारु विकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥ २ ॥ जाकउ आए सोई बिहाझहु हरिगुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे

बहुरि न होइगो फेरा॥३॥अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे॥ नानक दासु इहै सुखु मागै मोकउ करि संतन की धूरे॥४॥५॥

बारह माहा

मांझ महला ५ घरु ४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के पीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दहदिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम । जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभु सुआमी

बहुरि न होइगो फेरा॥३॥अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे॥ नानक दासु इहै सुखु मागै मोकउ करि संतन की धूरे॥४॥५॥

बारह माहा

मांझ महला ५ घरु ४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के पीछुड़े करि किरपा मेलहु राम॥ चारि कुंट दहदिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम। जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम॥ स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम॥ प्रभु सुआमी

कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ नानक की वेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिसका निहचल धाम ॥१॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥ संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु

गणा ।। जिनी राविश्रा सो प्रभू तिना भागु मणा ।। हरि दरसन कउ मनु लोचदा नानक पिश्रास मना ।। चेति मिलाए सो प्रभु तिस कै पाइ लगा ।।२।।

वैसाखि धीरणि किउ वाढ िश्र जिना प्रेम बिछोहु ।। हरि साजनु पुरखु विसारिकै लगी माइश्रा धोहु।। पुत्र कलत्र न संगि धना हरि श्रविनासी श्रोहु ।। पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ।। इकसु हरिके नाम बिनु श्रगै लईश्रहि खोहि ।। दयु विसारि विगुचणा प्रभ

बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रीतम चरणी
जो लगे तिनकी निरमल सोइ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु
परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा तां
लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥ ३ ॥
हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु
अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण
दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै
नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै
जेते मनि भावनि । जो हरि लोड़े
सो करे सोई जीअ करंनि ॥ जो प्रभि
कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥

आपण लोआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ।४।।

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिना पासि ॥ जग जीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधु भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥

करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥

सावणि सरसी कामणी चरण कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अंमृत बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै

नों मनु लोचदा करमि मिलावण हारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाईश्रा हउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइश्रा करि सबदि सवारण हारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥

भादुइ भरमि भुलाणीश्रा दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइश्रा कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा

हैतु ॥ हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणे करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ संत सहाई प्रेम के हउ तिनकै लागा पाइ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ जिनी चाखिआ प्रेम रसु से

तृपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि

सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिग्रा धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि विग्रोग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साध संगु बिनसहि सभे सोच ॥ ९ ॥

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीग्राह ॥ तिनकी सोभा किग्रा गणी जि साहिबि मेलड़ीग्राह ॥ तनु मनु मउलिग्रा राम सिउ संगि साध सहेंलड़ीग्राह ॥

साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह॥ मघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥ १० ॥

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा

साहु ॥ ओट गोविद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न बिछुड़ीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का

नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥ जिसनो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२ ॥ फलगुणि अनंद उपारजना हरि

सजण प्रगटे आइ ॥ संत सहाई
राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा
नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी
वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि
सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद
अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न
दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल
दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते
रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक
चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सलाहीऐ जिसनो तिलु त तमाइ ॥
१३ ॥ जिनि जिनि नामु धिआइआ
तिनके काज सरे ॥ हरि गुरु
पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
सरब सुखा निधि चरण हरि
भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति
तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि
भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन
अंदरि एकु धरे ॥ माह दिवस
मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा
करहु हरे ॥ १४ ॥ १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसाद ॥

कीरतनी

आसा दी वार

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी
सैभं गुरप्रसादि ॥

रागु माझ चउपदे घरु १ महला ४

हरि हरि नाम मैं हरि मनि भाइआ ॥
वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥
गुरि पूरे हरि नाम सिधि पाई
को विरला गुरमति चलै जीउ ॥ १ ॥
मैं हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥
मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥

गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ
हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥ २ ॥
हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥
कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥
हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा
मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥ ३ ॥
सतिगुरु मित्रु मेरा बाल सखाई ॥
हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥
हरि जीउ कृपा करहु गुरु मेलहु
जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आसा महला ४

छंत घरु ४ ॥

हरि अमृत भिने लोइणा मनु प्रेमि रतंना
राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु

सोविना ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिना ॥ जन नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥ १ ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

आसा महला १ ॥

वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे असराजै की धुनी ॥

सलोकु मः १ ॥

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ जिनि माणस ते

देवते कीए करत न लागी वार ॥ १ ॥ महला २ ॥ जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ एते चानण होदिआ गुर बिनु घोर अंधार ॥ २ ॥ मः १ ॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥ ३ ॥

पउड़ी ॥

आपीन्है आपु साजिओ

आपीन्है रचिओ नाउ ॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥ १ ॥

गोंड महला ४ ॥

हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै ॥ जिउ तृखावंतु बिनु नीर ॥ १ ॥ मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥ २ ॥ मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर ॥ ३ ॥ जन नानक की हरि आस

पुजावहु हरि दरसनि सांति सरीर ॥ ४ ॥ ६ ॥

हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणिआले अणीआ राम राजे ॥ जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुर मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥ २ ॥

सलोकु म: १ ॥

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥

सचे तुधु आखहि लख करोडि ॥
सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥
सची तेरी सिफति सची सालाहु ॥
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥
नानक सचु धिआइनि सचु ॥
जो मरि जंमे सु कचु निकचु ॥ १ ॥

मः १ ॥

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥
वडी वडिआई जा आपे आपि ॥

नानक कार न कथनी जाइ ॥
कीता करणा सरब रजाइ ॥ २ ॥

महला २ ॥

इहु जगु सचै की है कोठड़ी
सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा
हुकमि समाइ लए इकन्हा
हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा
भाणै कढि लए इकन्हा माइआ
विचि निवासु ॥ एव भि आखि
न जापई जि किसै आणे रासि ॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ जाकउ
आपि करे परगासु ॥ ३ ॥

पउड़ी ॥

नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ २ ॥

सोरठि महला ५ ॥

हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥ हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥ १ ॥

आधो हम ऐसे तू ऐसा ॥ हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ॥ निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥ २ ॥ तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥ तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपने बाला ॥३॥ तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ॥ कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥४॥ ६॥१७॥

हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ मिलि संत जना हरि पाइआ

नानक सतसंगा ॥२॥

सलोक मः १ ॥

विसमादु नाद विसमादु वेद ॥
विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥
विसमादु रूप विसमादु रंग ॥
विसमादु नागे फिरहि जंत ॥
विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥
विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥
विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥
विसमादु सादि लगहि पराणी ॥
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥
विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥
विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥

विसमादु उभड़ विसमादु राह ॥
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥
विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥
वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥
नानक बुझणु पूरै भागि ॥ १ ॥

म: १ ॥ कुदरति दिसै
कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख
सारु ॥ कुदरति पाताली आकासी
कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति
वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब
वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा
पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥
कुदरति जाती जिनसी रंगी

कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी पउदीई

हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥

सोरठि महला ५ ॥

सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥ राखु पैज नाम अपुने की करन करावन हारे ॥ १ ॥ प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥२॥२६॥

दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ भगति बछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥८॥१५॥

सलोक म: १ ॥

भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥
भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥
भै विचि धरती दबी भारि ॥
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥
भै विचि राजा धरम दुआरु ॥
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥
कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥
भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥
भै विचि आडाणे आकास ॥
भै विचि जोध महाबल सूर ॥
भै विचि आवहि जावहि पूर ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु
॥ १ ॥ मः १ ॥ नानक निरभउ
निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥
केतीआ कन्ह कहाणीआ केते बेद
बीचार ॥ केते नचहि मंगते गिड़ि
मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार
महि आइ कढहि बाजार ॥
गावहि राजे राणीआ बोलहि
आल पताल ॥ लख टकिआ के
मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥
जितु तनि पाईअहि नानका से
तन होवहि छार ॥ गिआनु न

गलीई ढूढीऐ कथता करड़ा सारु ॥
करमि मिलै ता पाईऐ होर
हिकमति हुकमु खुआरु ॥ २ ॥
पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी
ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥
एहु जीउ बहुते जनम भरमिआ
ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥
सतिगुर जेवडु दाता को नही
सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ ॥
जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥

सजण प्रगटे आए ॥ संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाए ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाए ॥ इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ हलतु पलतु सवारिउनु निहचल दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥ जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥

आसा महला ४ ॥

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजनु लधा राम राजे ॥ कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा

रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग
वडे हरि पाइआ नानक रति गुधा ॥१॥

सलोक मः १ ॥

घड़ीआ सभै गोपीआ पहर
कन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु
पाणी बैसंतरु चन्दु सूरजु अवतार ॥
सगली धरती मालु धनु वरतणि
सरब जंजाल ॥ नानक
मुसै गिआन विहूणी खाइ
गइआ जमकालु ॥ १ ॥ मः १ ॥
वाइनि चेले नचनि गुर ॥
पैर हलाइनि फेरनि सिर ॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥

वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥
गावनि सीता राजे राम ॥
निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥
जा का कीआ सगल जहानु ॥
सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥
भिनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥
सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥
नदरी करमि लघाए पारि ॥
कोलू चरखा चकी चकु ॥
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥

लाटू माधाणीआ अनगाह ॥
पंखी भउदीआ लैणि न साह ॥
सूऐ चाढ़ि भवाईअहि जंत ॥
नानक भउदिआ गणत न अंत ॥
बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ पइए
किरति नचै सभु कोइ ॥ नचि नचि
हसहि चलहि से रोइ ॥ उडि न
जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु
मनका चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि
भउ तिन्हा मनि भाउ ॥२॥ पउड़ी॥
नाउ तेरा निरंकारु हैं नाइ
लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ
पिंडु सभु तिसदा दे खाजै आखि

गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥

रागु गउड़ी ॥

पंथु निहारै कामनी लोचन भरीले उसासा ॥ उर न भीजै पगु न खिसै हरि दरसन की आसा ॥ १ ॥ उडहु न कागा कारे ॥ बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥ एकु आधारु नामु नारायन रसना रामु रवीजै ॥२॥१॥१४॥६५॥

पंघु दसावा नित खड़ी मुंघ जोबनि

बाली राम राजे ॥ हरि हरि नामु चेताए गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥२॥

सलोक मः १ ॥

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख

नामु करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥ ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु ; सचु नामु

आधारु ॥ सदा अनंदि रहहि
दिनु राती गुणवंतिआ पाछारु ॥
१ ॥ मः १ ॥ मिटी मुसलमान
की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी
करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै
बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥
नानक जिनि करतै कारणु
कीआ सो जाणै करतारु ॥ २ ॥

पउड़ी ॥

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ
बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु
करि परगटु आखि सुणाइआ ॥

सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जग जीवनु दाता पाइआ ॥६॥

रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कोइ आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥ १ ॥ दरसनु हरि देखण कै ताई ॥ कृपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥२॥ जे भुख देहि त इतही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥ ३ ॥ तनु मनु काटि काटि सभु

अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥ ४ ॥ पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥ ५ ॥ नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ ६ ॥

गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥ ३ ॥

सलोक म: १ ॥

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥

हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोहै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥

हउमैं बूझै त दरु सूझै ॥
गिआन विहूणा कथिकथि लूझै ॥
नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥ १ ॥
महला २ ॥ हउमै एहा जाति है
हउमैं करम कमाहि ॥ हउमै
एई बंधना फिरि फिरि जोनी
पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै
कितु संजमि इह जाइ ॥
हउमैं एहो हुकमु है पइऐ
किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ
रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपनी ता गुरका

सबदु कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सेव कीती संतोखीई जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥ ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुकृतु धरमु कमाइआ ॥ ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ॥ वडिआई वडा पाइआ ॥ ७ ॥

(गउड़ी की वार महला ५ ॥) पउड़ी ३ ॥

अंमृत नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ

तिखा बुझाई ॥ करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥ सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥ तुधु जेवडु तू है पारब्रहम नानक सरणाई ॥३॥

गुर अंमृत भिंनी देहुरी अंमृत बुरके राम राजे ॥ जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंमृत छकि छके ॥ गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥

सलोक मः १ ॥

पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥ दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥ अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥ सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥ नानक

जंत उपाइकै संमाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥ सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥ १ ॥ मः १ ॥ लख नेकीआ चंगिआईआ लखु पुंना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥ लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती

लख गिआन धिआन पढ़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥
सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥ विचि दुनीआ काहे

आइआ ॥ ८ ॥

रामकली की वार महला ५ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ५ ॥

जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मैं डीठु ॥ विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ हरि नामो मंत्रु दृड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥

आसा मः ४ ॥

हरि अंमृत भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धंनु वणजारा रणजु है गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानक गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥

सलोकु म: १ ॥

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥ १ ॥ म: १ ॥ लिखि लिखि पड़िआ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥

ग्रंनु न खाइग्रा सादु गवाइग्रा।।
बहु दुखु पाइग्रा दूजा भाइग्रा।।
बसत्र न पहिरै।। ग्रहिनिसि कहरै।।
मोनि विगूता।। किउ जागै गुर
बिनु सूता ।। पग उपे ताणा ।।
ग्रपणा कीग्रा कमाणा ।। अलु
मलु खाई सिरि छाई पाई।।
मूरखि ग्रंधै पति गवाई ।।
विणु नावै किछु थाइ न पाई।।
रहै बेबाणी मड़ी मसाणी।।
ग्रंधु न जाणै फिरि पछुताणी।।
सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ।।
हरि का नामु मंनि वसाए।।

नानक नदरि करे सो पाए॥
आस अंदेसे ते निहकेवलु
हउमै सबदि जलाए ॥ २॥
पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे
दरि सोहनि कीरति गावदे॥
नानक करमा बाहरे दरि ढोअ
न लहन्ही धावदे ॥ इकि मूलु
न बुझन्हि आपणा अणहोदा
आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढीका
नीच जाति होरि उतम जाति
सदाइदे ॥ तिन्ह मंगा जि तुझै
धिआइदे॥ ९॥

आसा घरु ८ काफी म: ला ५

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मै बंदा बैखरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु तिसदा सभु किछु है तेरा ॥ १ ॥ माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥ बिनु साचे अनटेक है सो जाणहु काचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ॥ जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥ २ ॥ चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ ॥ तुठा साहिबु जो देवै सोंई सुखु पाईऐ ॥ ३ ॥ जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा ॥ जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥ ४ ॥ १ ॥ १०३ ॥

सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु

वणजारा राम राजे ॥ सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥

सलोक मः १ ॥

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु ससारु ॥ कूड़ु मडप कूड़ु मांड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हण हारु ॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती

सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ मिठा कूड़ु माखिउ कूढ़ु डोबे पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ ॥ १ ॥ म: १ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोखदुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु

दानु करेइ ॥ सचु तां परु जाणीऐ
जा आतम तीरथि करे निवासु ॥
सतिगुरू नो पुछिकै बहि रहै करे
निवासु ॥ सचु सभना होइ दारू पाप
कढै धोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती
जिन सचु पलै होइ ॥२॥

पउड़ी ॥ दानु महिंडा तली
खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥
कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक
मनि अलखु धिआइऐ ॥ फलु
तेवेहो पाईऐ जेवेही कार
कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ
ता धूड़ि तिना दी पाईऐ ॥ मति
थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥

सूही महला ५ ॥

किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ॥ बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥१॥ लाल रंगीले प्रीतम मन मोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥ रहाउ ॥ प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम सदा सदा उपकारे ॥ सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ २ ॥ किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ॥ ३ ॥ पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥४॥६॥

हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सलाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥

हम मूरख किछुअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥३॥

सलोकु मः १ ॥

सचि कालु कूड़ वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥ भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥ १ ॥ मः १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ

बहि बहि करे बीचारु ॥ अंधी
रयति गिआन विहूणी भाहि भरे
मुरदारु ॥ गिआनी नचहि वाजे
वावहि रूप करहि सीगारु ॥ उचे
कूकहि वादा गावहि जोधा का
वीचारु ॥ मूरख पंडित हिकमति
हुजति संजै करहि पिआरु ॥ धरमी
धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख
दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न
जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥
सभु को पूरा आपे होवै घटि न
कोई आखै ॥ पति परवाणा पिछै
पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥
२ ॥ मः १ ॥ वदी सु वजगि

नानका सचा वेखै सोइ ॥ सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥ धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥ ११ ॥

कलिआन महला ४ ॥

प्रभ कीजै कृपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे ॥१॥रहाउ॥ हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥ १ ॥ जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥ २ ॥ जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥ जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥ ३ ॥ हरि आपे होइ कृपालु आपि लिव लावहिगे ॥ जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥४॥६॥ छका१॥

जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए॥

जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ॥४॥१०॥१७॥

सलोकु मः १॥

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥ बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥ म० २ ॥ जोग सबदं गिआन

सबदं बेद सबदं ब्रहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं
प्राकृतह ॥ सरब सबदं एक
सबदं जे को जाणै भेउ ॥ नानकु
ताका दासु है सोई निरंजन देउ ॥
३ ॥ म: २ ॥ एक कृसनं सरब
देवा देव देवात आतमा ॥ आतमा
बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ताका दासु है सोई निरंजन
देउ ॥ ४ ॥ म: १ ॥ कुंभे बधा
जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥
गिआन का बधा मनु रहै गुर
बिनु गिआनु न होइ ॥५॥ पउड़ी
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी

साधु न मारीऐ ॥ जेहा घालै घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥

आसा महला ५ ॥

अनिक भांति करि सेवा करीऐ ॥ जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ॥ पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥ अनिक बार जाईऐ कुरबानु ॥ १ ॥ साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दासनि दासी की पनिहारि ॥ उन की रेणु बसै जीअ नालि ॥ माथै भागु त पावउ संगु ॥ मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥ २ ॥ जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥ करम धरम अरपउ सभ

होमा ॥ गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥
उन कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥ ३ ॥
निमख निमख एही आराधउ ॥ दिनसु
रैणि एह सेवा साधउ ॥ भए कृपाल
गुपाल गोबिंद ॥ साध संगि नानक
बखसिंद ॥४॥३३॥८४।

आसा महला ४॥

जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ
तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु
घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो
फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन नानक नामु
आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥

सलोकु मः १ ॥

नानक मेरु सरीर का इकु रथु
इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि
वटाईअहि गिआनी बुझहि

ताहि ॥ सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥ १ ॥ म० १ ॥ साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ लइऐ पराछत जाहि । नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह कृसनु जादमु भइआ ॥ पारजातु गोप

लै आइआ विंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे

डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥
तिलंग महला ९ काफी ॥

चेतना है तउ चेत लै निसिदिनि मैं प्रानी ॥ छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥ हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥ झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥ अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥ कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै॥२॥१॥

जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरिभाए ॥२॥

सलोकु म० १ ॥
सिमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥ सीसि निवाईऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥ १ ॥ म० १ ॥ पड़ि पुसतक

संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ सभि फोकट निसचउ करमं ॥ कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥ १ ॥ पउड़ी ॥ कपड़ु रूप सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥ मंदा चगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम कीए मनि भांवदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ नंगा दोजिक चालिआ

ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥ १४॥

माझ महला ५ ॥

तूं मेरा पिता तूं है मेरा माता ॥ तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता॥ तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥ १ ॥

तुमरी कृपा ते तुधु पछाणा ॥ तूं मेरी ओट तूं है मेरा माणा ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥ २ ॥

जीअ जंत सभि तुधु उपाए ॥ जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥ सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ॥ ३ ॥

नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥ हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥ गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥४॥२४॥३१ ॥

तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु

नाही सभि चलहि चलाए ॥ जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥३॥

सलोकु म० १ ॥

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥ एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ न एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ

॥१॥ मः १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु । नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु । २ । मः १ ॥ नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥ ३ ॥ मः १ ॥ तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ भलके थुक

पवै नित दाड़ी ॥ तगु न पैरी तगु न हथी ॥ तगु न जिहवा तगु न ग्रखी ॥ वेतगा ग्रापे वतै ॥ वटि धागे ग्रवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे वीग्राहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥ सुणि वेखहु लोका इहु विडाणु ॥ मनि ग्रंधा नाउ सुजाणु ॥ ४ ॥ पउड़ी ॥ साहिबु होइ दइग्रालु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥ सो सेवकु सेवा करे जिसनो हुकमु मनाइसी ॥ हुकमु मंनिऐ होवै परवाणु ॥ ता खसमै का महलु पाइसी ॥ खसमै भावै सो

करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥ ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥

महला १ ॥

न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी कीतै रोजि॥न भीजै रूपी माली रंगि ॥ न भीजै तीरथि भविऐ नंगि ॥ न भीजै दाती कीतै पुंनि ॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥२॥

कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना

नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥

सलोकु म० १॥

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई॥ धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछां खाई॥ अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई॥ छोडीले पाखंडा॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा॥१॥ म० १॥ माणस खाणे करहि निवाज॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग॥ तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद॥ उन्हा भि आवहि ओई साद॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु॥ कूड़ु बोलि करहि

आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ हथि छुरी जगत कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ दे कै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु

पाईऐ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा । वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मगनि भिख न पाइदा ॥ १६॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी ॥

दिलहु मुहबति जिन्ह सेई सचिआ ॥ जिन मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥ १ ॥ रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥ विसरिआ जिन नामु ते भुइ भारु थीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥ तिन धंनु

जणेदी माउ आए सफलु से ॥ २ ॥
परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥
जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं ॥३॥
तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥ सेख
फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥४॥१॥

आसा महला ४ ॥

जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन
सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु
भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥
हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु
निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है
हरि ताणु सताणे ॥ १ ॥

सलोकु म० १॥

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि
पितरी देइ ॥ अगै वसतु
सिआणीऐ पितरी चोर करेइ ॥
वढीअहि हथ दलाल के मुसफी

एह करेहि ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ॥ १ ॥ म० १ ॥ जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ। २ ॥ पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ चोज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु

विसारिआ । जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥

म: ४ ॥

सा धरति भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ धनु धनु पिता धनु धनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनी गुरू जणिआ माइ ॥ धनु धनु गुरू जिनी नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाए ॥ हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ ॥२॥

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ।। गुर सिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुर सिखा की घालि थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन नानकु सतिगुरू पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥२॥

सलोकु म० १॥

जेकरि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ । जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥ १ ॥ म० १ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा परत्रिअ परधन रूपु ॥ कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥ नानक हंसा

आदमी बघे जमपुरि जाहि ॥ २ ॥
म० १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै
लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा हुकमु
है भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा
पवित्रु हैं दितोनु रिजकु संबाहि ॥
नानक जिनी गुरमुखि बुझिआ
तिना सूतकु नाहि ॥ ३ ॥ पउड़ी ॥
सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ
जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥
सहि मेले ता नदरी आईआ ॥
जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥
करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु
मारि कढीआ बुरिआईआ ॥
सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥

बिलावलु महला ५ ॥

मूलालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥
तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिच
तनी ॥ १ ॥ दिनसु रैनि मन माहि बसतु
है ॥ तू करि किरपा प्रभ अपनी ॥२॥
बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ
कथा जाकी बात सुनी ॥३ ॥ जन नानक
दासनि दासु कहीअत है ॥ मोहि करहु
कृपा ठाकुर अपुनी ॥४॥२८॥११४॥

गुर सिखा मनि हरि प्रीति है हरि
नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि
पूरा सतिगुरु भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुर
सिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर
खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुंनु
बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन
केरी ॥३॥

सलोकु मः १॥

पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा

आइ ॥ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइकै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥ १ ॥ मः १ ॥ भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ भंडहु होवै दोसती

भंडहु चलै राहु ॥ भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ । नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ मंदा किसै न आखीऐ

पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥

गउड़ी महला ५ ॥

प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥ पाइ लगउ मोहि करउ बेनती ॥ कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥ १ ॥ पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥२॥२॥११९ ॥

गुर सिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुर सिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुर सिख

पैनाईअहि जिना मेरा सतिगुरु तुठा ॥
जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि
मनि वुठा ॥४॥१२॥१६॥

सलोकु । नानक फिकै बोलिऐ तनु
मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीऐ
फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह
सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै
सजाइ ॥ १ ॥ म: १ ॥ अंदरहु
झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि
फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि
उतरै नाही मैलु ॥ जिन पटु
अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले
संसारि ॥ तिन नेहु लगा रब
सेती देखने वीचारि ॥ रंगि हसहि

रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥
परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे
नाह ॥ दरिवाट उपरि खरचु
मंगा जबैं देइ त खाहि ॥ दीबानु
एको कलम ऐका हमा तुमा मेलु ॥
दरि लए लेखा पीड़ि छुटैं नानका
जिउ तेलु ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ आपे ही
करणा कीओ कल आपे ही तै
धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा
धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो
आइआ सो चलसी सभु कोई आई
वारीऐ ॥ जिसके जीअ पराण हहि
किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥
आपण हथी आपणा आपे ही

काजु सवारीऐ ॥२०॥

मलार महला ४ ॥

जिन कै हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भांति ॥ तिन देखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सद बलि जांत ॥ १ ॥ गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ॥ तिन की त्रिसना भूख सभ उतरी जो गुरमति राम रसु खांति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ लहि जाइ भरांति ॥ जिउ जल दुध भिन भिंन काढै चुणि हंसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधु हउमै ताति ॥ २ ॥ जिन कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमांति ॥ तिन कउ किआ कोई देइ खवालै ओइ आपि बीजि आपे ही खांति ॥ ३ ॥ हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जन महि आपु रखांति ॥ धनु धंनु गुरू नानकु समदरसी

जिनि निंदा उसतति तरी तरंति ॥४॥५॥

आसा महला ४ ॥

जिना भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरु तिन हरि नामु दृड़ावै राम राजे ॥ तिस की तृसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥

सलोकु महला २ ॥ एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥ आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥ १ ॥ महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥

नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ जितु सेवीऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा समालीऐ ॥ जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥

टोडी महला ५ ॥ हरि के चरन कमल मनि धिआउ॥काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीने ताप निवारण हारा दुख हंता सुख रासि ॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जाकी प्रभ

आगै अरदासि ॥ १ ॥ संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥ बाल बुधि पूरन सुख दाता नानक हरि हरि टेक ॥२॥८॥१३॥

जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुर पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिनी सतिगुर पिआरा सेविआ तिना सुखु सद होई ॥ जिना नानकु सतिगुर भेटिआ तिना मिलिआ हरि सोई ॥२॥

सलोकु महला २ ॥चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु। गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥नानक जिसनो लगा तिसु मिलै लगा सो

परवानु ॥ १ ॥ महला २ ॥ जो
जीइ होइ सु उगवै मुह का
कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मंगै
अंमृतु वेखहु एहु निआउ ॥ २ ॥
महला २ ॥ नालि इआणे दोसती
कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै
तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥
वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी
होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न
चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि
कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति
विगासि ॥ ३ ॥ महला २ ॥ नालि
इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥
पाणी अंदरि लीक जिउ तिसदा

थाउ न थेहु ॥ ४ ॥ महला २ ॥ होइ
इआणा करे कंमु आणि न सकै
रासि ॥ जे इक अध चंगी करे दूजी
भी वेरासि ॥ ५ ॥ पउड़ी ॥ चाकरु
लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ
हुरमति तिसनो अगली ओहु वजहु
भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे
बराबरी फिरि गैरति अंदरि
पाइ ॥ वजहु गवाए अगला मुहे
मुहि पाणा खाइ ॥ जिसदा दिता
खावणा तिसु कहीऐ साबासि॥
नानक हुकमु न चलई नालि
खसम चलै अरदासि ॥२२॥

गउड़ी कबीर जी ॥ निंदउ निंदउ मोकउ

लोगु निदउ॥निंदा जन कउ खरी पिआरी॥
निंदा बापु निंदा महतारी ॥ १ ॥रहाउ॥
निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ॥नामु पदारथु
मनहि बसाईऐ ॥ रिदै सुध जउ निंदा
होइ ॥ हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥ १ ॥
निदा करै सु हमरा मीतु ॥ निंदक माहि
हमारा चीतु ॥ निंदकु सो जो निंदा होरै॥
हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥ २॥ निंदा
हमरी प्रेम पिआरु ॥ निंदा हमरा करै
उधारु॥ जन कबीर कउ निंदा सारु ॥
निदकु डूबा हम उतरे पारि ।३॥२०॥७१॥

जिना अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन
हरि रखणहारा राम राजे॥ तिन की निंदा
कोई किआ करे जिन हरि नामु पिआरा ॥
जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट
झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ
हरि रखणहारा ॥३॥

सलोकु महला २ ॥ एह किनेही दाति ग्रापस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥ महला २ ॥ एह कनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥ पउड़ी ॥ नानक ग्रंत न जापनी हरि ताके पारावार ॥ ग्रापि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकना गली जंजीरीआ इेकि तुरी चड़हि बिसीग्रार ॥ ग्रापि कराए करे ग्रापि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीग्रा फिरि

तिस ही करणी सार ॥२३॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥
रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥

भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिसदी साची बाणी ॥ सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ भगता की चाल सची अति निरमल नामु सचा मनि भाइआ ॥ नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ १ ॥

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नाम

देउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥ ४॥१३॥२०॥

सलोकु म० १ ॥ आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकनी दुधु समाईऐ इकि चुलै रहनि चड़े ॥ इकि निहाली पै सवनि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिना सवारे नानका जिन कउ नदरि करे ॥ १ ॥ महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु विचि जंत उपाइकै देखै थापि उथापि ॥ किसनो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥ २ ॥ पउड़ी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा

कहणु न जाइ ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिनै पाइ ॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥

सुधु ॥

गउड़ी सुखमनी मः ५॥

सलोकु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥

जुगादि गुरए नमह ॥

सतिगुरए नमह ॥

स्री गुरदेवए नमह ॥१॥

असटपदी ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ॥

कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥

सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥

नामु जपत अगनत अनेकै ॥

बेद पुरान सिमृति सुधाखर ॥

कीने रामनाम इक आखर ॥

किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥
ताकी महिमा गनी न आवै ॥
कांखी एकै दरस तुहारो ॥
नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥
सुखमनी सुख अंमृत प्रभ नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम॥रहाउ॥
प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु जमु नसै ॥
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥
प्रभ कै सिमरनु अनदिनु जागै ॥
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥

प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥
सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥
प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि
नउनिधि ॥ प्रभ कै सिमरनि
गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥
प्रभ कै सिमरनि होइ सुभला ॥
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ।
नानक ता कै लागउ पाए ॥ ३ ॥
प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥

प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥
प्रभ कै सिमरनि तृसना बुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥
अमृत नामु रिद माहि समाइ ॥
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥
प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥

प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे॥
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी॥
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी॥
सिमरन ते लागे जिन आपि
दइआला॥ नानक जन की
मंगै रवाला॥५॥
प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद
बलिहारी॥ प्रभ कउ सिमरहि
से मुख सुहावे॥ प्रभ कउ
सिमरहि तिन सूखि बिहावै॥ प्रभ
कउ सिमरहि तिन आतमु जीता॥
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल
रीता॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन
अनद घनेरे॥ प्रभ कउ सिमरहि

बसहि हरि नेरे ॥ संत कृपा ते अनदिनु जागि ॥ नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥
प्रभ कै सिमरनि हरिगुन बानी ॥
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥ नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥

हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥
हरि सिमरनि कीउ सगल अकारा ॥
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥
नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥

सलोकु ॥

दीन दरद दुख भंजना
घटि घटि नाथ अनाथ ॥

सरणि तुमारी आइउ

नानक के प्रभ साथ ॥१॥

असटपदी ॥

जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥
जह महा भइआन दूत जम दलै ॥
तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥
जह मुसकल होवै अति भारी ॥
हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥
अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥
हरिको नामु कोटि पाप परहरै ॥
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥
नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥
सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥

हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥
लाख करोरी बंधु न परै ॥
हरि का नामु जपत निसतरै ॥
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥
हरि का नामु जपत आघावै ॥
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥
तह हरिनामु संगि होत सुहेला ॥
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥
नानक गुरमखि परम गति पाईऐ॥२॥
छूटत नही कोटि लख बाही ॥
नामु जपत तह पारि पराही ॥
अनिक बिघन जह आइ संघारै॥
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥

नामु जपत पावै विस्राम ॥
हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥
ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥
नानक पाईऐ साध कैं संगि ॥३॥
जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥
जिह पैडे महा अंध गुबारा ॥
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥
जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥
तह हरि के नाम की तुम
ऊपरि छाम ॥ जहा तृखा मन

तुझु आकरखै ॥ तह नानक
हरि हरि अंमृतु बरखै ॥ ४ ॥
भगत जना की बरतनि नामु ॥
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥
हरि का नामु दास की उट ॥
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥
हरि जसु करत संत दिनु राति ॥
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥
हरि जन कै हरिनामु निधानु ॥
पारब्रहमि जन कीनो दान ॥
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥
हरि का नामु जन कउ मुकति
जुगति ॥ हरि कै नामि

जन कउ तृपति भुगति ॥
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥
हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥
हरि का नामु जन की वडिआई ॥
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥
हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥
हरि नामु जपत कछु नाहि बिउगु ॥
जनु राता हरिनाम की सेवा ॥
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥
हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥
हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥
सुंन समाधि नाम रस माते ॥

अाठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥
नानक जन संगि केते तरे ॥७॥
पारजातु इहु हरि को नाम ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥
नानक गुरमुखि नामु पावै
जनु कोइ ॥८॥२॥

सलोकु ॥
बहु सासत्र बहु सिम्रिती
पेखे सरब ढढोलि ॥
पूजसि नाही हरि हरे
नानक नाम अमोल ॥१॥
असटपदी ॥
जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥
खट सासत्र सिमृति वखिआन ॥
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
पुंन दान होमे बहु रतना ॥ सरीरु
कटाइ होमै करि राती ॥ वरत
नेम करै बहु भाती ॥ नही तुलि
राम नाम बीचार ॥ नानर गुरमुखि

नामु जपीऐ इक बार ॥ १ ॥
नउ खंड पृथमी फिरै चिरु जीवै ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
अगनि माहि होमत परान ॥
कनिक असव हैवर भूमि दान ॥
निउली करम करै बहु आसन ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥
निमख निमख करि सरीरु
कटावै ॥ तउ भी हउमै मैलु न
जावै ॥ हरि के नाम समसरि
कछु नाहि ॥ नानक गुरमुखि
नामु जपत गति पाहि ॥ २ ॥
मन कामना तीरथ देह छुटै ॥
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥
सोच करै दिनसु अरु राति ॥

मन की मैलु न तन ते जाति ॥
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥
जलि धोवै बहु देह अनीति ॥
सुध कहा होइ काची भीति ॥
मन हरि के नाम की महिमा
ऊच ॥ नानक नामि ऊधरे
पतित बहु मूच ॥ ३ ॥
बहुतु सिआणप जमका भउ बिआपै॥
अनिक जतन करि तृसन न ध्रापै ॥
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥
छूटसि ताही ऊभ पइआलि ॥
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥

गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥
हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥
नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥
चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साध संगि इह हउमैं छोरै ॥
जे को जनम मरण ते डरै ॥
साध जना की सरनी परै ॥
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥
सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥
साध संगि जा का मिटै अभिमानु ॥

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ जा का
मनु होइ सगल की रीना ॥ हरि
हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥
मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
पेखै सगल सृसटि साजना ॥
सूख दूख जन सम दृसटेता ॥
नानक पाप पुंन नही लेपा । ६॥
निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥
करन करावनहार सुआमी ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥

आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
तुमरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥
सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥
साध संगि दुरमति मलु हिरिआ ॥
सगल उदम महि उदमु भला ॥
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥
सगल बानी महि अमृत बानी ॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥

सलोकु ।

निरगुनीआर इआनिआ

सो प्रभु सदा समालि ॥
जिनि कीआ तिसु चीति रखु
नानक निबही नालि ॥ १ ॥

असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥
कवन मूल ते कवन दृसटानी ॥
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥ १ ॥
जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥

सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ।२॥
आदि अंति जो राखनहारु ॥
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥
जा की सेवा नव निधि पावै ॥
तासिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥

जा की टहल पावै दरगह मानु ॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥
नानक राखनहारु अपारु ॥ ३ ॥
रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥
साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥
जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥
जो होवनु सो दूरि परानै ॥
छोडि जाइ तिसका स्रमु करै ॥
संगि सहाई तिसु परहरै ॥
चंदन लेपु उतारै धोइ ॥
गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥ ४ ॥
करतूति पसू की मानस जाति ॥

लोक पचारा करै दिनु राति ॥
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥
नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥
सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥
कहा बुझारति बूझै डोरा ॥
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥
कहा बिसनपद गावै गुंग ॥
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥

कहू पिंगुल परबत परभवन ॥
नही होत ऊहा उसु गवन ॥
करतार करणामै दीनु बेनती करै ॥
नानक तुमरी किरपा तरै ॥ ६ ॥
संगि सहाई सु आवै न चीति ॥
जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥
बलुआ के गृह भीतरि बसै ॥
अनद केल माइआ रंगि रसै ॥
दृड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥
कालु न आवै मूड़े चीति ॥
बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥
इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥
नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥
७॥ तू ठाकरु तुम पहि अरदासि ॥

जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥
तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥
तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥
कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥
तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥
नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥

सलोकु ॥

देनहारु प्रभ छोडि कै
लागहि आन सुआइ ॥
नानक कहू न सीझई
बिनु नावै पति जाइ॥१॥

असटपदी ॥

दस बसतू ले पाछै पावै ॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥
ताकउ कीजै सद नमसकारा ॥
जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥
सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥
सरब थोक नानक तिनि पाइआ॥ १॥
अगनत साहु अपनी दे रासि ॥
खात पीत बरतै अनद उलासि ॥
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥
अज्ञानी मनि रोसु करेइ ॥

अपनी परतीति आप ही खोवै ॥
बहुरि उसका बिस्वासु न होवै ॥
जिस की वसतु तिसु आगै राखै ॥
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥
उस ते चउगुन करै निहालु ॥
नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥
अनिक भाति माइआ के हेत ॥
सरपर होवत जानु अनेत ॥
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥
जो दीसै सो चालनहारु ॥
लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥
बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥
ता कउ हाथि न आवै केह ॥
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥

करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥
३॥मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ ॥
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥
मिथिआ राज जोबन धन माल ॥
मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥
मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥
मिथिआ रंगिसंगिमाइआ पेखि हसता॥
मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥
असथिरु भगति साध कीसरन॥नानक
जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥
मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥
मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद॥
मिथिआ रसना भोजन अनस्वाद ॥

मिथिआचरनपर बिकार कउ धावहि॥
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि॥
मिथिआ तन नही पर उपकारा॥
मिथिआ बासु लेत बिकारा॥
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए॥ सफल
देह नानकु हरि हरि नाम लए॥५॥
बिरथी साकत की आरजा॥ साच
बिना कह होवत सूचा॥ बिरथा
नाम बिना तनु अंध॥ मुखि
आवत ता कै दुरगंध। बिनु
सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ॥मेघ
बिना जिउ खेती जाइ॥ गोबिद
भजन बिनु ब्रिथे सभ काम॥ जिउ
किरपन के निरारथ दाम। धंनि धंनि
ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ॥

नानक ताकै बलि बलि जाउ । ६॥
रहत अवर कछु अवर कमावत ॥
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥
जाननहार प्रभू परबीन ॥
बाहरि भेख न काहु भीन ॥
अवर उपदेसै आपि न करै ॥
आवत जावत जनमै मरै ॥
जिसकै अंतरि बसै निरंकारु ॥
तिस की सीख तरै संसारु ॥ जो
तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक
उन जन चरन पराता ॥७॥ करउ
बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ अपना
कीआ आपहि मानै ॥ आपहि
आप आपि करत निबेरा ॥ किसै
दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥

उपाव सिआनप सगल ते रहत ।
सभु किछु जानै आतम की रहत ॥
जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥
थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥
सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥
निमख निमखजपि नानक हरी॥८॥५॥

सलोकु॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह
बिनसि जाइ अहंमेव ॥
नानक प्रभ सरणागती
करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥

असटपदी ॥

जिह प्रसादि छतीह अंमृत खाहि ।
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥

तिस कउ सिमरत परम गति पावहि॥
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि॥
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि॥
जिह प्रसादि गृह संगि सुख बसना॥
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना।
जिह प्रसादि रंग रस भोग।,
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग॥१॥
जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि॥
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि।
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै॥
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै॥
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै॥
मुखि ता को जसु रसन बखानै॥
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु॥
मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु॥

प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥
नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥
जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥
जिह प्रसादि तुझको न पहूचै ॥
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥
जिह प्रसादि पाई दुर्लभ देह ॥
नानक ता की भगति करेह ॥३॥
जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥

मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी॥
जिह प्रसादि बाग मिलख धना॥
राखु परोइ प्रभु अपुने मना॥
जिनि तेरी मन बनत बनाई॥
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई॥
तिसहि धिआइ जो एक अलखै॥
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै॥४॥
जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान॥
मन आठ पहर करि तिस का धिआन॥
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी॥
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी॥
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु॥
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति॥
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति॥

जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥
जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
जिह प्रसादि बोलहि अंमृत रसना ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥
जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥
जिह प्रसादि परमगति पावहि ॥
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ।
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ।
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥
जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥
जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥

रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥
तिसहि जाहनु मन सदा हजूरे ॥
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु॥
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥
जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥
नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥
आपि जपाए जपै सो नाउ ॥
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥
प्रभ सुप्रसंन बसैं मनि सोइ ॥
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥
सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥ जितु

जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥
नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥

सलोकु ॥

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
साध जना की अचरज कथा ॥ १ ॥

असटपदी ॥

साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥
साध संगि मलु सगली खोत ॥
साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥
साध संगि सभु होत निबेरा ॥
साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥

साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥
नानक साध की सोभा प्रभ
माहि समानी ॥ १ ॥
साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥
साध कै संगि सदा परफुलै ॥
साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥
साध संगि अंमृत रसु भुंचा ॥
साध संगि होइ सभ की रेन ॥
साध कै संगि मनोहर बैन ॥
साध कै संगि न कतहूं धावै ॥
साध संगि असथिति मनु पावै ॥
साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥
साध संगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥
साध संगि दुसमन सभि मीत ॥

साध कै संगि महा पुनीत ॥
साध संगि किस सिउ नही बैरु ॥
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥
साध कै संगि नाही को मंदा ॥
साध संगि जाने परमानंदा ॥
साध कै संगि नाही हउ तापु ॥
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥
आपे जानै साध वडाई ॥
नानक साध प्रभू बनिआई ॥३॥
साध कै संगि न कबहू धावै ॥
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥
साध संगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधू कै संगि अजरु सहै ॥
साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥
साधू कै संगि महलि पहूचै ॥

साध कै संगि दृड़ै सभि धरम ॥
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥
साध कै संगि पाए नाम निधानु ॥
नानक साधू कै कुरबान ॥ ४ ॥
साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥
साध संगि साजन मीत कुटंब निसतारै ॥
साधू कै संगि सो धनु पावै ॥
जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥
साध संगि धरमराइ करे सेवा ॥
साध कै संगि सोभा सुर देवा ॥
साधू कै संगि पाप पलाइन ॥
साध संगि अंमृत गुन गाइन ॥
साध कै संगि स्रब थान गंमि ॥
नानक साध कै संगि सफल जनंम ॥ ५ ॥
साध कै संगि नही कछु घाल ॥

दरसनु भेटत होत निहाल ॥
साध कै संगि कलूखत हरै ॥
साध कै संगि नरक परहरै ॥
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥
साध संगि बिछुरत हरि मेला ।
जो इछै सोई फलु पावै ॥
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥
पारब्रहमु साध रिद बसै ।
नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥
साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥
साध संगि हरि के गुन गाउ ॥
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥
साध संगि सरपर निसतरै ॥
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥

साध संगि भए आगिआकारी ॥
साध संगि गति भई हमारी ॥
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥
नानक साध भेटे संजोग ॥ ७ ॥
साध की महिमा बेद न जानहि ॥
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥
साध की उपमा रही भरपूरि ॥
साध की सोभा का नाही अंत ॥
साध की सोभा सदा बेअंत ॥
साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥
साध की सोभा साध बनिआई ॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥
८।७॥

सलोकु ॥

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥
नानक इह लछण
ब्रहमगिआनी होइ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

ब्रहमगिआनी सदा निरलेप ॥
जैसे जल महि कमल अलेप ॥
ब्रहमगिआनी सदा निरदोख ॥
जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥
ब्रहमगिआनी कै दृसटि समानि ॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥
ब्रहमगिआनी कै धीरजु एक ॥
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥
ब्रहमगिआनी का इहै गुनाउ ॥ नानक

जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥ १ ॥
ब्रहमगिआनी निरमल ते निरमला ॥
जैसे मैलु न लागै जला ॥
ब्रहमगिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥
ब्रहमगिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रहमगिआनी कै नाही अभिमान ॥
ब्रहमगिआनी ऊच ते ऊचा ॥
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥
ब्रहमगिआनी से जन भए ॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥
ब्रहमगिआनी सगल की रीना ॥
आतम रसु ब्रहमगिआनी चीना ॥
ब्रहमगिआनी की सभ ऊपर मइआ ॥
ब्रहमगिआनी ते कछु बुरा न भइआ ।

ब्रहमगिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रहमगिआनी की दृसटि अमृतु बरसी ॥
ब्रहमगिआनी बंधन ते मुकता ।
ब्रहमगिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रहमगिआनी का भोजनु गिआन ॥
नानक ब्रहमगिआनी का ब्रहम धिआनु ॥
३॥ ब्रहमगिआनी एक ऊपरि आस ॥
ब्रहमगिआनी का नही बिनास ॥
ब्रहमगिआनी कै गरीबी समाहा ॥
ब्रहमगिआनी परउपकार उमाहा ॥
ब्रहमगिआनी कै नाही धंधा ॥
ब्रहमगिआनी ले धावतु बंधा ॥
ब्रहमगिआनी कै होइ सु भला ॥
ब्रहमगिआनी सुफल फला । ब्रहम
गिआनी संगि सगल उधारु ॥ नानक

ब्रहमगिम्रानी जपै सगल संसारु ॥४॥
ब्रहमगिम्रानी कै एकै रंग ॥
ब्रहमगिम्रानी कै बसै प्रभु संगि ॥
ब्रहमगिम्रानी कै नामु म्राधारु ॥
ब्रहमगिम्रानी कैं नामु परवारु ॥
ब्रहमगिम्रानी सदा सद जागत ॥
ब्रहमगिआनी म्रहंबुधि तिम्रागत ॥
ब्रहमगिम्रानी कै मनि परमानंद ॥
ब्रहमगिम्रानी कै घरि सदा म्रनंद ॥
ब्रहमगिम्रानी सुख सहज निवास ॥
नानक ब्रहमगिम्रानी का नही बिनास।५
ब्रहमगिम्रानी ब्रहम का बेता ॥
ब्रहमगिम्रानी एक संगि हेता ॥
ब्रहमगिम्रानी कै होइ म्रचिंत ॥
ब्रहमगिम्रानी का निरमल मंत ॥

ब्रहमगिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
ब्रहमगिआनी का बड परतापि ॥
ब्रहमगिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥
ब्रहमगिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥
ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर ॥६॥
ब्रहमगिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रहमगिआनी कै सगल मन माहि ॥
ब्रहमगिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रहमगिआनी कउ सदा अदेसु । ब्रहम
गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥
ब्रहमगिआनी सरब का ठाकुरु ॥
ब्रहमगिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रहमगिआनी की गति ब्रहमगिआनी
जानै । ब्रहमगिआनी का अंतु न पारु ॥

नानक ब्रहमगिआनी कउ सदा नमसकारु ॥ ७ ॥
ब्रहमगिआनी सबसृसटि का करता ॥
ब्रहमगिआनी सद जीवै नही मरता ॥
ब्रहमगिआनी मुकति जुगति जीअका दाता॥ब्रहमगिआनी पूरनपुरखु बिधाता॥
ब्रहमगिआनी अनाथ का नाथु ॥
ब्रहमगिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥
ब्रहमगिआनी का सगल अकारु॥
ब्रहमगिआनी आपि निरंकारु॥
ब्रहमगिआनी की सोभाब्रहमगिआनी बनी॥ नानक ब्रहमगिआनी सरब का धनी॥८॥८॥

सलोकु॥

उरिधारै जो अंतरि नामु॥

सरब मै पेखै भगवानु ॥
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ।१।
असटपदी ॥
मिथिआ नाही रसना परस ॥
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥
साध की टहल संत संगि हेत ॥
करन न सुनै काहू की निंदा ॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥
गुरप्रसादि बिखिआ परहरै ॥
मन की बासना मन ते टरै ॥
इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ।१।
बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ।

बिसन की माइग्रा ते होइ भिंन ॥
करम करत होवै निहकरम ॥
तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥
काहू फल की इच्छा नही बाछै ॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
आपि दृड़ै अवरह नामु जपावै ॥
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै २।
भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥
सगल तिआगै दुसट का संगु ॥
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥
साध संगि पापा मलु खोवै ॥
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥

भगवंत की टहल करै नितनीति ॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥
हरि के चरन हिरदै बसावै ॥
नानक ऐसा भगउती भगवंतकउ पावै।३।
सो पंडतु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥
हरि की कथा हिरदै बसावै ॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
बेद पुरान सिमृति बूझै मूल ॥
सूखम महि जानै असथूलु ॥
चहु वरना कउ दे उपदेस ॥
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४।
बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥

चहु बरना महि जपै कोऊ नामु ॥
जो जो जपै तिस की गति होइ ॥
साध संगि पावै जनु कोइ ॥
करि किरपा अंतरि उरधारै ॥
पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥
सरब रोग का अउखदु नामु ॥
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ काहू
जुगति कितै न पाईऐ धरमि॥नानक
तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि॥५
जिसकै मनि पारब्रहम का निवासु॥
तिस का नामु सति रामदासु ॥
आतमरामु तिसु नदरी आइआ ॥
दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥
सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥
सो दासु दरगह परवानु ॥

अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥
तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥
सगल संगि आतम उदासु ॥
ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥ ६ ॥
प्रभ की आगिआ आतमहितावै ॥
जीवनमुकति सोऊ कहावै ॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥
तैसा अंमृतु तैसी बिखु खाटी ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥
जो वरताए साई जुगति ॥ नानक
ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥
पारब्रहम के सगले ठाउ ॥

जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ॥
आपे करन करावन जोगु ॥
प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥
लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥
जैसी मति देइ तैसा परगास ॥
पारब्रहमु करता अबिनास ॥
सदा सदा सदा दइआल ॥ सिमरि
सिमरि नानक भए निहाल॥८॥९॥

सलोकु ॥

उसतति करहि अनेक जन
अंतु न पारावार ॥
नानक रचना प्रभि रची
बहुबिधि अनिक प्रकार ॥१॥

असटपदी ॥

कई कोटि होए पूजारी ॥
कई कोटि आचार बिउहारी ॥
कई कोटि भए तीरथ वासी ॥
कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥
कई कोटि बेद के स्रोते ॥
कई कोटि तपीसुर होते ॥
कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥
कई कोटि भए अभिमानी ॥
कई कोटि अंध अगिआनी ॥
कई कोटि किरपन कठोर ॥
कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥

कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥
कई कोटि परदूखना करहि ॥
कई कोटि माइग्रा स्रम माहि ॥
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
नानक करते की जानै करता रचना॥२॥
कई कोटि सिध जती जोगी ॥
कई कोटि राजे रस भोगी ॥
कई कोटि पखी सरप उपाए ॥
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥
कई कोटि देस भू मंडल ॥
कई कोटि ससीग्रर सूर नख्यत्र ॥
कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र॥
सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥

नानक जिसु जिसु भावै
तिसु तिसु निसतारैं ॥ ३ ॥
कई कोटि राजस तामस सातक ॥
कई कोटि बेदपुरान सिमृति अरु सासत॥
कई कोटि कीए रतन समुंद ॥
कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥
कई कोटि कीए चिरजीवे ॥
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥
कई कोटि जख्य किनर पिसाच ॥
कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥
सभ ते नेरैं सभहू ते दूरि ॥ नानक
आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि॥४॥
कई कोटि पाताल के वासी ॥
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥
कई कोटि कीए धनवंत ॥
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥
जह जह भाणा तह तह राखे ॥
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥ ५ ॥
कई कोटि भए बैरागी ॥
राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥
आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥
पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥

जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥
कई कोटि खाणी अरु खंड ॥
कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥
कई कोटि होए अवतार ॥
कई जुगति कीनो बिसथार ॥
कई बार पसरिओ पासार ॥
सदा सदा इकु एकंकार ॥
कई कोटि कीने बहु भाति ॥
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥
ता का अंतु न जानै कोइ ॥
आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥
कई कोटि पारब्रहम के दास ॥
तिन होवत आतम परगास ॥
कई कोटि तत के बेते ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सदा निहारहि एको नेत्रे ॥
कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥
अमर भए सद सद ही जीवहि ॥
कई कोटि नाम गुन गावहि ॥
आतम रसि सुखि सहजि समावहि॥
अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥
नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥
८॥१०॥

सलोकु ॥

करण कारण प्रभु एकु है
दूसर नाही कोइ ॥
नानक तिसु बलिहारणै
जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥

असटपदी॥

करन करावन करनै जोगु ॥

जो तिसु भावै सोई होगु ॥
खिन महि थापि उथापनहारा ॥
अंतु नही किछु पारावारा ॥
हुकमे धारि अधर रहावै ॥
हुकमै उपजै हुकमि समावै ॥
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥
हुकमे अनिक रंग परकार ॥
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥
नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥
प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥
आपि करै आपन बीचारै ॥

दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥
जो भावै सो कार करावै ॥
नानक दृसटी अवरु न आवै ॥२॥
कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥
जो तिसु भावै सोई करावै ॥
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥
जे जानत आपन आप बचै ॥
भरमे भूला दहदिसि धावै ॥
निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥
नानक ते जन नामि मिलेइ ॥ ३ ॥
खिन महि नीच कीट कउ राज ॥

पारब्रहम गरीब निवाज ॥
जा का दृसटि कछू न आवै ॥
तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥
जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥
ता का लेखा न गनै जगदीस ॥
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥
घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥
अपनी बणत आपि बनाई ॥
नानक जीवै देखि बडाई ॥ ४ ॥
इसका बलु नाही इसु हाथ ॥
करन करावन सरब को नाथ ॥
आगिआकारी बपुरा जीउ ॥
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥
कबहू ऊच नीच महि बसै ॥
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥

कबहू निंद चिंद बिउहार ॥
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥
कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥
नानक आपि मिलावणहार ॥ ५ ॥
कबहू निरति करै बहु भाति ॥
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥
कबहू महा क्रोध विकराल ॥
कबहू सरब की होत रवाल ॥
कबहू होइ बहै बड राजा ॥
कबहू भेखारी नीच का साजा ॥
कबहू अपकीरति महि आवै ॥
कबहू भला भला कहावै ॥
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥
गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥ ६ ॥
कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥

कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥
कबहू तट तीरथ इसनान ॥
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥
जो तिसु भावै सोई होइ ॥
नानक दूजा अवरु न कोइ ॥ ७ ॥
कबहू साध संगति इहु पावै ॥
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥
अंतरि होइ गिआन परगासु ॥
उसु असथान का नही बिनासु ॥
मन तन नामि रते इक रंगि ॥
सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥

जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥
नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥

सलोकु ॥

सुखी बसै मसकीनीआ
आपु निवारि तले ॥
बडे बडे अहंकारीआ
नानक गरबि गले ॥ १ ॥

असटपदी ॥

जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥
सो नरकपाती होवत सुआनु ॥
जो जानै मै जोबनवंतु ॥
सो होवत बिसटा का जंतु ॥
आपस कउ करमवंतु कहावै ॥

जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥
धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥ करि
किरपा जिसकै हिरदै गरीबी बसावै ॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥ १ ॥
धनवंता होइ करि गरबावै ॥
तृण समानि कछु संगि न जावै ॥
बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥
पल भीतरि ताका होइ बिनास ॥
सभ ते आप जानै बलवंतु ॥
खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥
किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
धरमराइ तिसु करे खुआरी ॥
गुरप्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥
सो जनु नानक दरगह परवानु ॥ २ ॥

कोटि करम करै हउ धारे ॥
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥
आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥
सरब की रेन जा का मनु होइ ॥
कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥
जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥
जब इह जानै मै किछु करता ॥
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥
जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥

तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥
जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥
तब लगु धरमराइ देइ सजाइ ॥
प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥
गुरप्रसादि नानक हउ छूटै ॥ ४ ॥
सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
तृपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ बृथे सभ काजै ॥
नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥
बडभागी किसै परापति होइ ॥
करन करावन आपे आपि ॥
सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥

करन करावन करनैहारु ॥
इस कै हाथि कहा बीचारु ॥
जैसी दृसटि करे तैसा होइ ॥
आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥
जो किछु कीनो सु अपनैं रंगि ॥
सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥
बूझै देखै करै बिबेक ॥
आपहि एक आपहि अनेक ॥
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥
नानक सद ही रहिआ समाइ ॥ ६ ॥
आपि उपदेसै समझै आपि ॥
आपे रचिआ सभ कै साथि ॥
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥
उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥

थान थानंतरि एकै सोइ ॥
अपुने चलित आपि करणैहार ॥
कउतक करै रंग आपार ॥
मन महि आपि मन अपुने माहि ॥
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥
सति सति सति प्रभु सुआमी ॥
गुरपरसादि किनै वखिआनी ॥
सचु सचु सचु सभु कीना ॥
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥
भला भला भला तेरा रूप ॥
अति सुंदर अपार अनूप ॥
निरमल निरमल निरमल तेरीबाणी ॥
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥
नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥

सलोकु ॥

संत सरनि जो जनु परै
सो जनु उधरनहार ॥
संत की निंदा नानका
बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥

असटपदी ॥

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥
संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥
संत के हते कउ रखै न कोइ ॥
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥
संत कृपाल कृपा जे करै ॥

नानक संत संगि निंदकु भी तरै॥१॥
संत के दूखन ते मुखु भवै॥
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै॥
संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ॥
संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ॥
संत कै दूखनि त्रिसना महि जलै॥
संत कै दूखनि सभु को छलै॥
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ॥
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ॥
संत दोखी का थाउ को नाहि।नानक
संत भावै ता ओइ भी गति पाहि॥२॥
संत का निंदकु महा अतताई॥
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई॥
संत का निंदकु महा हतिआरा॥
संत का निंदकु परमेसुरि मारा॥

संत का निंदकु राज ते हीनु ॥
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥
संत के निंदक कउ सरब रोग ॥ संत
के निंदक कउ सदा बिजोग ॥ संत
की निंदा दोख महि दोखु । नानक संत
भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥
संत का दोखी सदा अपवितु ॥
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥
संत के दोखी कउ डानु लागै ॥
संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥
संत का दोखी महा अहंकारी ॥
संत का दोखी सदा बिकारी ॥
संत का दोखी जनमै मरै ॥
संत की दूखना सुख ते टरै ॥
संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥

नानक संत भावैं ता लए मिलाइ। ४॥
संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥
संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ॥
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥
संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु॥
नानक संत भावै ता लए उबारि॥५॥
संत का दोखी इउ बिललाइ ॥
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥
संत का दोखी भूखा नही राजै ॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥

संत का दोखी छुटै इकेला ।।
जिउ बूग्राड़ तिलु खेत माहि दुहेला ।।
संत का दोखी धरम ते रहत ।।
संत का दोखी सद मिथिग्रा कहत ।।
किरतु निंदक का धुरि ही पइग्रा ।।
नानक जो तिसु भावै सोई थिग्रा ।।६।।
संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ।।
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ।।
संत का दोखी सदा सहकाईऐ ।।
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ।।
संत के दोखी की पुजै न ग्रासा ।।
संत का दोखी उठि चलै निरासा ।।
संत कै दोखि न तृसटै कोइ ।।
जैसा भावै तैसा कोई होइ ।।
पइग्रा किरतु न मेटै कोइ ।।

नानक जानै सचा सोइ ॥ ७ ॥
सब घट तिस के ओहु करनैहारु ॥
सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥
प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥
सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥
जैसा करे तैसा को थीआ ॥
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥ जिसनो
कृपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥
बडभागी नानक जन सेइ । ८॥ १३ ॥

सलोकु ॥

तजहु सिआनप सुरिजनहु
सिमरहु हरि हरिराइ ॥
एक आस हरि मनि रखहु

नानक दूखु भरमु भउ जाइ ।१।।

ग्रसटपदी ।।

मानुख की टेक बृथी सभ जानु ।।
देवन कउ एकै भगवानु ।।
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ।।
बहुरि न तृसना लागै आइ ।।
मारै राखै एको आपि ।।
मानुख कै किछु नाही हाथि ।।
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ।।
तिसका नामु रखु कंठि परोइ ।।
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ।।
नानक बिघनु न लागै कोइ ।१।।
उसतति मन महि करि निरंकार ।।
करि मन मेरे सति बिउहार ।।
निरमल रसना अंमृतु पीउ ।।

सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥
साध संगि बिनसै सभ संगु ॥
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा॥२॥
बडभागी ते जन जग माहि ॥
सदा सदा हरि के गुन गाहि॥
राम नाम जो करहि बीचार ॥
से धनवंत गनी संसार ॥
मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥
सदा सदा जानहु ते सुखी ॥
एको एकु एकु पछानै ॥
इत उत की ओहु सोझी जानै ॥

नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ॥३॥
गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥
तिसकी जानहु तृसना बुझै ॥
साध संगि हरि हरि जसु कहत ॥
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥
अनदिनु कीरतन केवल बख्यानु ॥
गृहसत महि सोई निरबानु ॥
एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥
पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ।४॥
जिस कउ हरि प्रभ मनि चिति आवै॥
सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥

सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥
जैसा सा तैसा दृसटाइआ ॥
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥
सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥
जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥
नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥
आपन चलितु आप ही करै ॥
आवनु जावनु दृसटि अनदृसटि ॥
आगिआकारी धारी सभ सृसटि ॥
आपे आपि सगल महि आपि ॥
अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥
अबिनासी नाही किछु खंड ॥
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥

अलख अभेव पुरख परताप ॥
आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥
जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥
प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥
आपे मेलि लए किरपाल ॥
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥
उनकी सेवा सोई लागै ॥
जिसनो कृपा करहि बडभागै ॥
नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ नानक
तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥
जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥
सदा सदा बसै हरि संगि ॥
सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥

करणैहारु पछाणै सोइ ॥
प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥
जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥
जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥
ओइ सुखनिधान उनहू बनि आए ॥
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥
नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥

सलोकु ॥

सरब कला भरपूर प्रभ
बिरथा जाननहार ॥
जा कै सिमरनि उधरीऐ
नानक तिसु बलिहार ॥१॥

असटपदी ॥

टूटी गाढनहार गोपाल ॥
सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥

सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥
तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥
रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥
अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥
आपन कीआ कछू न होइ ॥
जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥
तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥
गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥
रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥
अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥
जे को होइ बहै दातारु ॥

तिसु देनहारु जानै गावारु ॥
जिसु गुरप्रसादि तूटं हउ रोगु ॥
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥ २ ॥
जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥
तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥
प्राणी गूर चरण लगतु निसतरै ॥
जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥
जिऊ महा उदिआन महि मारगु पावै॥
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै॥
तिन संतन की बाछउ धूरि ॥
नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥
मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥

दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥
जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥
भूला काहे फिरहि अजान ॥
कउन बसतु आई तेरै संग ॥
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥
राम नाम जपि हिरदे माहि ॥
नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥
जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥
लादि खेप संतह संगि चालु ॥
अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥
धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥

मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥
इहु वापारु विरला वापारै ॥
नानक ता कै सद बलिहारै ॥ ५ ॥
चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥
अरपि साध कउ अपना जीउ ॥
साध की धूरि करहु इसनानु ॥
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥
साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥
साध संगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
अनिक बिघन ते साधू राखै ॥
हरिगुन गाइ अंमृत रसु चाखै ॥
ओट गही संतह दरि आइआ ॥
सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥ ६ ॥
मिरतक कउ जीवालनहार ॥
भूखे कउ देवत अधार ॥

सरब निधान जा की द्रिसटी माहि ॥
पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥
सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥
जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥
सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥
करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥
नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥
जा कै मनि गुर की परतीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥
जा कै हिरदै एको होइ ॥
सचु करणी सचु ता की रहत ॥
सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥
साची द्रिसटि साचा आकारु ॥

सचु वरतै साचा पासारु ॥
पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥
नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥

सलोकु ॥

रूपु न रेख न रंगु किछु
त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
तिसहि बुझाए नानका
जिसु होवै सुप्रसंन ॥ १ ॥

असटपदी ॥

अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥
तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥
आपे बीना आपे दाना ॥
गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥

पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥
कृपा निधान दइग्राल बखसंद ॥
साध तेरे की चरनी पाउ ॥
नानक कै मनि इहु अनराउ ॥ १ ॥
मनसा पूरन सरना जोग ॥
जो करि पाइआ सोई होगु ॥
हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥
तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥
अनद रूप मंगल सद जा कै ॥
सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥
राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
तप महि तपीसरु गृहसत महि भोगी ॥
धिग्राइ धिग्राइ भगतह सुखु पाइआ ॥
नानक तिसु पुरख का
किनै अंतु न पाइआ ॥ २ ॥

जा की लीला की मिति नाहि ॥
सगल देव हारे अवगाहि ॥
पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥
जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥
तिहु गुण महि जाकउ भरमाए ॥
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥
ऊच नीच तिस के असथान ॥
जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥
नाना रूप नाना जाके रंग ॥
नाना भेख करहि इक रंग ॥
नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥
प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥
नाना चलित करे खिन माहि ॥

पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥
नाना विधि करि बनत बनाई ॥
अपनी कीमति आपे पाई ॥
सभ घट तिसके सभ तिस के ठाउ ॥
जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥
नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥
नाम के धारे सिमृति बेद पुरान ॥
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥
नाम के धारे आगास पाताल ॥
नाम के धारे सगल आकार ॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ।
नानक चउथे पद महि

सो जनु गति पाए ॥ ५ ॥
रूपु सति जा का सति असथानु ॥
पुरखु सति केवल परधानु ॥
करतूति सति सति जा की बाणी ॥
सति पुरख सभ माहि समाणी ॥
सति करमु जा की रचना सति ॥
मूलु सति सति उतपति ॥
सति करणी निरमल निरमली ॥
जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥
सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥
सति बचन साधू उपदेस ॥
सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥
सति निरति बूझै जे कोइ ॥
नामु जपत ताकी गति होइ ॥

आपि सति कीआ सभु सति ॥
आपे जानै अपनी मिति गति ।।
जिस की सृसटि सु करणैहारु ॥
अवर न बूझि करत बीचारु ॥
करते की मिति न जानै कीआ ॥
नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ॥७॥
बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥
जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥
प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥
गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥
ओइ दाते दुख काटनहार ।
जा कै संगि तरै संसार ॥
जन का सेवकु सो वडभागी ॥
जन कै संग एक लिव लागी ॥
गुन गोविद कीरतनु जनु गावै ॥

गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥
८॥१६॥

सलोकु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भि सचु
नानक होसी भि सचु ॥१॥

असटपदी ॥

चरन सति सति परसनहार ॥
पूजा सति सति सेवदार ॥
दरसनु सति सति पेखनहार ॥
नामु सति सति धिआवनहार ॥
आपि सति सति सभ धारी ॥
आपे गुण आपे गुणकारी ॥
सबदु सति सति प्रभु बकता ॥
सुरति सति सति जसु सुनता ॥

बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥
सति सरूप रिदै जिनि मानिआ ॥
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥
जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥
भै ते निरभउ होइ बसाना ॥
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥
बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥
ता कउ भिन न कहना जाई ॥
बूझै बूझनहारु बिबेक ॥
नाराइन मिले नानक एक ॥ २ ॥
ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥
ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥
ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥

ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥
ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥
प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥
सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥
सेवक की राखै निरंकारा ॥
सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥
नानक सो सेवकु
सासि सासि समारै ॥ ३ ॥
अपुने जन का परदा ढाकै ॥
अपने सेवक की सरपर राखै ॥
अपने दास कउ देइ वडाई ॥
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥
अपने सेवक की आपि पति राखै ॥
ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥
प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥
जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥
नानक सो सेवकु
दहदिसि प्रगटाइआ ॥ ४ ॥
नीकी कीरी महि कल राखै ॥
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥
जिस का सासु न काढत आपि ॥
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥
मानस जतन करत बहु भाति ॥
तिस के करतब बिरथे जाति ॥
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥
सरब जीआ का राखा सोइ ॥
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥
बारंबार बार प्रभु जपीऐ ॥

पी अंमृतु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥
नामो सुखु हरिनाम का संगु ॥
नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥
मन तन नामहि नामि समाने ॥
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥
कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥
बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥
करहि भगति आतम कै चाइ ॥
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥
जो होआ होवत सो जानै ॥
प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥

तिस की महिमा कउन बखानउ ॥
तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥
आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥
कहु नानक सेई जन पूरे ॥ ७ ॥
मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥
मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥
जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥
सो जनु सरब थोक का दाता ॥
तिसकी सरनि सरब सुख पावहि ॥
तिसकै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥
अवर सिआनप सगली छाडु ॥
तिसु जन की तू सेवा लागु ॥
आवनु जानु न होवी तेरा ॥
नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥
८॥ १७॥

सलोकु ॥

सति पुरखु जिनि जानिआ
सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै
नानक हरि गुन गाउ ॥१॥

असटपदी ॥

सतिगुर सिख की करै प्रतिपाल ॥
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
गुरबचनी हरि नामु उचरै ॥
सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥
सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
गुर का सिखु वडभागी हे ॥
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥

नानक सतिगुरु सिख कउ
जीअ नालि समारै ॥ १ ॥
गुर कै गृहि सेवकु जो रहै ॥
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥
आपस कउ करि कछु न जनावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥
मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥
तिसु सेवक के कारज रासि ॥
सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥
अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥
बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥

अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥
सरब निधान जीअ का दाता ॥
आठ पहर पारब्रहम रंगिराता ॥
ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥
सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥
परसत चरन गति निरमल रीति ॥
भेटत संगि राम गुन रवे ॥
पारब्रहम की दरगह गवे ॥
सुनि करि बचन करन आघाने ॥
मनि संतोखु आतम पतीआने ॥
पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥
अमृत द्रिसटि पेखै होइ संत ॥

गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥
नानक जिसु भावै
तिसु लए मिलाए ॥ ४ ॥
जिहबा एक उसतति अनेक ॥
सति पुरख पूरन बिबेक ॥
काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥
अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥
निराहार निरवैर सुखदाई ॥
ताकी कीमति किनै न पाई ॥
अनिक भगत बंदन नित करहि ॥
चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥
सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥
नानक जिसु प्रसादिऐसाप्रभु जपने। ५ ।
इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥
अंमृतु पीवै अमरु सो होइ ॥

उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥
जा कै मनि प्रगटे गुन तास ॥
आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥
मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥
मन महि राखै हरि हरि एकु ॥
अंधकार दीपक परगासे ॥
नानक भरम मोह दुख तह ते नासे॥६॥
तपति माहि ठाढि वरताई ॥
अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥
जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥
साधू के पूरन उपदेसे ॥
भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥
सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥
जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥

साध संगि जपि नामु मुरारी ॥
थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥
निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥
कलाधारि जिनि सगली मोही ॥
अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥
अपुनी कीमति आपे पाए ॥
हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥
ओति पोति रविआ रूप रंग ॥
भए प्रगास साध कै संग ॥
रचि रचना अपनी कल धारी ॥
अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥

सलोकु ॥

साथि न चालै बिनु भजन

बिखिआ सगली छारु ॥
हरि हरि नामु कमावना
नानक इहु धनु सारु ॥१॥

असटपदी ॥

संत जना मिलि करहु बीचारु ॥
एकु सिमरि नाम आधारु ॥
अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥
चरन कमल रिद महि उरिधारहु ॥
करन कारन सो प्रभु समरथु ॥
दृड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥
इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥
संत जना का निरमल मंत ॥
एक आस राखहु मन माहि ॥
सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥
जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि॥

सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥
जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥
सो सुखु साधू संगि परीति ॥
जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ।
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥
सरबनिधान महि हरिनामु निधानु ।
जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥
मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥
दहदिसि धावत आवै ठाइ ॥
ताकउ बिघनु न लागै कोइ ॥
जाकै रिदै बसै हरि सोइ ॥
कलि ताती ठांढा हरिनाउ ॥
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥

भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥
भगति भाइ आतम परगास ॥
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥
ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥
जनमि मरै सो काचो काचा ॥
आवागवनु मिटै प्रभ सेव ॥
आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥
इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥
अनिक उपाव न छूटनहारे ॥
सिम्रिति सासत बेद बीचारे ॥
हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥
संगि न चालसि तेरै धना ॥

तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥
सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥
राज रंग माइआ बिसथार ॥
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥
असु हसती रथ असवारी ॥
झूठा डंफु झूठु पासारी ।
जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ।
नामु बिसारि नानक पछुताना ।।५।
गुर की मति तूं लेहि इआने ॥
भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥
हरि की भगति करहु मन मीत ॥
निरमल होइ तुमारो चीत ॥
चरन कमल राखहु मन माहि ॥
जनम जनम के किलबिख जाहि ॥

आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥
सारभूत सति हरि को नाउ ॥
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥
गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥
होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥
सासि ग्रासि हरिनामु समालि ॥
छाडि सिआनप सगली मना ॥
साध संगि पावहि सचु धना ॥
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥
सरब निरंतरि एको देखु ॥
कहु नानक जाकै मसतकि लेखु ॥७॥
एको जपि एको सालाहि ॥

एकु सिमरि एको मन आहि ॥
एकस के गुन गाउ अनंत ॥
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥
एको एकु एकु हरि आपि ॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥
अनिक बिसथार एक ते भए ॥
एकु अराधि पराछत गए ।
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता॥८॥१९॥

सलोकु ॥

फिरत फिरत प्रभ आइआ
परिआ तउ सरनाइ ॥
नानक की प्रभ बेनती
अपनी भगती लाइ ॥१॥

असटपदी ॥

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
करि किरपा देवहु हरिनामु ॥
साध जना की मागउ धूरि ॥
पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥
एक ओट एको आधारु ॥
नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥
प्रभ की दृसटि महा सुखु होइ ॥
हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥
जिन चखिआ से जन तृपताने ॥
पूरन पुरख नही डोलाने ॥

सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥
उपजै चाउ साध कै संगि ॥
परे सरनि आन सभ तिआगि ॥
अंतरि प्रगास अनदिनु लिवलागि ॥
वडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥
नानक नामि रते सुखु होइ ॥ २ ॥
सेवक की मनसा पूरी भई ॥
सतिगुर ते निरमल मति लई ।
जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥
सेवकु कीनो सदा निहालु ॥
बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥
जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥
इछ पुनी सरधा सभ पूरी॥
रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥
जिसका सा तिनि लीआ मिलाइ ॥

नानक भगती नामि समाइ ॥ ३ ॥
सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥
सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥
सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ।
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥
सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै॥
गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥
सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥
जनम जनम का टूटा गाढै ॥
गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ। ४॥
साजन संत करहु इहु कामु ॥
आन तिआगि जपहु हरिनामु ॥
सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥

भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥
बिनु भगती तनु होसी छारु ॥
सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥
बूडत जात पाए बिस्रामु ॥
सगल दूख का होवत नासु ॥
नानक नामु जपहु गुनतासु ॥ ५ ॥
उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥
मन तन अंतरि इही सुआउ ॥
नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥
मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥
भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥
बिरला कोऊ पावै संगु ॥
एक बसतु दीजै करि मइआ ॥
गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥
ता की उपमा कही न जाइ ॥

नानक रहिआ सरब समाइ ॥ ६ ॥
प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥
भगति वछल सदा किरपाल ॥
अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥
सरब घटा करत प्रतिपाल ॥
आदि पुरख कारण करतार ॥
भगत जना के प्रान अधार ॥
जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥
भगत भाइ लावै मन हीत ॥
हम निरगुनीआर नीच अजान ॥
नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥ ७ ॥
सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥
एक निमख हरि के गुन गाए ॥
अनिक राज भोग बडिआई ॥
हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥

बहु भोजन कापर संगीत ॥
रसना जपती हरि हरि नीत ॥
भली सुकरनी सोभा धनवंत ॥
हिरदै बसे पूरन गुरमंत ॥
साध संगि प्रभ देहु निवास ॥
सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥

सलोकु ॥

सरगुन निरगुन निरंकार
सुंन समाधी आपि ॥
आपन कीआ नानका
आपे ही फिरि जापि ॥१॥

असटपदी ॥

जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥
पाप पुंन तब कह ते होता ॥
जब धारी आपन सुंन समाधि ॥

तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥
जब इसका बरनु चिहनु न जापत ॥
तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥
जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥
तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥
आपन खेलु आपि वरतीजा ॥
नानक करनैहारु न दूजा ॥ १ ॥
जब होवत प्रभ केवल धनी ॥
तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥
जब एकहि हरि अगम अपार ॥
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥
जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥

आपन चलित आपि करनैहार ॥
नानक ठाकुर अगम अपार ॥ २ ॥
अबिनासी सुख आपन आसन ॥
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥
जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥
तब चित्रगुपत किसु पूछत लेखा ॥
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥
आपन आप आप ही अचरजा ॥
नानक आपन रूप आपही उपरजा ॥ ३ ॥
जह निरमल पुरखु पुरखपति होता ॥
तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥
जह निरंजन निरंकार निरबान ॥

तह कउन कउ मान कउन अभिमान॥
जह सरूप केवल जगदीस॥
तह छल छिद्र लगत कहु कीस॥
जह जोति सरूपी जोति संगि समावै॥
तहि किसहि भूख कवनु तृपतावै॥
करन करावन करनैहारु॥
नानक करते का नाहि सुमारु॥ ४॥
जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई॥
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई॥
जह सरब कला आपहि परबीन॥
तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन॥
जब आपन आपु आपि उरिधारै॥
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै॥
जह आपन ऊच आपन आपि नेरा॥
तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा॥

बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥
नानक अपनी गति जानहु आपि ।५॥
जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥
ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥
आपस कउ आपहि आदेसु ॥
तिहु गुण का नाही परवेसु ॥
जह एकहि एक एक भगवंता ॥
तह कउनु अचितु किसु लागै चिंता ॥
जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥
बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥
नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥
जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥
तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥
पापु पुंनु तह भई कहावत ॥

कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥
आल जाल माइआ जंजाल ॥
हउमै मोह भरम भै भार ॥
दूख सूख मान अपमान ॥
अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥
आपन खेलु आपि करि देखै ।
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥ ७ ।
जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥
जह पसरै पासारु संत परतापि ॥
दुहू पाख का आपहि धनी ॥
उनकी सोभा उनहू बनी ॥
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥
आपहि रस भोगत निरजोग ॥
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥

बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥
८ ॥ २१ ॥

सलोकु ॥

जीअ जंत के ठाकुरा
आपे वरतणहार ॥
नानक एको पसरिआ
दूजा कह दृसटार ॥ १ ॥

असटपदी ॥

आपि कथै आपि सुननैहारु ॥
आपहि एकु आपि बिसथारु ॥
जा तिसु भावै ता सृसटि उपाए ॥
आपनै भाणै लए समाए ॥
तुम ते भिंन नही किछु होइ ॥
आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥

जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥
सचु नामु सोई जनु पाए ॥
सो समदरसी तत का बेता ॥
नानक सगल सृसटि का जेता ॥ १ ॥
जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥
दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥
जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥
सो मूआ जिसु मनहु विसारै ॥
तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥
सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥
जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥
गुननिधान बेअंत अपार ॥
नानक दास सदा बलिहार ॥ २ ॥
पूरनि पूरि रहे दइआल ॥

सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
अपने करतब जानै आपि ॥
अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥
प्रतिपाले जीअन बहु भाति ॥
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाए ॥
भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥
मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥
करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥
जनु लागा हरि एकै नाइ ॥
तिसकी आस न बिरथी जाइ ॥
सेवक कउ सेवा बनिआई ॥
हुकमु बूझि परमपदु पाई ॥
इसते ऊपरि नही बीचारु ॥
जा कै मनि वसिआ निरंकारु ॥

बंधन तोरि भए निरवैर ॥
अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥
इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥
नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥ ४ ।
साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥
राम नाम ततु करहु बीचारु ॥
द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥
अंमृत बचन हरि के गुन गाउ ॥
प्रान तरन का इहै सुआउ ॥
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥
मन इछे नानक फल पावहु ॥ ५ ॥

हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
रामनामु अंतरि उरिधारि ॥
पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥
सचु वापारु करहु वापारी ॥
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥
एका टेक रखहु मन माहि ॥
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥ ६ ॥
तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥
उबरै राखनहारु धिआइ ॥
निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥

नामु जपत मनि होवत सूख ॥
चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥
सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥
नानक ता के कारज पूरा ॥ ७ ॥
मति पूरी अंमृतु जाकी दृसटि ॥
दरसनु पेखत उधरत सृसटि ॥
चरन कमल जा के अनूप ॥
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥
धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥
अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥
जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥
ता कै निकटि न आवत कालु ॥
अमर भए अमरापदु पाइआ ॥

साध संगि नानक हरि धिआइआ ॥
८ ॥ २२ ॥

सलोकु ॥

गिआन अंजनु गुरि दीआ
अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु ॥१॥

असटपदी ॥

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ॥
नामु प्रभू का लागा मीठा ॥
सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥
अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥
नउनिधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥
देही महि इस का बिस्रामु ॥
सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥

कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥
तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥
नानक तिसु जन सोझी पाए ॥ १ ॥
सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥
धरनि माहि आकास पइआल ॥
सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥
बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥
जैसी आगिया तैसा करमु ॥
पउण पाणी बैसंतर माहि ॥
चारि कुंट दहदिसे समाहि ॥
तिस ते भिन नही को ठाउ ॥

गुरप्रसादि नानक सुखु पाउ ॥ २ ॥
बेद पुरान सिमृति महि देख ॥
ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥
बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥
आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥
सरब कला करि खेलै खेल ॥
मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥
सरब जोति महि जा की जोति ॥
धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥
गुर परसादि भरम का नासु ॥
नानक तिन महि एहु बिसासु ॥ ३ ॥
संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥

संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥
संत जना सुनहि सुभ बचन ॥
सरब बिआपी राम संगि रचन ॥
जिनि जाता तिसकी इह रहत ॥
सति बचन साधू सभि कहत ॥
जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥
करन करावनहारु प्रभु जानैं ॥
अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥
नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥
तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥

तिसु भावै ता एकंकारु ॥
अनिक कला लखी नह जाइ ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥
आपे आपि आप भरपूरि ॥
अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥
नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥
सरब भूत आपि वरतारा ॥
सरब नैन आपि पेखनहारा ॥
सगल समग्री जाका तना ॥
आपन जसु आप ही सुना ॥
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥

आगिआकारी कीनी माइआ ॥
सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥
जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥
नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥
इसते होइ सु नाही बुरा ॥
ओरै कहहु किनै कछु करा ॥
आपि भला करतूति अति नीकी ॥
आपे जानै अपने जीकी ॥
आपि साचु धारी सभ साचु ॥
ओति पोति आपन संग राचु ॥
ताकी गति मिति कही न जाइ ॥

दूसर होइ त सोझी पाइ ॥
तिस का कीआ सभु परवानु ॥
गुरप्रसादि नानक इहु जानु ॥ ७ ॥
जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥
आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥
ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥
धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥
जन आवन का इहै सुआउ ॥
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥

नानक तिसु जन कउ सदा
नमसकारु ॥ ८ ॥ २३ ॥

सलोकु ॥

पूरा प्रभु आराधिआ
पूरा जा का नाउ ॥
नानक पूरा पाइआ
पूरे के गुन गाउ ॥ १ ॥

असटपदी ॥

पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥
पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥
मन अंतर की उतरै चिंद ॥

स्वास अनित तिआगहु तरंग ॥
संत जना की धूरि मन मंग ॥
आपु छोडि बेनती करहु ॥
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥
हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥
नानक गुर पूरे नमसकार ॥ १ ॥
खेम कुसल सहज आनंद ॥
साधसंगि भजु परमानंद ॥
नरक निवारि उधारहु जीउ ॥
गुन गोबिंद अंमृत रसु पीउ ॥
चिति चितवहु नाराइण एक ॥
एक रूप जा के रंग अनेक ॥

गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥
सिमरि सिमरि नामु बारंबार ॥
नानक जीअ का इहे अधार ॥ २ ॥
उतम सलोक साध के बचन ॥
अमुलीक लाल एहि रतन ॥
सुनत कमावत होत उधार ॥
आपि तरै लोकह निसतार ॥
सफल जीवनु सफलु ताका संगु ॥
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥
जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥

प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥
नानक उधरे तिन कै साथे ॥ ३ ॥
सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥
अंमृत नामु साध संगि लैन ॥
सुप्रसंन भए गुरदेव ॥
पूरन होई सेवक की सेव ॥
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥
रामनाम सुनि रसना कहते ॥
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥
नानक निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
सावधान एकागर चीत ॥
सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥
जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥
सरब इछा ताकी पूरन होइ ॥
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥
सभ ते ऊच पाए असथानु ॥
बहुरि न होवै आवन जानु ॥
हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥
नानक जिसहि परापति होइ ॥ ५ ॥
खेम सांति रिधि नव निधि ॥
बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥

धिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥
गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥
चारि पदारथ कमल प्रगास ॥
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥
समदरसी एक द्रिसटेता ॥
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥
इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥
सभ जुग महि ताकी गति होइ ॥
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥
सिमृति सासत्र वेद बखाणी ॥

सगल मतांत केवल हरिनाम ॥
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥
संत कृपा ते जम ते छुटै ॥
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥
साध सरणि नानक ते आए ॥ ७ ॥
जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
जनम मरन ताका दूखु निवारै ॥
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥
निरमल सोभा अंमृत ताकी बानी ॥
एकु नामु मन माहि समानी ॥

दूख रोग बिनसे भै भरम ॥
साध नाम निरमल ताके करम ॥
सभ ते ऊच ताकी सोभा बनी ॥
नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥
८ ॥ २४ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बसंत की वार महलु ५

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु तृणु त्रिभवणु मउलिआ अंमृत फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु

सिमरै एकु नामु फिरि बहूड़ि न धाई ॥ १ ॥ पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम के कउनु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि

सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुनावै ॥ ३॥ १॥

---

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

लावां

सूही महला ४ ॥

हरि पहिलड़ी लाव परविरती
करम दृड़ाइआ बलिराम जीउ ॥
बाणी ब्रहमा वेदु धरमु दृड़हु
पाप तजाइआ बलिराम जीउ ॥
धरमु दृड़हु हरिनामु धिआवहु

सिमृति नामु दृड़ाइआ ॥
सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि
किल विख पाप गवाइआ ॥
सहज अनंदु होआ वडभागी मनि
हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु
कहै नानकु लाव पहिली आरंभु
काजु रचाइआ ॥ १ ॥ हरि दूजड़ी
लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ
बलिराम जीउ ॥ निरभउ भै मनु
होइ हउमै मैलु गवाइआ
बलिराम जीउ ॥ निरमलु भउ
पाइआ हरि गुण गाइआ हरि

वेखै रामु हदूरे ॥ हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥ २ ॥ हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलिराम जीउ ॥ संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलिराम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि

बोली हरि बाणी ॥ संत जना
वडभागी पाइआ हरि कथीऐ
अकथ कहाणी । हिरदै हरि हरि
हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ
मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु
बोले तीजी लावैं हरि उपजै मनि
बैरागु जीउ ॥ ३ ॥ हरि चउथड़ी
लाव मनि सहजु भइआ हरि
पाइआ बलिराम जीउ ॥ गुरमुखि
मिलिआ सुभाए हरि मनि तनि
मीठा लाइआ बलिराम जीउ ॥
हरि मीठा लाइआ मेरै प्रभ

भाइआ अनदिनु हरि लिवलाई ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥ ४ ॥ २ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
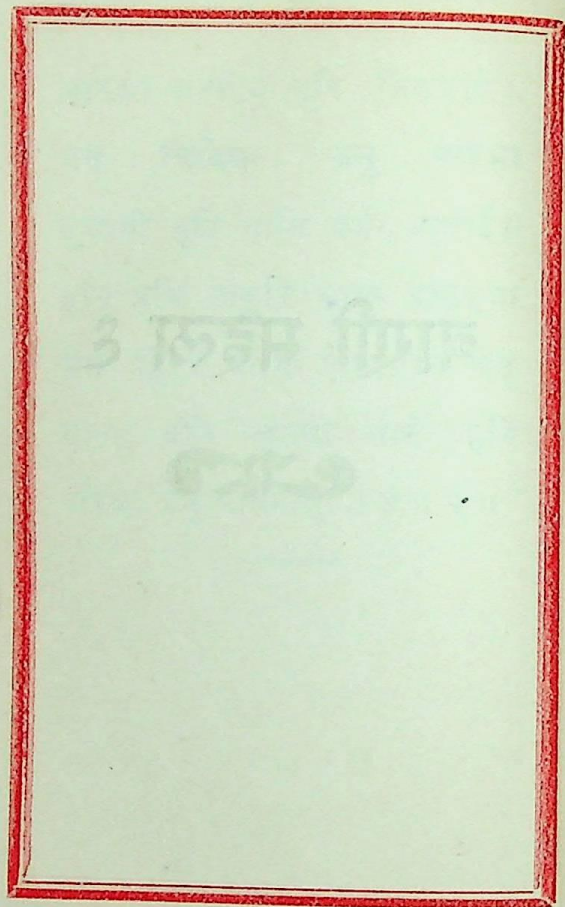
१ ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु गउड़ी महला ६

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की
ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ॥
सुखु दुखु दोनो सम करि जानै
अउरु मानु अपमाना ॥
हरख सोग ते रहै अतीता
तिनि जगि ततु पछाना ॥ १ ॥
उसतति निंदा दोऊ तिआगै
खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है
किनहूं गुरमुखि जाना ॥ २ ॥ १ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

साधो रचना राम बनाई ॥
इकि बिनसै इक असथिरु मानै
अचरजु लखिओ न जाई ॥१॥रहाउ॥
काम क्रोध मोह बसि प्रानी
हरि मूरति बिसराई ॥
झूठा तनु साचा करि मानिओ
जिउ सुपना रैनाई ॥ १ ॥
जो दीसै सो सगल बिनासै
जिउ बादर की छाई ॥
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ
रहिओ राम सरनाई ॥ २ ॥ २ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै

कहु कैसे गुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ।
पूत मीत माइआ ममता सिउ
इह बिधि आपु बंधावै ॥
मृग तृसना जिउ झूठो इह जगि
देखि तासि उठि धावै ॥ १ ॥
भुगति मुकति का कारनु सुआमी
मूढ़ ताहि बिसरावै ॥
जन नानक कोटन मै कोऊ
भजनु राम को पावै ॥ २ ॥ ३ ॥

पउड़ी महला ९ ।

साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥
चंचल तृसना संगि बसतु है
या ते थिरु न रहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कठन क्रोध घट ही के भीतरि
जिह सुधि सभ बिसराई ॥

रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना
ता सिउ कछु न बसाई ॥ १ ॥
जोगी जतन करत सभ हारे
गुनी रहे गुन गाई ॥ २ ॥ ४ ॥
जन नानक हरि भए दइआला
तउ सभ बिधि बनिआई ॥२॥४॥

गउड़ी महला ९ ॥

साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥
मानस जनमु अमोलकु पाइओ
बिरथा काहि गवावउ ॥१। रहाउ ॥
पतित पुनीत दीन बंध हरि
सरनि ताहि तुम आवउ ॥
गज को त्रास मिटिओ जिह सिमरत
तुम काहे बिसरावउ ॥ १ ॥
तजि अभिमान मोह माइआ फुनि

भजन राम चितु लावउ ॥
नानक कहत मुकति पंथ इहु
गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥ २ ॥ ५ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥
बेद पुरान साध मग सुनि करि
निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाउ॥
दुरलभ देह पाइ मानस की
बिरथा जनमु सिरावै ॥
माइआ मोह महा संकट बन
ता सिउ रुच उपजावै ॥ १ ॥
अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु
ता सिउ नेहु न लावै॥
नानक मुकति ताहि तुम मानहु
जिह घटि रामु समावै ॥ २ ॥ ६ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

साधो राम सरनि बिसरामा ॥
बेद पुरान पढ़े को इह गुन
सिमरे हरि को नामा ॥१॥ रहाउ ॥
लोभ मोह माइआ ममता फुनि
अउ बिखअन की सेवा ॥
हरख सोग परसै जिह नाहनि
सो मूरति है देवा ॥ १ ॥
सुरग नरक अंमृतु बिखु ए सब
तिउ कंचन अरु पैसा ॥
उसतति निंदा ए सम जा कै
लोभु मोहु फुनि तैसा ॥ २ ॥
दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि
तिह तुम जानउ गिआनी ॥
नानक मुकति ताहि तुम मानउ

इह बिधि को जो प्रानी ॥ ३ ॥ ७ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥
अहिनिसि अउध घटै नही जानै
भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥रहाउ॥
जो तनु तै अपनो करि मानिओ
अरु सुन्दर गृह नारी ॥
इन मै कछु तेरो रे नाहनि
देखो सोच बिचारी ॥ १ ॥
रतन जनमु अपनो तै हारिओ
गोबिंद गति नही जानी ॥
निमख न लीन भइओ चरनन सिउ
बिरथा अउध सिरानी ॥ २ ॥
कहु नानक सोई नरु सुखीआ
राम नाम गुन गावै ॥

अउर सगल जगु माइआ मोहिआ
निरभै पदु नही पावै ॥ ३ ॥ ८ ॥

गउड़ी महला ९ ॥

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥
दीन दइआल सगल भै भंजन
सरनि ताहि तुम परु रे ॥१॥रहाउ॥
बेद पुरान जास गुन गावत
ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥
पावन नामु जगति मै हरि को
सिमरि सिमरि कसमल सभु हरु रे॥१॥
मानस देह बहुरि नह पावै
कछु उपाउ मुकति का करु रे ॥
नानक कहत गाइ करुनामै
भव सागर कै पारि उतरु रे ॥
॥ २ ॥ ९ ॥ २५१ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु आसा महला ६ ॥

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥
लोभि ग्रसिओ दसहू दिस धावत
आसा लागिओ धन की ॥ १ रहाउ ॥
सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत
सेव करत जन जन की ॥
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत
नह सुध राम भजन की ॥ १ ॥
मानस जनम अकारथ खोवत
लाज न लोक हसन की ॥
नानक हरि जसु किउ नही गावत
कुमति बिनासै तन की ॥
२ ॥ १ ॥ २३३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु देवगंधारी महला ९ ॥

यह मनु नैक न कहिओ करै ॥
सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी
दुरमति ते न टरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मदि माइआ कै भइओ बावरो
हरि जसु नहि उचरै ।
करि परपंचु जगत कउ डहकै
अपनो उदरु भरै ॥ १ ॥
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो
कहिओ न कान धरै ॥
कहु नानक भजु रामनाम नित
जाते काजु सरै ॥ २ ॥ १ ॥

देवगंधारी महला ९ ॥
सभि किछु जीवत को बिवहार ॥
मात पिता भाई सुत बंधप
अरु फुनि गृह की नारि ॥१॥ रहाउ॥
तन ते प्रान होत जब निआरे
टेरत प्रेत पुकार ॥
आध घरी कोऊ नहि राखै
घरि ते देत निकारि ॥ १ ॥
मृग तृसना जिउ जग रचना
यह देखहु रिदै बिचारि ॥
कहु नानक भजु रामनाम नित
जा ते होत उधार ॥ २ ॥ २ ॥
देवगंधारी महला ९ ॥
जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे

किआ दारा किआ मीत ॥१॥रहाउ॥
मेरउ मेरउ सभै कहत है
हित सिउ बाधिओ चीत ॥
अंति काल संगी नह कोऊ
इह अचरज है रीति ॥ १ ॥
मन मूरख अजहू नह समझत
सिख दै हारिओ नीत ॥
नानक भउजलु पारि परै
जउ गावै प्रभ के गीत ॥
२ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ३८ ॥ ॥ ४७ ॥

१ ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु बिहागड़ा महला ९ ॥

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥
जोगी जती तपी पचि हारे

अरु बहु लोग सिग्राने ॥ १ ॥ रहाउ ॥
छिन महि राउ रंक कउ करई
राउ रंक करि डारे ॥
रीते भरे, भरे सखनावैं
यह ता को बिवहारे ॥ १ ॥
अपनी माइआ आपि पसारी
आपहि देखनहारा ॥
नाना रूपु धरे बहु रंगी
सभ ते रहै निआरा ॥ २ ॥
अगनत अपारु अलख निरंजन
जिह सभ जगु भरमाइओ ॥
सगल भरम तजि नानक प्राणी
चरनि ताहि चितु लाइओ ॥
३ ॥ १ ॥ २ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सोरठ महला ६ ॥

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु
गाउ रसना गीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥
करि साध संगति सिमरु माधो
होहि पतित पुनीत ॥
कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै
मुखु पसारें मीत ॥ १ ॥
आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है
समझि राखउ चीति ॥
कहै नानकु रामु भजि लै
जात अउसरु बीति ॥ २ ॥ १ ॥

सोरठि महला ९ ॥

मन की मन ही माहि रही ॥
ना हरि भजे न तीरथि सेवे
चोटी कालि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥
दारा मीत पूत रथ संपति
धन पूरन सभ मही ॥
अवर सगल मिथिआ ए जानउ
भजनु राम को सही ॥ १ ॥
फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ
मानस देह लही ॥
नानक कहत मिलन की बरीआ
सिमरत कहा नही ॥ २ ॥ २ ॥

सोरठि महला ९ ॥

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥
पर दारा निंदिआ रस रचिओ

राम भगति नही कीनी ॥१॥ रहाउ॥
मुकति पंथु जानिओ तै नाहिन
धन जोरन कउ धाइआ ॥
अंति संग काहू नही दीना
बिरथा आपु बंधाइआ ॥ १ ॥
ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ
नह उपजिओ कछु गिआना ॥
घटि ही माहि निरंजनु तेरै
तै खोजत उदिआना । २ ॥
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ
असथिर मति नही पाई ॥
मानस देह पाइ पद हरि भजु
नानक बात बताई ॥ ३ ॥ ३ ॥

सोरठि महला ९ ॥

मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥

जिह सिमरत गनका सी उधरी
ता को जसु उरधारो ।'१।। रहाउ ।।
अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि
अरु निरभै पदु पाइआ ।।
दुख हरता इह बिधि को सुआमी
तै काहे बिसराइआ । १ ।।
जब ही सरनि गही कृपा निधि
गज गराह ते छूटा ।।
महमा नाम कहा लउ बरनउ
राम कहत बंधन तिह तूटा ।। २ ।।
अजामलु पापी जगु जाने
निमख माहि निसतारा ।।
नानक कहत चेत चिंतामनि
तै भी उतरहि पारा । ३ ।। ४ ।।

सोरठि महला ९ ॥

प्रानी कउनु उपाउ करै ।
जा ते भगति राम की पावै
जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ ॥
कउनु करम विद्या कहु कैसी
धरमु कउनु फुनि करई ।
कउनु नामु गुर जा कै सिमरै
भव सागर कउ तरई॥ १ ॥
कल मै एकु नामु कृपा निधि
जाहि जपै गति पावै ॥
अउर धरम ता कै समि नाहनि
इह बिधि वेदु बतावै । २ ॥
सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी
जा कउ कहत गुसाई ॥
सो तुम ही महि बसै निरंतरि

नानक दरपनि निआई ।।३।।५।।

सोरठि महला ९ ।।

माई मै किह बिधि लखउ गुसाई ।।
महा मोह अज्ञानि तिमरि मो
मनु रहिओ उरझाई ।।१।।रहाउ।।
सगल जनम भरम ही भरम खोइओ
नह असथिरु मति पाई ।।
बिखिआ सकत रहिओ निस बासुर
नह छूटो अधमाई ।।१।।
साधसंगु कबहू नही कीना
नह कीरति प्रभ गाई ।।
जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु
राखि लेहु सरनाई ।।२।।६।।

सोरठि महला ९ ।।

माई मन मेरो बसि नाहि ।।

निस बासुर बिखिग्रन कउ धावत
किहि बिधि रोकउ ताहि ।।१।।रहाउ।।
बेद पुरान सिमृति के मति सुनि
निमख न होए बसावै ।।
पर धन पर दारा सिउ रचिग्रो
विरथा जनमु सिरावै ।।१।।
मदि माइग्रा कै भइग्रो बावरो
सूझत नह कछु गिग्राना ।।
घट ही भीतरि बसत निरंजनु
ता को मरमु न जाना ।। २ ।।
जब ही सरनि साध की ग्राइग्रो
दुरमति सगल बिनासी ।।
तब नानक चेतिग्रो चिंतामनि
काटी जम की फासी ।। ३ ।। ७ ।।

सोरठि महला ९ ॥

रे नर इह साची जीअ धारि ॥
सगल जगतु है जैसे सुपना
बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥
बारू भीति बनाई रचि पचि
रहत नही दिन चारि ॥
तैसे ही इह सुख माइआ के
उरझिओ कहा गवार ॥ १ ॥
अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि
भजि ले नामु मुरारि ॥
कहु नानक निज मतु साधन कउ
भाखिओ तोहि पुकारि ॥२॥८॥

सोरठि महला ९ ॥

इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥
सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ

दुख मै संगि न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

दारा मीत पूत सनबंधी
सगरे धन सिउ लागे ।
जब ही निरधन देखिओ नर कउ
संगु छाडि सभ भागे ॥ १ ॥

कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ
इन सिउ नेहु लगाइओ ।
दीना नाथ सकल भै भंजन
जसु ता को बिसराइओ ॥२॥

सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ
बहुतु जतनु मै कीनउ ॥
नानक लाज बिरद की राखहु
नामु तुहारउ लीनउ ॥ ३ ॥ ९ ॥

सोरठि महला ९ ॥

मन रे गहिओ न गुरु उपदेसु ॥

कहा भइस्रो जउ मूडु मुडाइस्रो
भगवउ कीनो भेसु । १ ॥ रहाउ ॥
साच छाडि कै झूठह लागिस्रो
जनमु अकारथु खोइस्रो ॥
करि परपंच उदर निज पोखिस्रो
पसु की निआई सोइस्रो । १ ॥
राम भजन की गति नही जानी
माइस्रा हाथि बिकाना ॥
उरझि रहिओ बिखिस्रन संगि बउरा
नामु रतनु बिसराना ॥ २ ॥
रहिस्रो अचेत न चेतिस्रो गोबिंद
बिरथा स्रउध सिरानी ॥
कहु नानक हरि बिरदु पछानउ
भूले सदा परानी ॥ ३ ॥ १० ॥

सोरठि महला ९ ॥

जो नरु दुख मै दुखु नही मानैं ।
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै
कंचन माटी मानैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै
लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ
नाहि मान अपमाना ॥ १ ॥
आसा मनसा सगल तिआगै
जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि
तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥ २ ॥
गुर कृपा जिह नर कउ कीनी
तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ

जिउ पानी संगि पानो ॥३॥११॥

सोरठि महला ९ ॥

प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ
को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥

सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत
रहत चहू दिसि घेरै ॥
बिपति परी सभ ही संगु छाडित
कोऊ न आवत नेरै ॥ १ ॥

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ
सदा रहत संग लागी ॥
जब ही हंस तजी इह कांइआ
प्रेत प्रेत करि भागी ॥ २ ॥

इह बिधि को बिउहारु बनिओ है
जा सिउ नेहु लगाइओ ॥

अंत बार नानक बिनु हरि जी
कोऊ कामि न आइओ ॥
३ ॥ १२ ॥ १३९ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
धनासरी महला ९ ॥

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा
तोही संगि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है
मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि
घट ही खोजहु भाई ॥ १ ॥
बाहरि भीतरि एको जानहु
इहु गुर गिआनु बताई ॥
जन नानक बिनु आपा चीनै

मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥

धनासरी महला ९ ॥

साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥
राम नाम का सिमरनु छोडिआ
माइआ हाथि बिकाना ॥१॥रहाउ॥
मात पिता भाई सुत बनिता
ता कै रसि लपटाना ॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै
अहिनिसि रहै दिवाना ॥ १ ॥
दीन दइआल सदा दुख भंजन
ता सिउ मनु न लगाना ॥
जन नानक कोटन मै किनहू
गुरमुखि होइ पछाना ॥ २ ॥ २ ॥

धनासरी महला ९ ॥

तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥

लोभ मोह माइआ ममता फुनि
जिह घटि माहि पछानउ ॥१॥रहाउ॥
पर निंदा उसतति नह जा कै
कंचन लोह समानो ॥
हरख सोग ते रहै अतीता
जोगी ताहि बखानो ॥ १ ॥
चंचल मनु दह दिसि कउ धावत
अचल जाहि ठहरानो ॥
कहु नानक इह बिधि को जो नरु
मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥

धनासरी महला ९ ॥

अब मै कउनु उपाउ करउ ॥
जिह बिधि मन को संसा चूकै
भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ ॥
जनमु पाइ कछु भलो न कीनो

ता ते अधक डरउ ॥
मन बच क्रम हरि गुन नही गाए
यह जीअ सोच धरउ ॥ १ ॥
गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ
पसु जिउ उदरु भरउ ॥
कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ
तब हउ पतत तरउ ॥
२॥४॥९॥९॥१३।५८॥४॥९३॥

जैतसरी महला ९ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥
जो जो करम कीओ लालच लगि
तिह तिह आपु बंधाइओ ॥१॥रहाउ॥
समझ न परी बिखै रस रचिओ
जसु हरि को बिसराइओ ॥

संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन
बनु खोजन कउ धाइओ ॥१॥
रतनु रामु घट ही के भीतरि
ता को गिआनु न पाइओ ॥
जन नानक भगवंत भजन बिनु
बिरथा जनमु गवाइओ ॥२॥१॥

जैतसरी महला ९ ॥

हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥
जम को त्रास भइओ
उर अंतरि, सरनि गही
क्रिपा निधि तेरी ॥ १ ॥ रहाउ॥
महा पतित मुगध लोभी फुनि
करत पाप अब हारा ॥
भै मरबे को बिसरत नाहिन
तिह चिंता तनु जारा ॥ १ ॥

कीए उपाव मुकति के कारनि
दहदिस कउ उठि धाइश्रा ॥
घटि ही भीतरि बसै निरंजनु
ता को मरमु न पाइश्रा ॥ २ ॥
नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु
कउनु करमु अब कीजै ॥
नानक हारि परिश्रो सरनागति
अभै दानु प्रभ दीजै ।३। २॥

जैतसरी महला ९ ॥

मन रे साचा गहो बिचारा ॥
राम नाम बिनु मिथिश्रा मानो
सगरो इहु संसारा ॥१॥रहाउ॥
जाकउ जोगी खोजत हारे
पाइश्रो नाहि तिह पारा ॥
सो सुश्रामी तुम निकटि पछानो

रूप रेख ते निआरा ॥ १ ॥
पावन नाम जगत मै हरि को
कबहू नाहि संभारा ॥
नानक सरनि परिओ जग बंदन
राखहु बिरदु तुहारा ॥ २ ॥ ३ ॥

टोडी महला ९ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कहउ कहा अपनी अधमाई ॥
उरझिओ कनक कामनी के रस
नह कीरति प्रभ गाई ॥१। रहाउ॥
जग झूठै कउ साचु जानि के
ता सिउ रुच उपजाई ॥
दीन बंध सिमरिओ नही कबहू
होत जु संगि सहाई ॥ १ ॥
मगन रहिओ माइआ

मै निस दिनि
छुटी न मन की काई ॥
कहि नानक अब नाहि अनत गति
बिनु हरि की सरनाई ॥२॥१॥३१॥

तिलंग महला ९ ॥ काफी ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चेतना है तउ चेत लै
निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है
फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥
हरि गुन काहि न गावही
मूरख अग्याना ॥
झूठै लालचि लागि कै
नहि मरनु पछाना ॥ १ ॥

अजहू कछु बिगरिओ नही
जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तिह भजन ते
निरभै पदु पावै ॥ २ ॥ १ ॥

तिलंग महला ९ ॥

जाग लेहु रे मना जाग लेहु
कहा गाफल सोइआ ॥
जो तन उपजिआ संग ही
सो भी संग न होइआ ॥१॥रहाउ॥
मात पिता सुत बंध जन
हितु जा सिउ कीना ॥
जीउ छुटिओ जब देह ते
डारि अगनि मै दीना ॥ १ ॥
जीवत लउ बिउहारु है
जग कउ तुम जानउ ॥

नानक हरि गुन गाइ लै
सभ सुफन समानउ ॥ २ ॥ २ ॥

तिलंग महला ९ ॥

हरि जसु रे मना गाइ लै
जो संगी है तेरो ॥
अउसरु बीतिओ जातु है
कहिओ मान लै मेरो ॥१॥ रहाउ ॥
संपित रथ धन राज सिउ
अति नेहु लगाइओ ॥
काल फास जब गलि परी
सभ भइओ पराइओ ॥ १ ॥
जानि बूझ कै बावरे
तै काजु बिगारिओ ॥
पाप करत सुकचिओ नही
नह गरबु निवारिओ ॥ २ ॥

जिह बिधि गुर उपदेसिश्रा
सो सुनु रे भाई ॥
नानक कहत पुकारि कै
गहु प्रभ सरनाई ॥ ३ ॥ ३ ॥

रागु बिलावलु महला ९ दुपदे ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुख हरता हरिनामु पछानो ।
अजामलु गनका जिह सिमरत
मुकति भए जीश्र जानो ॥१॥रहाउ॥
गज की त्रास मिटी छिनहू महि
जब ही रामु बखानो ॥
नारद कहत सुनत ध्रूश्र बारिक
भजन माहि लपटानो ॥ १ ॥
श्रचल श्रमर निरभै पदु पाइश्रो

जगत जाहि हैरानो ॥
नानक कहत भगत रछक हरि
निकटि ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ १ ॥

बिलावलु महला ९ ॥

हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥
भगति बिना सहसा नह चूकै
गुर इह भेदु बतावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कहा भइग्रो तीरथ ब्रत कीए
राम सरनि नही ग्रावै ॥
जोग जग निहफल तिह मानउ
जो प्रभ जसु बिसरावै ॥ १ ॥
मान मोह दोनौ कउ परहरि
गोबिंद के गुन गावै ॥
कहु नानक इह बिधि को प्रानी
जीवन मुकति कहावै ॥ २ ॥ २ ॥

बिलावलु महला ९ ॥

जा मै भजनु राम को नांही ॥
तिह नर जनमु अकारथ खोइआ
यह राखहु मन माही ॥१॥रहाउ॥
तीरथ करै ब्रत फुनि राखै
नह मनूआ बसि जा को ॥
निहफल धरम ताहि तुम मानो
साचु कहत मै याकउ ॥ १ ॥
जैसे पाहनि जल महि राखिओ
भेदै नाहि तिहि पानी ॥
तैसे ही तुम ताहि पछानो
भगति हीन जो प्रानी ॥ २ ॥
कल मै मुकति नाम ते पावत
गुर यह भेदु बतावै ॥
कहु नानक सोई नरु गरूआ

जो प्रभ के गुन गावै ॥ ३ ॥ ३ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु रामकली महला ९ तिपदे ॥

रे मन ओट लेहु हरिनामा ॥
जा कै सिमरनि दुरमति नासै,
पावहि पदु निरबाना ॥१॥ रहाउ॥
बडभागी तिह जन कउ जानउ
जो हरि के गुन गावै ॥
जनम जनम के पाप खोइ कै
फुनि बैकुंठि सिधावै ॥ १ ॥
अजामलु कउ अंत काल मैं
नाराइन सुधि आई ॥
जां गति कउ जोगीसुर बाछत
सो गति छिन महि पाई ॥ २ ॥
नाहन गुनु नाहनि कछु बिदिआ

धरमु कउनु गजि कीना ॥
नानक बिरदु राम का देखो
अभै दानु तिहि दीना ॥ ३ ॥ १ ॥

रामकली महला ९ ॥

साधो कउनु जुगति अब कीजै ॥
जा ते दुरमति सगल बिनासै
राम भगति मनु भीजै ॥१॥रहाउ॥
मनु माइआ मै उरझि रहिओ है
बूझै नह कछु गिआना ॥
कउनु नामु जगु जा कै सिमरै
पावै पदु निरबाना ॥ १ ॥
भए दइआल क्रिपाल संत जन
तब इह बात बताई ॥
सरब धरम मानो तिह कीए
जिह प्रभ कीरति गाई । २ ॥

राम नाम नर निसि बासुर मै
निमख एक उरधारै ॥
जम को त्रासु मिटै नानक
तिह अपुनो जनमु सवारै ॥ ३ ॥ २ ॥

रामकली महला ९ ॥

प्रानी नाराइनि सुधि लेह ॥
छिनु छिनु अउध घटै तिस बासुर
बृथा जातु है देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥
तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ
बालपनु अज्ञाना ॥
बिरध भइओ अजहू नही समझै
कउनु कुमति उरझाना ॥ १ ॥
मानस जनमु दीओ जिह ठाकुर
सो तै किओ बिसराइओ ॥
मुकति होत नर जा कै सिमरै

निमख न ता को गाइओ ॥ २ ॥
माइआ को मदु कहा करतु है
संगि न काहू जाई ॥
नानक कहत चेति चिंतामनि
होइ है अंति सहाई । ३ ।३॥८१॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥
मारू महला ९ ॥

हरि को नामु सदा सुखदाई ।
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ
गनका हू गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
पंचाली कउ राज सभा मै
राम नाम सुधि आई ।
ता को दूख हरिओ करुना मै
अपनी पैज बढाई ॥ १ ॥
जिह नर जसु कृपा निधि गाइओ

ता कउ भइओ सहाई ॥
कहु नानक मै इही भरोसै
गही आन सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥

मारू महला ९ ॥

अब मै कहा करउ री माई ।
सगल जनम बिखिअनि सिउ खोइआ
सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥१॥ रहाउ ॥
काल फास जब गर मै मेली
तिह सुधि सभ बिसराई ॥
राम नाम बिनु या संकट मै
को अब होत सहाई ॥ १ ।
जो संपति अपनी करि मानी
छिन मो भई पराई ॥
कहु नानक यह सोच रही मनि
हरि जसु कबहू न गाई ॥ २ ॥ २ ॥

मारू महला ९ ॥
माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥
माइआ के मदि जनमु सिराइओ
राम भजनि नही लागिओ ॥१॥रहाउ॥
जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि
तब सोवत तै जागिओ ॥
कहा होत अब कै पछुताए
छूटत नाहिन भागिओ ॥ १ ॥
इह चिंता उपजी घट मै
जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥
सुफलु जनमु नानक तब हूआ
जो प्रभ जस मै पागिओ ॥ २ ॥ ३ ॥

१ ਓं सतिगुर प्रसादि ॥
रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥
साधो इह तनु मिथिआ जानउ ॥

या भीतरि जो रामु बसतु है
साचो ताहि पछानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥
इहु जगु है संपति सुपने की
देखि कहा ऐडानो ॥
संगि तिहारै कछू न चालै
ताहि कहा लपटानो ॥ १ ॥
उसतति निंदा दोऊ परहर
हरि कीरति उरझानो ॥
जन नानक सभ ही मैं पूरन
एक पुरख भगवानो ॥ २ ॥ १ ॥

बसंतु महला ९ ॥

पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥
मनु चंचलु याते
गहिओ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जोगी जंगम अरु संनिआस ॥

सभ ही परि डारी इह फास ॥ १ ॥
जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥
ते भव सागर उतरे पारि ॥ २ ॥
जन नानक हरि की सरनाइ ॥
दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥ ३ ॥ २ ॥

बसंतु महला ९ ॥

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
मनु मेरो धावन ते छूटिओ
करि बैठो बिसरामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
माइआ ममता तन ते भागी
उपजिओ निरमल ग्यानु ॥
लोभ मोह इह परसि न साकै
गही भगति भगवान ॥ १ ॥
जनम जनम का संसा चूका
रतनु नामु जब पाइआ ॥

तृसना सकल बिनासी मन ते
निज सुख माहि समाइग्रा ॥ २ ॥
जा कउ होत दइग्रालु कृपा निधि
सो गोबिंद गुन गावै ॥
कहु नानक इह बिधि की संपै
कोऊ गुरमुखि पावै ॥ ३ ॥ ३ ॥

बसंतु महला ९ ॥

मन कहा बिसारिग्रो राम नामु ॥
तनु बिनसै जम सिउ
परै कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥
इहु जगु धूऐ का पहार ॥
तै साचा मानिग्रा किह बिचारि ॥१॥
धनु दारा संपति ग्रेह ॥
कछु संगि न चालै समझ लेह ॥ २ ॥
इक भगति नाराइन होइ संगि ॥

कहु नानक भजु तिह
एक रंगि ॥ ३ ॥ ४ ॥

बसंतु महला ९ ॥

कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥
कछु बिगरिओ नाहनि
अजहु जाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥
बिनसै छिन मै साची मानु ॥ १ ॥
संगि तेरै हरि बसत नीत ॥
निस बासुर भजु ताहि मीत ॥ २ ॥
बार अंत की होइ सहाइ ॥
कहु नानक गुन ताके गाइ ॥ ३ ॥ ५ ॥ ६ ३ ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु सारंग महला ९ ।

हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥

कांकी मात पिता सुत बनिता
को काहू को भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
धनु धरनी अरु संपति सगरी
जो मानिओ अपनाई ॥
तन छूटै कछु संगि न चालै
कहा ताहि लपटाई ॥ १ ॥
दीन दइआल सदा दुख भंजन
ता सिउ रुचि न बढाई ॥
नानक कहत जगत सभ मिथिआ
जिउ सुपना रैनाई ॥ २ ॥ १ ॥

सारंग महला ९ ॥

कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥
या जग मै कोऊ रहनु न पावै
इक आवहि इक जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कांको तनु धनु संपति कांकी

का सिउ नेहु लगाही ॥
जो दीसै सो सगल बिनासै
जिउ बादर की छाही ॥ १ ॥
तजि अभिमानु सरणि संतन गहु
मुकति होहि छिन माही ॥
जन नानक भगवंत भजन बिनु
सुखु सुपने भी नाही ॥ २ ॥ २ ॥

सारंग महला ९ ॥

कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥
माइआ मदि बिखिआ रसि रचियो
राम सरनि नही आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
इहु संसारु सगल है सुपनो
देखि कहा लोभावै ॥
जो उपजै सो सगल बिनासै
रहनु न कोऊ पावै ॥ १ ॥

मिथिआ तनु साचो करि मानिओ
इह बिधि आपु बंधावै ॥
जन नानक सोऊ जग मुकता
राम भजन चितु लावै ॥ २ ॥ ३ ।

सारंग महला ९ ॥

मन करि कबहु
न हरि गुन गाइओ ॥
बिखिआ सकति रहिओ निस बासुर
कीनो अपनो भाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ।
गुर उपदेसु सुनिओ नह काननि
पर दारा लपटाइओ ।
पर निंदिआ कारनि बहु धावत
समझिओ नह समझाइओ ॥ १ ॥
कहा कहउ मै अपनी करनी
जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥

कहि नानक सभ अउगन मो मैं
राखि लेहु सरनाइओ ॥
२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुर प्रसादि ॥

रागु जैजावंती महला ९ ॥

राम सिमर राम सिमर
इहै तेरै काजि है ॥
माइआ को संगु तिआगि
प्रभ जू की सरनि लाग ॥
जगत सुख मानु मिथिआ
झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ॥
सुपने जिउ धनु पछानु ॥
काहे पर करत मानु ॥

बारू की भीति जैसे
बसुधा को राजु है ॥१॥
नानक जन कहत बात
बिनसि जै हैं तेरो गात ॥
छिनु छिनु करि गइओ कालु
तैसे जातु आजु है ॥ २ ॥ १ ॥

जैजावंती महला ९ ॥

राम भजु राम भजु जनमु सिरातु है ॥
कहउ कहा बार बार
समझत नह किउ गवार ॥
बिनसत नह लगै बार
ओरे सम गात हैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सगल भरम डारि देह
गोबिंद को नामु लेह ॥
अंति बार संगि तेरै

इहै एक जातु है ॥ १ ॥
बिखिआ बिख जिउ बिसारि
प्रभ को जसु हीए धार ॥
नानक जन कहि पुकार
अउसरु बिहातु है ॥ २ ॥ २ ॥

जैजावंती महला ९ ॥

रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥
इहु जग मै राम नामु
सो तउ नही सुनिओ कान ॥
बिखिअन सिउ अति लुभान
मति नाहिन फेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मानस को जनमु लीन
सिमरनु नह निमख कीन ॥
दारा सुख भइओ दीन
पगहु परी बेरी ॥ १ ॥

नानक जन कहि पुकारि
सुपनै जिउ जगु पसारि ॥
सिमरत नहि किओ मुरारि ॥
माइआ जा की चेरी ॥ २ ॥ ३ ॥

जैजावती महला ९ ॥

बीत जै है बीत ज है जनमु अकाज रे ।
निस दिन सुन कै पुरान
समझत नह रे अजान ।
काल तउ पहूचिओ आनि
कहा जै है भाजि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
असथिरु जो मानिओ देह
सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥
किउ न हरि को नामु लेह
मूर्ख निलाज रे । १ ॥
राम भगति हीए आनि

छाडि दे तै मन को मानु ॥
नानक जन इह बखान
जग मै बिराजु रे ॥ २ ॥ ४ ॥

१ ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ६

गुन गोबिद गाइओ नही
जनमु अकारथ कीन ॥
कहु नानक हरि भजु मना
जिहि बिधि जल कौ मीन ॥१॥
बिखिअन सिउ काहे रचिओ
निमख न होहि उदास ॥
कहु नानक भजु हरि मना
परै न जम की फास ॥ २ ॥
तरनापो इउ ही गइओ
लीओ जरा तनु जीति ॥
कहु नानक भज हरि मना
अउध जातु है बीति ॥ ३ ॥

बिरधि भइओ सूझै नही
कालु पहूचिओ आन ॥
कहु नानक नर बावरे
किउ न भजै भगवानु ॥ ४ ॥
धन दारा संपति सगल
जिनि अपुनी करि मानि ॥
इन मै कछु संगी नही
नानक साची जानि ॥ ५ ॥
पतित उधारन भै हरन
हरि अनाथ के नाथ ॥
कहु नानक तिह जानीऐ
सदा बसतु तुम साथ ॥ ६ ॥
तनु धनु जिह तो कउ दीओ
ता सिउ नेहु न कीन ॥
कहु नानक नर बावरे

अब किउ डोलत दीन ॥ ७ ॥
तनु धनु संपै सुख दीओ
अरु जिह नीके धाम ॥
कहु नानक सुनु रे मना
सिमरत काहि न राम ॥ ८ ॥
सभ सुख दाता रामु है
दूसर नाहिन कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना
तिह सिमरत गति होइ ॥ ९ ॥
जिह सिमरत गति पाईए
तिहि भजु रे तै मीत ॥
कहु नानक सुन रे मना
अउध घटत है नीत ॥ १० ॥
पांच तत को तनु रचिओ
जानहु चतुर सुजान ॥

जिह ते उपजिओ नानका
लीन ताहि मै मान ॥ ११ ॥
घटि घटि मै हरि जू बसै
संतन कहिओ पुकारि ॥
कहु नानक तिह भजु मना
भउ निधि उतरहि पारि ॥ १२ ॥
सुखु दुखु जिह परसै नही
लोभ मोह अभिमानु ॥
कहु नानक सुन रे मना
सो मूरति भगवान ॥ १३ ॥
उसतति निंदिआ नाहि जिहि
कंचन लोह समानि ॥
कहु नानक सुनु रे मना
मुकति ताहि तै जानि ॥ १४ ॥
हरख सोग जा कै नही

बैरी मीत समान ॥
कहु नानक सुनि रे मना
मुकति ताहि तै जान ॥ १५ ॥
भै काहू कउ देत नहि
नहि भै मानत आनि ॥
कहु नानक सुन रे मना
ज्ञानी ताहि बखानि । १६ ॥
जिह बिखआ सगली तजी
लीओ भेख बैराग ॥
कहु नानक सुन रे मना
तिह नर माथै भाग ॥ १७ ॥
जिहि माइआ ममता तजी
सभ ते भइओ उदास ॥
कहु नानक सुन रे मना
तिह्हि घटि ब्रहम निवासु ॥ १८ ॥

जिहि प्रानी हउमै तजी
करता राम पछान ॥
कहु नानक वहु मुकति नरु
इह मन साची मान ॥ १९ ॥
भै नासन दुरमति हरन
कलि मै हरि को नाम ॥
निसदिन जो नानक भजै
सफल होहि तिह काम ॥ २० ॥
जिहबा गुन गोबिंद भजहु
करन सुनहु हरिनाम ॥
कहु नानक सुन रे मना
परहि न जम कै धाम ॥ २१ ॥
जो प्रानी ममता तजै
लोभ मोह अहंकार ॥
कहु नानक आपन तरै

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अउरन लेत उधार ॥ २२ ॥
जिउ सुपना अरु पेखना
ऐसे जग कउ जानि ॥
इन मै कछु साचो नही
नानक बिनु भगवान ॥ २३ ॥
निसदिन माइग्रा कारनै
प्रानी डोलत नीत ॥
कोटन मै नानक कोऊ
नाराइन जिह चीत ॥ २४ ॥
जैसे जल ते बुदबुदा
उपजै बिनसै नीति ॥
जग रचना तैसे रची
कहु नानक सुन मीत ॥ २५ ॥
प्रानी कछु न चेतई
मदि माइग्रा कै अंध ॥

कहु नानक बिनु हरि भजन
परत ताहि जम फंध ॥ २६ ॥
जउ सुख कउ चाहै सदा
सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुन रे मना
दुरलभ मानुख देह ॥ २७ ॥
माइम्रा कारन धावही
मूरख लोग अजान ॥
कहु नानक बिनु हरि भजनि
बिरथा जनमु सिरान ॥ २८ ॥
जो प्रानी निसदिन भजे
रूप राम तिह जानु ॥
हरि जनि हरि अंतरु नही
नानक साची मानु ॥ २९ ॥
मनु माइम्रा मै फधि रहिम्रो

बिसरिओ गोबिंद नाम ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन
जीवन कउने काम ॥ ३० ॥
प्रानी राम न चेतई
मद माइआ कै अंध ॥
कह नानक हरि भजन बिनु
परत ताहि जम फंध ॥ ३१ ॥
सुख मै बहु संगी भए
दुख मै संगि न कोइ ॥
कउ नानक हरि भजु मना
अंति सहाई होइ ॥ ३२ ॥
जनम जनम भरमत फिरिओ
मिटिओ न जम को त्रासु ॥
कहु नानक हरि भजु मना
निरभै पावहि बासु ॥ ३३ ॥

जतन बहुतु मै करि रहिओ
मिटिओ न मन को मानु ॥
दुरमति सिउ नानक फधिओ
राखि लेहु भगवान ॥ ३४ ॥
बाल जुआनी अरु बिरध फुनि
तीनि अवसथा जानि ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु
बिरथा सब ही मान ॥ ३५ ॥
करणो हुतो सु ना कीओ
परिओ लोभ कै फंध ॥
नानक समिओ रमि गइओ
अब किउ रोवत अंध ॥ ३६ ॥
मनु माइआ मै रमि रहिओ
निकसत नाहिन मीत ॥
नानक मूरति चित्र जिउ

छाडित नाहनि भीत ॥ ३७ ॥

नर चाहत कछु अउर

अउरै की अउरै भई ॥

चितवत रहिओ ठगउर

नानक फासी गलि परी ॥ ३८ ॥

जतन बहुत सुख के कीए

दुख को कीओ न कोइ ॥

कहु नानक सुन रे मना

हरि भावै सो होइ । ३९ ॥

जगतु भिखारी फिरतु है

सभ को दाता राम ॥

कहु नानक मन सिमरु तिह

पूरन होवहि काम ॥ ४० ॥

झूठै मानु कहा करै

जगु सुपने जिउ जानु ॥

इन मै कछु तेरो नही
नानक कहिओ बखान ॥ ४१ ॥
गरबु करतु है देह को
बिनसै छिन मै मीति ॥
जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ
नानक तिहि जगु जीति । ४२ ॥
जिह घटि सिमरनु राम को
सो नरु मुकता जानु ॥
तिहि नर हरि अंतरु नही
नानक साची मानु । ४३ ॥
एक भगति भगवान
जिह प्रानी कै नाहि मन ॥
जैसे सूकरु सुआन
नानक मानो ताहि तन ॥ ४४ ॥
सुआमी को गृहु जिउ सदा

सुग्रान तजत नहो नित ।।
नानक इह बिधि हरि भजउ
इक मनि हुइ इकि चित ।। ४५ ।।
तीरथ बरत अरु दान करि
मन मै धरै गुमानु ।।
नानक निहफल जात तिहि
जिउ कुंचर इसनानु ।। ४६ ।।
सिरु कंपिओ पग डगमगै
नैन जोति ते हीन ।।
कहु नानक इह बिधि भई
तऊ न हरि रस लीन ।। ४७ ।।
निज करि देखिओ जगनु मै
को काहू को नाहि ।।
नानक थिरु हरि भगति है
तिह राखो मन माहि ।। ४८ ।।

रहिओ गुर गोबिंद ॥
कहु नानक इह जगत मै
किन जपिओ गुरमंतु ॥ ५६ ॥
राम नाम उर मै गहिओ
जा कै सम नही कोइ ॥
जिह सिमरत संकट मिटै
दरसु तुहारो होइ ॥ ५७ ॥ १ ॥

मुद्रित—
गुरदवारा प्रिंटिंग प्रेस, (रामसर रोड)
अमृतसर।